प्रस्तावना

प्रातः स्मरणीय भगवान धन्वन्तरि और उनके तपस्वी शिष्यगणों का ज्ञान अनुपम था, भलीभांति विचारित और दिव्यदृष्टि से प्रमाणित था। अङ्ग-अङ्ग की रचना, क्रिया, प्रकृति और विकृति उन्हें विदित थी और प्रत्येक प्रकार की औषध, वनौषध, और खनिज-प्राणिज पदार्थों का प्रभाव भी वे सहस्रों आर्त्तों पर अनुभव कर चुके थे।

उस सब ज्ञान को केवल लोक-हित के लिये ही उन्होंने शास्त्रों में संकलित किया और यही कारण है कि सैकड़ों और हजारों बरस बाद आज भी वे ग्रंथ उतने ही प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। जहाँ अर्थार्थी डाक्टरों की शोध और औषधें नित नई बदलतीं और बहुधा अनुत्तम सिद्ध होती हैं, वहाँ ज़माना बदल जाने पर भी आर्षग्रंथों के आदेश, महर्षियों के मूल्यवान प्रयोग आज भी उसी प्रकार उपकार करते हैं।

यह तो अब ;सर्वत्र सिद्ध होकर बड़े बडे हकीम-डाक्टरों और अधिकारियों द्वारा भी माना जा चुका है कि भारत की जलवायु के लिये आयुर्वेदिक औषधें उत्तम रहती हैं और देश की ९० फ़ीसदी प्रजा वैद्यक से ही चिकित्सित हो रही है।

आयुर्वेदिक औषधें देने में सुगम और असर करने में अचूक होती हैं। डाक्टरी दवाऐं तो व्यापार के लिये-एक एक रोग पर एक एक दवा और वह भी पूरे मूल्य की ही मिलती हैं, पर हमारे शास्त्रों की एक एक औषध-अनेकों रोगों पर लाभ करती है और ग़रीब-अमीर सभी के योग्य योग मिल जाते हैं। सहस्रों वर्ष की परीक्षित होने के कारण उनसे कोई अन्य हानि भी नहीं होती जैसे-कुनैन से वीर्य-विकार आदि हो जाता है। अथवा ऐस्पिरिन और डिजीटेलिस से हृदय की धड़कन ही बन्द हो जाना। इसलिये साधारण चिकित्सक भी उनका उपयोग हानि रहित कर सकते हैं।

साथ ही सब से बड़ा लाभ यह है कि एक एक रोग पर अनेक योग वर्णित हैं और एक एक योग ही उचित अनुपान भेद से अनेक रोगों को लाभ करता है अतः किसी एक दो औषधों के न मिलने पर भी डाक्टरों की भाँति लाचारी नहीं। वरन् अच्छे से अच्छा एक योग ऐसा मिल ही जाता है जो सहज बन सके और पूर्ण लाभ करे।

जिस प्रकार डाक्टरी में हर प्राकृत ज्वर में कुनैन या हर रक्त दोष में पुटाश आयोडाइड दी जाती है वैसी अन्ध-प्रणाली हमारे यहां नहीं। आयुर्वेद के एक एक प्रयोग अनेक रोगों में लाभ करते हैं, फिर भी प्रत्येक रोग में अतिसार या अनाह-शीत या उत्ताप, क्षुधा या अजीर्ण और रोग की तीक्ष्णता या जीर्णता के अनुसार ही हर एक दशा के लिये भी चौकस औषधें-अलग

अलग वर्णित हैं। और अनुभवी वैद्य इन्हीं भेदों पर अधिकार रखते हुए चमत्कारी चिकित्सा करते हैं।

इस लिये शास्त्रीय महौषधों की महिमा-प्रभाव-जानने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि किस किस रोग की कैसी कैसी दशा में कौन औषधि किस अनुपान के साथ दें। और यही "सफलता की कुन्जी" है। यही अनुभव है इस से ही वैद्य सिद्धहस्त कहलाता है और मान प्रतिष्ठा धन यश पाता है।

अनेक उत्तम अस्त्र शस्त्र होने पर भी बिना अभ्यास योधा युद्ध के समय उनसे यथेष्ट कार्य न ले सकने के कारण परास्त होता है और दूसरा योधा उनहीं अस्त्र शस्त्रों से युद्ध जय करता है। इसी प्रकार विश्वस्त, उत्तम, सिद्ध, औषधियाँ होने पर भी अनुभव हीन वैद्य उनसे यथेष्ट लाभ नहीं उठा सकता।

इसलिये अनुभवी चिकित्सक लोकहितार्थ निस्वार्थ भाव से इस अनुपम कुन्जी (अनुभव) को प्रकट करें यह अत्यन्त आवश्यक है।

यही आवश्यकता ध्यान में रख कर वैद्य बंधुओं की यत्किंचित् सेवार्थ हम अनुभव में आये हुए औषध-गुण और अनुपान-भेद से उनकी प्रयोग विधि, इस "उपचार-पद्धति" में दे रहे हैं। यह हर समय आपको और रोगी-जनों का कष्ट

शीघ्र निवारण कर के हमारा श्रम सफल करेगी तो हम इसका दूसरा भाग भी शीघ्र प्रकट करेंगे जिसमें रोगों के क्रम से उनके भिन्न भिन्न भेदों पर हमारी अनुभूत चिकित्सा विधि होगी।

तब तक यदि कोई जटिल रोग हो जिसकी समुचित औषध चुनने में आप सम्मति चाहें तो नि संकोच पूरा वृतान्त लिखें, हम अपने प्रत्येक बंधु की सेवा करने में प्रसन्न होते हैं, और उचित चिकित्साविधि सहर्ष सूचित करते हैं। अलम् विद्वत्सु।

भवदीय—

विजयगढ़
(अलीगढ़)

वैद्य बांकेलाल
प्रधान चिकित्सक
श्री धन्वन्तरि-चिकित्सालय

———

द्वितीय संस्करण की भूमिका

हमें यह द्वितीय संस्करण को प्रकाशित कर बड़ा हर्ष होता है कि हमारी इस तुच्छ सेवा से वैद्यों ने लाभ उठाया, यश और धन कमाया तथा प्रसिद्धि प्राप्त की और हमें उत्साहित किया। अब के हमने इस में अनेक नवीन औषधियों की व्यवहार विधि, गुण, मात्रा, अनुपान, रोगाधिकार भी बढ़ा दिये हैं तथा बहुत सुधार कर दिया है जिससे पुस्तक पहले से भी अधिक उपयोगी और बड़ी हो गई है।

पहले संस्करण से जिन वैद्यों ने लाभ उठाया और समय समय पर रोगिओं की अवस्थायें लिख सम्मति मांगी तथा उन्होंने उस से जो अनुभव लिखा उस से यह जान कर हमे बड़ा खेद हुआ कि अनेक बार उन बिचारे वैद्यों को औषधियाँ बेचने वालों ने गुणहीन सस्ती औषधियां दे उनके यश में बट्टा लगाया तथा रोगियों को भी कष्ट दिया साथ ही यह जान कर

हर्ष है कि जब जब उन्होंने उत्तम प्रमाणिक औषधियों की यश और धन उपार्जन किया। इसलिये हमें अब यह लिखना पड़ा कि इसमें वर्णित औषधियों के प्रयोग करने से पूर्व वैद्य देख लें कि जो औषधि हम व्यवहार में लाना चाहते हैं वे औषधि विश्वस्त और यथार्थ बनी हुई है या नहीं। क्योंकि जब रोग भीष्णता दिखा रहा है, जीवन संकट में है ऐसे समय में प्रमाणिक विश्वस्त औषधियाँ ही जिनपर हमारा पुरा अधिकार है, चमत्कारी प्रभाव दिखा रोगी की रक्षा करेंगी और हमें यश दिलायेंगी।

अभ्यस्त योधा जो युद्ध विद्या में दक्ष हैं वह युद्ध काल में खराब हुये अस्त्र-शस्त्र जब देखता हैं तब "किंकर्तव्यविमूढ़" हो जाता है सौर बलवान अभ्यस्त तथा दक्ष होने पर भी अस्त्र शस्त्र की कमी से जब युद्ध में पराजय प्राप्त करता है तब कितना दु:ख होता है वही जानता है। इसी भाँति सिद्धहस्त अनुभवी वैद्य जब हीन वोर्य्य सस्ती औषधियों से धोखा खाकर रोग रूपी शत्रु से हारता है तब पछताता है और प्राणरक्षा तो कर पाता ही नहीं-धन मान भी जाता है।

डाक्टरी दवाओं में आयुर्वेदिक औषधियों जितना उत्तम प्रभाव न होने पर भी उनकी विश्वस्त बनावट ही प्रचार कर रही है। आयुर्वेदिक औषधों के प्रचार में यही तो बाधा है कि एक तो सभी जगह सब औषध द्रव्य और वनस्पतियां ठीक २ मिलती नहीं और दूर २ सेमंगाई भी जावें तो थोड़ी २ तादाद में बहुत ही महंगी पड़ती है। इसीलिये बनाने का पूर्णज्ञान होने पर भी वैद्यवरों को औषध निर्माण में बड़ी झंझट रहती है।

यह आवश्यक भी नहीं कि प्रत्येक चिकित्सक सभी औषधें स्वयं बनावे जिनमें ८-१० वर्ष तो ठीक ठीक निर्माण में ही अवश्य लग जाते हैं। फिर इतना धन और समय भी तो सुलभ नहीं। बनी हुई औषधें सुलभ हों तो हर समय भली भांति काम आसकती हैं जिसमें रोगी तथा चिकित्सक दोनों का ही हित है परन्तु आजकल की कोरी व्यापारिक भावनाओं ने इस मार्ग में बड़े कराटक विछा रखे हैं। बनी हुई आयुर्वेदिक औषधें बेचने वाली फ़ार्मेसियां तो बहुत हैं पर जो औषध को रोगनाशक चमत्कार के लिये न बनाकर धनदायक व्यापार के ही लिये बनाते हैं उनसे तो और भी हानि ही होती है। आधा भी लाभ न होने के कारण रोगो को कष्ट होता है, अश्रद्धा होती है और चिकित्सक का भी यश कम होता है। जहां अलभ्य औषध द्रव्यों की जगह प्रतिनिधि भी पूरे न डाले जाँय और गुण की जगह रूप रंग चटकीला बनाने पर ही ध्यान दिया जाय वहां चमत्कारी प्रभाव की तो आशा ही कहां ! २) तोला बेचने को जर्मनी और जापान में बिजली द्वारा फूके हुए चमकीले सिंगरफ को चाहे सिद्ध मकरध्वज से भी ऊंचा नाम दे दें, पर उसमें वह गुण कहां से आवेगा जो षड्गुण गन्धक आदि के साथ विपाचित चन्द्रोदय में होता है। चाहे चमक किसी में ज्यादा हो और पैकिंग तथा विज्ञापन किसीका भड़कीला हो पर आपके दाम और काम किससे सफल होंगे, सोच सकते हैं। इसीलिये बनी हुई औषधें इतनी मिलने पर भी आयुर्वेद की उन्नति न हो तो आश्चर्य ही क्या !

धन्वंतरि कार्यालय के प्रवर्तक स्वर्गीय श्री ला० नारायणदास राधावल्लभ जी को भी चिकित्सार्थ विश्वस्त औषध

निर्माण करते हुए वनौषधादि की बड़ी कठिनाइयाँ पड़ीं जो आजकल वैद्यवरों को पड़ती हैं और इसी से प्रेरित हो उन्होंने इस कार्यालय की १८६८ में स्थापना की। और इसमें आज तक यही ख़ास ध्यान रहता है कि प्रत्येक औषध प्रमाणिक शास्त्रीय विधि पूर्वक और पूर्ण गुणकारी, चाहे रूप रंग-चटक-मटक और पैकिंग कैसा ही हो-लागत ज्यादा और मूल्य हो या कम पर, औषध के प्रधान गुण प्रभाव में कमी न हो। इसी के लिये प्रति-वर्ष हिमालय और बंगदेश के वनों से अनेकों बूटियाँ शिलाजीत, कस्तूरी, नागकेसर और मधु आदि द्रव्य मंगाकर वर्ष भर के काम लायक भारी तादाद में संग्रह रखी जाती हैं और जनता ही नहीं बड़े बड़े अनेकों औषधालय भी यहां से असली औषधें मंगा कर पूर्ण लाभ उठा रहे हैं। उन्हीं प्रामाणिक औषधों के बल से ही हमें अपनी चिकित्सा पर पूर्ण विश्वास रहता और सुयश भी मिलता है तथा इसी से हम अपना अनुभव इस पुस्तक में देते हुए दृढ़ता पूर्वक कहते हैं कि डाक्टरी आदि सब पोथियों की अपेक्षा, हमारी आयुर्वेदिक औषधें अधिक गुण-कारी हैं, कमी अगर कहीं होती है तो उचित निर्माण व अनुभव की जिसके लिये हम पुनः ध्यान आकर्षित करते हैं कि जो सज्जन बना सकें वे औषध स्वयं ही पूरी विधि से बनावें, जो द्रव्य न मिलें, यहाँ से मंगा सकते हैं और जो निर्माण का प्रबंध ठीक न बांध सकें वे नि सकोच हमारी औषधों से लाभ उठा सकते हैं।

श्री धन्वन्तरि कार्यालय द्वारा प्रकाशित चिकित्सोपयोगी पुस्तकें

१ जीवन विज्ञान (सचित्र) २)
२ उपदंश विज्ञान मूल्य १)
३ कामनी कर्णधार (सचित्र) मूल्य १।=)
४ सूर्य्यरश्मि चिकित्सा सचित्र ॥।)
५ प्रयोग पुष्पावली १)
दोनों भाग २)
६ बालरोग चिकित्सा सचित्र मूल्य ॥=)
७ भारतीय भोजन सचित्र ॥।)
८ न्यायादर्श मूल्य ॥।)
९ दोषधातुविज्ञान(सचित्र)॥=)
१० बाल बोधोदय ।=)
११ औपसर्गिकसन्निपात प्लेग) ।)
१२ धातु दौर्बल्य ॥)
१३ मरणोन्मुखी आर्यचिकित्सा मूल्य ।)
१४ परीक्षित प्रयोग ।=)
१५ पंचकर्म विवेचन ।=)
१६ रसायन संहिता ॥।=)
१७ दशमूल (सचित्र) ॥।)
१८ कुचमार तन्त्र ।=)
१९ वेदों में वैद्यकज्ञान ≡)
२० तिल्ली (प्लीहा) ।)
२१ ओज क्या है ? -)
२२ अस्थियाँ (सचित्र) ।)
२३ चन्द्रोदय ।)
२४ नाड़ी सिद्धान्त सचित्र ।=)
२५ रोग परिचय ॥)
२६ प्राकृत ज्वर ।)
२७ दोष विज्ञान ॥)
२८ वैद्यराज जी की जीवनी ≡)
२९ आयुर्वेद में दार्शनिकतत्व ।)
३० नारू [स्नायु] रोग ।)

धन्वन्तरि के विशेषांक

स्वप्नप्रमेहाङ्क—स्वप्न प्रमेह सम्बन्धी सर्वाङ्ग पूर्ण सचित्र वर्णन और अनुभूत चिकित्सा। मूल्य १॥)

मलावरोधाङ्क—मलावरोध सम्बन्धी महत्व पूर्ण सचित्र वर्णन और अनुभूत चिकित्सा पद्धति। मूल्य ॥)

हिस्टेरियाङ्क—हिस्टेरिया, योषापस्मार, सम्बन्धी सचित्र वर्णन और अनेक विद्वान वैद्यों की लिखी महत्व पूर्ण चिकित्सा विधि। मूल्य १॥)

प्रयोगाङ्क—पचास भारतीय विद्वान वैद्यों के ४३५ अनुभूत प्रयोग और चित्र। ऐसा अनुपम प्रयोग संग्रह दूसरा नहीं मिलेगा। मूल्य २) रुपया।

योगाङ्क—इसमें भारत के प्रसिद्ध वैद्यों के अनुभूत प्रयोग और चित्र बड़ी कठिनता से संग्रह कर छपाये गये हैं मूल्य १॥।) प्रति।

अनुभूत प्रयोगाङ्क—इस में बड़ी कठिनता और प्रयत्न से भारत के प्रसिद्ध २ वैद्यराजों के प्रयोग भी मंगा कर संग्रह किये गये हैं। प्रयोग और चित्र इतने उत्तम हैं कि जिसकी प्रशंसा वैद्यों ने मुक्त कंठ से की है। मूल्य २)

गृहस्थाँक—सचित्र। इस में अनेक गृहस्थ और स्वास्थोपयोगी लेख चित्र और प्रयोग हैं। मूल्य ॥।)

नारी रोगांक—सचित्र। इस में अनेक महत्व पूर्ण स्त्री रोग सम्बन्धी सचित्र लेख हैं। मूल्य ॥।)

पता—मैनेजर धन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)।

आयुर्वेदीय
औषधि उपचार पद्धति

(प्रथम भाग)

कूपी पक्व रसायन

शीशी में भर कर बालुकायन्त्र से जिन औषधियों का पाक किया जाता है उन्हें कूपीपक्व कहते हैं उन में मकरध्वज प्रधान है और यह आयुर्वेद का एक बहुमूल्य रत्न है। इस के चमत्कारिक प्रभाव को सब ही श्रेणी के वैद्य एवं गृहस्थ जानते हैं। यह पारद, गंधक, स्वर्ण, के योग से बनाया जाता है। इस में पारद मुख्य पदार्थ है।

शास्त्रों में पारद के अनेक गुण प्रशंसा सहित लिखे हैं तथा लिखा है कि पारद के जितने अधिक संस्कार किये जायं, पारद उतना ही अधिक प्रभावशाली बन जाता है यदि पारद को मूर्छित कर दिया जाय तो पारद सर्व रोग नाशक हो जाता है और पारद को बाँध दिया जाय तो पारद मुक्तिदाता हो जाता

है यदि पारे को मार दिया जाय तो पारद मनुष्य को अमर करने वाला हो जाता है।

"मूर्च्छित्वा हरतिरुजं बन्धनमनुभूय मुक्तिदो भवति।
अमरी करोति सुमृतः कोऽन्य करुणापरस्तस्मात्॥"

इस संस्कार किये हुये पारद के साथ जितनी अधिक गंधक जारण की जायगी उतना ही अधिक गुणदायक मकर-ध्वज बनेगा समान गंधक जारण से पारद सौ गुना अधिक गुण करता है, द्विगुण गंधक जारण से पारद सम्पूर्ण कुष्ठ नाशक बनता है, त्रिगुण गंधक जारण से कामशक्ति प्रबल करता है, चतुर्गुण गंधक जारण करने से वली पलित रोग नाशक होता है पञ्चगुणी गंधक जारण से क्षय रोग को नाश करता है और षटगुनी गंधक जारण से सर्व रोगनाशक होता है।

"तुल्येतु गन्धके जीर्णे शुद्धाच्छत गुणोरसः।
द्विगुणे गन्धके जीर्णे सर्वथा सर्व कुष्ठहा॥
त्रिगुणे गन्धके जीर्णे कामिनी दर्प नाशनः।
चतुर्गुणे गन्धके जीर्णे वली पलित नाशनः॥
गंधे पंच गुणे जीर्णे क्षयरोग हरो रसः।
षड्गुणे गंधके जीर्णे सर्व रोग हरो भवेत्॥"

उत्तम मकरध्वज जिसे सिद्धमकरध्वज भी कहते हैं वह संस्कारितपारद द्वारा षड्गुण अधिक जारण कर बनाते समय ही डाट लगा कर [अन्तर्धूम] जो बनता है वह है, किंतु आज कल वैद्य अनेक प्रकार से बनाते हैं संस्कारित पारद और हिंगुलोत्थ पारद तथा द्विगुण गंधक, षट गुण गन्धक आदि से

अनेक भेद हो जाते हैं इसलिये हम अब भेदों का वर्णन तथा उपचार विधि लिखते हैं *।

"संस्कारित पारद" द्वारा बनाया हुआ—
स्वर्णग्रटित, पटगुण वलि (गंधक) जारित
अन्तर्धूम विपाचित—

सिद्ध मकरध्वज नं० १

"करोल्यातिबलं पुंसां वली पलित नाशनः।
मेधायु कांति जननं कामोद्दीपन कृन्महान्॥"

भैषज्य रत्नावली १४८

यह आयुर्वेदीय चिकित्सा की प्रधान औषधि है; इसका अनुपान भेद से प्रायः सब ही रोगों में व्यवहार होता है विशेष कर कामोत्तेजक पौष्टिक वीर्य्य-वर्धक वीर्य्य स्तम्भक और क्लीवत्व प्रमेह आदि वीर्य्य विकार नाशक है। सन्निपात रोग में आसन्न मृत्यु रोगी को वैद्य इसका ही सेवन करा कर आरोग्य प्रदान कर कीर्ति और लक्ष्मी लाभ करते हैं। इसको सर्व साधारण में "चन्द्रोदय" कहते हैं।

मात्रा—इसकी साधारण मात्रा १ रत्ती की है। किंतु रोगी का

---

*धन्वन्तरि औषधालय में जो २ प्रकार का सिद्ध मकरध्वज है उन में ही संस्कारित पारद और पट गुणाधिक पड़ा है। तथापि उन में जो धूम को अंदर ही रख अर्थात् प्रथम ही से डाट लगा कर (अन्तर्धूम) बनता है वह सर्वोत्तम और सब दोषों से रहित मकरध्वज नं०१ है, व से अधिक प्रभावशाली पाया गया है।

बल, रोग, ऋतु समय को देख वैद्य इसकी मात्रा न्यूनाधिक भी कर सकते हैं। **समय**—प्रातः व रात्रि को सोते समय अथवा रोग के प्रकोप के समय जब आवश्यकता हो तभी दे सकते हैं।

अनुपान—लौंग, कालीमिर्च, जायफल, प्रत्येक चार २ तोला, कपूर शुद्ध २ तोला, कस्तूरी ६ माशे सब को मिलाय २ दिन मर्दन कर शीशी में भर रखें। **व्यवहार**—मकरध्वज १ रत्ती अनुपान की औषधि १ माशे दोनों को मिला पान में रख सेवन करें उसके १ घन्टे बाद दूध पीवें। अथवा बिना पान के ही फाँक ऊपर से औटाया हुआ दुग्ध मिश्री डाल कर पीने से प्रमेह, नपुंसकता, निर्बलता आदि दूर हो कामोद्दीपन होता है और बल बढ़ता है। यदि वीर्य्य विकार के साथ वायु का भी दोष हो अथवा शरीर में कहीं दर्द हो या प्रसूता स्त्री हो तब शुद्ध कुचला १ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती फाँक ऊपर से दुग्ध पीवें।

स्तम्भनी गुटिका—मकरध्वज १ तोला, केशर, जायफल, लौंग यह दो दो तोला, अफीम ४ तोले भांग शुद्ध २ तोले, कस्तूरी २ माशे इन सब को पान के स्वरस में मर्दन कर चना बराबर गोली बनावें। १ गोली रात्रि को सोते समय मिश्री मिले दुग्ध के साथ सेवन करने से स्तम्भन होता है। यह गुटिका कफ की संग्रहणी में भी अति लाभदायक है।

अग्निमांद्य—रोग में एक माशा मकरध्वज अदरक के स्वरस में या पान के स्वरस में या मृत संजीवनी सुरा में मिला कर तीन २ घन्टे के अन्तर से दें। स्वरस और सुरा की मात्रा ६ माशे की समझनी चाहिये। ×

संकलयिता पण्डित द्वारा बनाया हुआ
स्वर्णपदक प्राप्त एम० ए० पंडित
वैद्यभूषण विशारद—

सिद्ध मकरध्वज नं० २

विधिवत सेवितोह्येष मुमूर्षु मपि जीवयेत।
पलितन्यासतश्चैव जरा मरण नाशनम्॥

भैषज्य रत्नावली १४८

सिद्ध मकरध्वज नं० १ और सिद्ध मकरध्वज नं० २ में सिर्फ धूम का अन्तर है उसको बनाते समय शीशी का कार्क बन्द कर दिया जाता है जिससे अधिक गुण वाला बनता है और इस मकरध्वज नं० २ के को बनाते समय शीशी का कार्क खुला रहता है तथा कार्क खुले होने से और धूम निकलते रहने से शीशी के फूटने का भय नहीं रहता। बाकी सेवन विधि मात्रा अनुपान व्यवहार आदि सब वही है।

× सब प्रकार का मकरध्वज, स्वर्ण सिंदूर, रस सिंदूर, मल्ल सिंदूर, ताल सिंदूर, ताम्र सिंदूर इन सब को व्यवहार करने से प्रथम पान के स्वरस में २ दिन अच्छी प्रकार मर्दन करके रख लेना चाहिए। इसके पश्चात् अनुपान भी मिला देना श्रेष्ठ है।

हिङ्गुलोत्थ पारद द्वारा बनाया हुआ स्वर्ण-
घटित षटगुण बलि जारित—

मकरध्वज नं० २

"अनुपान विशेषेण करोति विविधान गुणान् ।
ज्वरं त्रिदोषजं घोरं मंदाग्नित्वमरोचकम् ॥"

भैषज्य रत्नावली १४८ ।

उल्लिखित सिद्ध मकरध्वज नं० १–२ और इस मकरध्वज नं०२ में सिर्फ पारद का अन्तर है। सिद्ध मकरध्वज में संस्कार किया हुआ पारद डाला जाता है और मकरध्वज में पारद ही मुख्य है। जितने अधिक संस्कार किये जाय उतना ही पारद प्रभाव शाली होता जाता है और जितना पारद प्रभावशाली होगा उतना ही मकरध्वज भी गुण कारक और तत्क्षण फल दायक होगा। यह मकरध्वज नं० २ हिङ्गुलोत्थ पारद द्वारा बनाया जाता है इससे सिद्ध मकरध्वज नं० १–२ की अपेक्षा यह न्यून गुणवाला होता है पर अनुपान मात्रा—व्यवहार आदि सब उसी प्रकार हैं।

संस्कारित पारद द्वारा बनाया हुआ
स्वर्णघटित द्विगुण गंधक जारित
अन्तर्धूमावपाचित—

मकरध्वज (स्वर्ण सिंदूर) नं० १

चन्द्रोदयोऽयं कथितोऽस्यमाषो, भुक्तोऽहिवल्लीदलमध्यवर्ती।
मदोन्मदानां प्रमदा शतानां गर्वादिकत्वं श्लथयत्यकाण्डे ॥

रसायन २८५—भैषज्य ७०६ ।

ऊपर लिखे तीनों प्रकार के मकरध्वज में गंधक, पारद से १ गुनी जारण की जाती है और शास्त्रों में लिखा है कि पारद के साथ गंधक जितनी अधिक जारण की जायगी उतना ही अधिक मकरध्वज प्रभावशाली होगा इस मकरध्वज में गंधक दुगुनी जारण की जाती है, पर।पारद संस्कारित ही डाला जाता है तथा धूम भी नहीं निकलने दिया जाता। इससे यह नं० ३ के मकरध्वज से उत्तम है पर नं० १-२ के सिद्ध मकरध्वज से न्यून गुण वाला है। सेवन विधि उसी प्रकार है।

संस्कारित पारद द्वारा बनाया हुआ
स्वर्ण घटित, दुगुण गंधक जारित
बहिर्धूम विपाचित –

मकरध्वज (स्वर्ण सिंदूर) नं० २

"वली पलित नाशनस्तनुभृतांवयः स्तम्भनः।
समस्तगद खण्डनः प्रचुर रोग पंचाननः॥"

रसायन २८५—भैषज्य ७०६।

ऊपर लिखे नं० १ के मकरध्वज (स्वर्ण सिंदूर) में और इसमें सिर्फ धूम का अन्तर है जिस प्रकार कि सिद्धमकरध्वज में २ भेद

मकरध्वज के बनाने की और सेवन करने की विस्तार पूर्वक विधि जानने को "मकरध्वज" नामक पुस्तक जिसका मूल्य ≈) है मंगा देखें।

व्यवस्थापक श्रीधन्वन्तरि औषधालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

है इसी प्रकार इस स्वर्ण सिन्दूर में भी २ भेद हैं। अन्तर्धूम से बहिर्धूम विपाचित में कम गुण होता है। बाकी सेवन विधि मात्रानुपान आदि सब पूर्ववत् ही हैं।

हिङ्गुलोत्थ पारद द्वारा बनाया हुआ-स्वर्ण-घटित
द्विगुण गंधक जारित—

मकरध्वज (स्वर्ण सिंदूर) नं० २

"गृहेऽपि गृहभूपतिर्भवति यस्य चन्द्रोदयः।
सपञ्च शर दर्पितो मृगदृशां भवेद्वल्लभ.॥"

रसायन २८१, भैषज्य ७०९।

सब से सस्ता और सुलभ मकरध्वज (स्वर्ण सिंदूर) यही है यह हिङ्गुलोत्थ पारद से द्विगुण गन्धक जारण कर बनाया जाता है। गरीब अमीर सब ही इसका व्यवहार कर सकते हैं। सेवन विधि मात्रा अनुपान आदि सर्व पूर्ववत् ही हैं।

अन्तर्धूम विपाचित षट गुण वलि जारित

रस सिंदूर नं० १

"बन्धूक पुष्पारुणमीशजस्य भस्म प्रयोज्यं सकलामयेषु।
निजानुपानैर्मरणं जराञ्च हन्त्यस्यवल्लः क्रम सेवनेन॥"

धन्वन्तरि

यह "रस सिन्दूर" हिंगुलोत्थ पारद के साथ ६ गुनी शुद-

गन्धिक जारण कर बनाया जाता है इसलिये यह गन्धक के प्रभाव से, अधिक गुण शाली होजाता है। प्रमेह, नपुंसकता स्वप्न प्रमेह, कास श्वास, सन्निपात, विशूचिका में बड़ा लाभ करता है। बहुत से वैद्य इसको भी-मकरध्वज के स्थान में व्यवहार करते हैं। सेवनविधि मकरध्वजवत् ही है किन्तु मात्रा इस की मकरध्वज से सवाई अर्थात् १। रत्ती लेनी चाहिये।

अन्तर्धूम विपाचित—

रस सिंदूर नं० २

"प्रमेहे श्वास कासे च षण्ढे क्षीणेऽल्पवीर्य्यके।
हर गौरीरसो देयः सर्व रोग प्रशान्तये॥"

रसेन्द्रसार संग्रह २१।

यह रस सिन्दूर हिंगुलोत्थ पारद के साथ २ गुनी शुद्ध गंधक के योग से बनाया जाता है इसको हरगौरी रस भी कहतेहैं। जहाँ पारद भस्म लिखी होती है वहाँ अनेक वैद्य इसका ही व्यवहार करते हैं तथा अनेक वैद्य कज्जली के स्थान में भी गुण वृद्धि के लिये इसको ही डालते हैं यह अनुपान भेद से विविध रोग जैसे प्रमेह, श्वास, कास, नपुन्सकता आदि रोग नष्ट कर वीर्य्य, बल कांति को बढ़ाता है। सेवन विधि; अनुपान आदि सब पूर्ववत्। किन्तु इस की मात्रा १॥ रत्ती की है।

बहिर्धूम विपाचित, सम-गुण गन्धक-जारित

रस सिंदूर नं० २

'अनुपान विशेषेण करोति विविधान्गुणान्"

रसेन्द्रसार संग्रह।

इसमें पारद के बराबर ही गन्धक शुद्ध डाल कर और खुली हाट रख कर बनाया जाता है जो बड़ी सरलता और आसानी से बन जाता है गुण भी न्यून करता है पर आज कल सस्तेभाव में मिल जाने से बहुत से लोभी चिकित्सक इसका व्यवहार करते हैं। यह गुण अवश्य करता है और रोगों में लाभ भी करता है पर इसका प्रभाव धीरे २ होता है। इस की मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती पर्यन्त है। अनुपान आदि वही हैं।

मल्ल चन्द्रोदय

"मल्लादि चंद्रोदयमानयन्ति सर्वोविशेभगोऽनेप्रधानवीर्यम्
विसूचिकासन्निपतन्त्रिदोषान् व्याधीनपाकर्तुमनन्यशक्त्रम्"

रसायनसार २६२।

यह ज्वर, कास, श्वास कफ, नाशक और अग्नि वर्धक है। सन्निपात रोग में जब कफ की वृद्धि और शीत का प्रकोप हो तब इसके व्यवहार से तत्काल लाभ होता है। वात व्याधि और नपुंसकता में अति लाभदायक है। औपसर्गिक सन्निपात (प्लेग) की अपूर्व महौषधि है। **मात्रा** आधी रत्ती से एक रत्ती तक है रोगी की अवस्थानुसार न्यूनाधिक भी करदी जा सकती है।

अनुपान ज्वर, कास, श्वास, कफ में पानका रस ६ माशे लें उस में १ मात्रा मिला कर चटावें। सन्निपात में जब शीत का प्रकोप हो या कफ की वृद्धि हो तब ६ माशे अद्रक का स्वरस ले उसमें १ मात्रा मल्ल चन्द्रोदय मिला कर चटावें। वातव्याधि में १ मात्रा मुख में डाल ऊपर से महारास्नादि क्वाथ बनाकर पिलावें। नपुंसकता में मल्ल चन्द्रोदय से द्विगुण अनुपान चूर्ण जिसका वर्णन सिद्ध मकरध्वज में किया है लेकर पान का स्वरस डाल २ दिन मर्दन कर मटर बराबर गोली बना लें और १ गोली प्रातः और १ गोली रात्रि को सोने से १ घन्टे पूर्व दूध के साथ निगल लें। दूध औंटा कर ठन्डा कर मिश्री मिला कर लें। जब यह गरमी करे तब दूध में मिश्री और घी दोनों मिला कर पीवें। घी इसकी गरमी शान्त करता है अतः इसके सेवन काल में घृत अधिक सेवन करें।

औपसर्गिक सन्निपात (प्लेग) में अद्रक का स्वरस ६ माशे पान का स्वरस ६ माशे में १ मात्रा मिलाकर चटावें और गिलटी पर नागफनी की लुगदी बना और गरम कर बांधने से प्लेग को शीघ्र ही लाभ होता है। वैद्यों से प्रार्थना है कि प्लेग पर अवश्य अनुभव कर मुझे भी सूचित करने की कृपा करें।

मल्ल सिन्दूर

> विद्याविर्य मासम शक्त शुक्र।
>
> आरोग्य हेतोर्मधुना मनुष्यः॥

यह पारद, गन्धिक, मल्ल, संखिया, डाल कर बनाया जाता है सिर्फ स्वर्ण नहीं पड़ता। स्वर्ण के साथ न होने से ही इसका

नाम मल्ल सिन्दूर है और यह मल्ल चन्द्रोदय से न्यून गुण वाला भी होता है। सेवन-विधि मल्ल चन्द्रोदय की भाँति ही है।

ताल सिन्दूर

"कुष्ठादि रोगेष्वतुल प्रभाव. स्वास्थ्य प्रचार क्रम सत्त्वभाव: ॥"

रसायनसार २४६।

शीत ज्वर, कफ ज्वर, दाद, खाज, कुष्ठ, पामा आदि सम्पूर्ण चर्म रोग नाशक है तथा रक्त विकार को अति लाभदायक और बल-वर्धक है। **मात्रा**—एक रत्ती से २ रत्ती पर्यन्त।

अनुपान— रक्त विकार कुष्ट आदि में महामञ्जिष्ठादि क्वाथ के साथ, ज्वर में अद्रक के स्वरस के साथ, प्रातः सायं देना चाहिये।

ताम्र सिन्दूर

"नवताम्रेश्वरो हन्यात्कुष्ठादीनखिलान् गदान्।
धातुपुष्टकरश्चैव सूतिका रोग नाशनः ॥"

रसायन ३३८, सुन्दर ६२

सन्निपात में जब कि हिचकी श्वास हो तब इसका उपयोग अद्वितीय गुणकारक होता है। विशूचिका अम्लपित्त, शूल की प्रसिद्ध औषधि है तथा कुष्ठ से आदि लेकर जो रोग हैं उन सब में लाभदायक है तथा धातु को पुष्ट कर बल बढ़ाता है।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक बल के अनुसार।

अनुपान—सन्निपात हिचकी श्वास आदि में अद्रक के स्वरस के साथ अथवा अष्टाविशेष जल के साथ। अम्लपित्तमें पित्त-पापड़ा गिलोय नीम के पत्र के स्वरस के साथ। शूल में-त्रिफला और शहद के साथ।

स्वर्ण वंग भस्म

"रमणीयतर स्वर्णं वंग नाम रसायनम्।
बल्यं मेह हरं कान्तिमेधा वीर्य्याग्नि वर्द्धनम्॥"

आयुर्वेद २६३-रसायन ३७७ रस सागर

यह पारद गन्धक के योग से कूपी द्वारा पकाने से स्वर्ण के रङ्ग की वंगभस्म बनती है। इसको अनेक वैद्य नकली मृगाङ्क लघुमृगाङ्क के नाम से भी व्यवहार करते हैं; यह प्रमेह, मधुमेह, नपुन्सकता, कास, श्वासके लिये प्रसिद्ध औषधि है। **मात्रा**-१ रत्ती से २ रत्ती पर्यन्त। **अनुपान**-वीर्य्य विकार में इलायची और मधु; कास, श्वास में कालीमिर्च अथवा पीपल और मधु के साथ सेवन करनी चाहिए। स्वप्न प्रमेह में १ मात्रा कुशावलेह तोले २ में मिला कर चाटने से बड़ा लाभ होता है।

मृत संजीवनी रस

"मृत संजीवनीनाम रसोऽयं शङ्करोदितः।
मृतोपि संनिपातार्त्तो जीवत्येव न संशयः॥"

भैषज्य, रसेन्द्र।

यह कूपी पक्वरस-प्लेग, विशूचिका (हैजा) रोग के लिये श्रेष्ठ महौषधि है। सन्निपात एक भयङ्कर रोग है। इस रोग में ही वैद्य की दक्षता और औषधि का चमत्कार देखा जाता है। यह औषधि सन्निपात की प्रायः सभी अवस्थाओं में काम देती है अधिकतर कफ और वायु की प्रबलता में अर्थात वातोल्वण और कफोल्वण सन्निपात में विशेष प्रभाव करता है। इसी प्रकार प्लेग, विशूचिका की भी पैली अवस्था में जब कि कफ या वायु का प्रकोप हो तब, तथा शीत के प्रकोप काल में भी लाभ देता है। **मात्रा**—एक एक वटी तीन तीन घण्टे के अन्तर से रोगी को दें। जब खुश्की मालूम हो तब शिर से गुलरोगन अथवा हिमसागर तैल की मालिश कर.वें और मात्रा कम करदें। **अनुपान**—अदरक का स्वरस या मृत सञ्जीवनी अर्क ६ माशे ले उसमें १ माशा मिला कर पिलावें।

धातुओं की भस्में

धातु उपधातुओं की भस्में बड़ी उत्तम होती हैं जो प्रथम अच्छी प्रकार शोधन कर पश्चात् भस्म की गई हों तथा जो निरुत्थ हों। आयुर्वेद शास्त्र में निरुत्थ भस्में जो पारद, हिंगुल, हरिताल, मनशिल आदि. द्वारा भस्म की गई हों और जो पुन: जीवित न हो सके सर्वोत्तम मानी गई है। जो पुनः जीवित हो जाय और जो जड़ी बूटी से भस्म की गई हो वह मध्यम मानी है पर यूनानी वाले इन्हें ही सर्वोत्तम

मानते हैं तथा जो गंधक अथवा धातु शस्त्र से भस्म की गई हों वह अधम मानी गई हैं।

भस्में आयुर्वेदीय शास्त्र के आधार पर, किन्तु अपनी विशेष क्रिया द्वारा बनाई जाती हैं इस लिये जिन्हें अधिक समय इस निर्माण कार्य्य में व्यतीत हो चुका हो, जो इसमें पूरे अनुभवी हों उन्हीं के द्वारा यह उत्तम बनती है अतः हम पाठकों से प्रार्थना करेंगे कि भस्में क्रियाकुशल अनुभवी वैद्य के समय की बनी प्रसिद्ध प्राचीन कार्य्यालय से खरीदें या स्वयं बनावें। ❀

भस्में क्रिया भेद से कई प्रकार की बनती हैं हम यहाँ उन सब भेदों को स्पष्ट कर देते हैं और भेदों के अनुसार ही सेवन विधि का वर्णन करते हैं।

स्वर्ण भस्म

"स्वर्णं स्निग्धं कषायं तिक्त मधुरं दोषत्रयघ्नंलनम्।
शीतं स्वादुरसायनं च रुचिकृत् चाक्षुष्यमायुष्यदम्॥
प्रज्ञावीर्यबलस्मृतिस्वरकरं कान्तिं विधत्तेतनोः।
संधत्तेदुरितक्षयं श्रियमिदं धत्ते नृणां धारणात्॥"

प्रकाश १२६ शार्ङ्गधर २६४।

ज्वर, कास, श्वास, प्रमेह, मन्दाग्नि संग्रहणी, क्षय रोग नाशक है, मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने में और सब प्रकार की निर्बलता

❀ धन्वन्तरि कार्य्यालय की भस्में जो शुद्ध कर के क्रिया कुशल अनुभवी कार्य्य कर्त्ताओं की देख रेख में बनती हैं, पूर्ण निर्दोष पाई गई हैं।

दूर करने में यह अद्वितीय है। इसके सेवन करने वाले हृष्ट पुष्ट कान्तिमान् तथा अत्यंत मेधावी होते हैं।

यह धनाढ्यों और राजाओं के सेवन योग्य कही जाती है। नागभस्म वंगभस्म आदि धातुओं की भस्म से इसका गुण बहुत अधिक होता है। शास्त्रों में "मृतः कोटि गुणं स्वर्णम्" ऐसा कहा है। **मात्रा**- आधी रत्ती से २ रत्ती पर्यन्त। **अनुपान**- ज्वर, के लिये सितोपलादि चूर्ण माशे १ में १ मात्रा मिला शहद के साथ चाटना चाहिये अथवा ६४ पहरापीपल १रत्ती में स्वर्ण भस्म १ मात्रा मिला शहद में चाटना चाहिये। क्षय, कास (खांसी) कफ, श्वास के लिये अभ्रक का सत्व १ माशे अथवा पीपल छोटी का चूर्ण ४ रत्ती में १ मात्रा मिला मधु (शहद) के साथ चाट ऊपर से वाँसारिष्ट ६ माशे थोड़ा पानी मिला कर पीवे अथवा वाँसे का स्वरस ६ माशे निकाल ऊपर से चटावें प्रमेह में- विदारीकंद के चूर्ण १ माशे में १ मात्रा मिला फांक ऊपर दूध पीवें।

मन्दाग्नि, संग्रहणी, या वाजीकरण में भांग धुली २ रत्ती, काली मिर्च १ रत्ती मधु ६ माशे मिला कर चाटें। मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने के लिये - मधु में चाट ऊपर से सारस्वतारिष्ट १ तोले पानी २ तोले मिलाकर पीवें अथवा सारस्वत घृत तोले १ मिश्री तोला १ में १ मात्रा मिला कर चाटें।

यह भस्म योग वाही रोग में लाभदायक होती है पर जब कि रोगी को निर्बलता अधिक हो तब यह रोग नाश भी करती है तथा बल भी बढ़ा देती है।

कज्जली द्वारा जारित

रौप्य भस्म नं० १

"वयसः स्थापनं स्निग्धं लेखनं वात पित्तजित् ।
प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यचिराद्ध्रुवम् ॥"

प्रकाश १२० निघन्टु २२४

रौप्य भस्म (चाँदी की भस्म) आयु को बढ़ानेवाली स्निग्ध लेखन और वात पित्त को नाश करने वाली तथा प्रमेह प्रदर क्षय कास, श्वास, बहुमूत्र, विषदोष, निर्बलता को दूरकर मस्तिष्क शक्ति और बल को बूढ़ा तरुण अवस्था कर देती है। **मात्रा**–एक रत्ती से ४ रत्ती तक। **अनुपान**–सितावर, इलायची छोटी, मूसरी सफेद, असगंध, पीपल छोटी, कालीमिर्च, शिलाजीत शुद्ध सब समान भाग ले कपड़छन कर रक्खे। **व्यवहार**—अनुपान चूर्ण ३ माशे, रौप्य भस्म १ मात्रा दोनों को मिला ऊपर से मिश्री मिला दूध पीने से वीर्य्य सम्बन्धी सब रोगों को लाभ होता है। कास, श्वास, के लिये त्रिकुटा (सोंठ मिर्च पीपल) १ माशे, रौप्य भस्म १ मात्रा मधु में मिला कर चाटना। बाकी इसका अनेक प्रयोगों मे व्यवहार होता है।

हरिताल द्वारा जारित

रौप्य भस्म नं० २

"दीपनं वलकृत्स्निग्धं गुल्माजीर्ण विनाशनम् ।
आयुष्यं दीर्घ रोगघ्नं रजतं लेखनं स्मृतम् ॥"

रसेन्द्रसार संग्रह ७२

रौप्यभस्म नं० १ में और इस नम्बर २ में सिर्फ यही अन्तर है कि वह रौप्यभस्म कज्जली द्वारा आयुर्वेद प्रकारा, निघन्टु रत्नाकर के पाठानुसार बनी हुई और यह रसेन्द्रसार संग्रह के अनुसार हरिताल, गंधक के योग से बनी हुई होने के कारण गुण में कुछ न्यून गुण वाली होती है; वाकी मात्रा, सेवन विधि, अनुपान, सब उसही भाँति समझें ।

कज्जली द्वारा, कूपीपक्व, मयूरकण्ठ के वर्ण की—

ताम्र भस्म नं० १

"कुष्ठ प्लीह ज्वर कफ मरुच्छ्वास कासार्ति शोफान् ।
तन्द्राशूलोदरकृमिवमीन् पाँडुमोहातिसारान् ॥
अर्शोगुल्मक्षय भ्रम शिरोव्याधिमोहादि हिक्का ।
शुद्ध शुल्वंहरति सततं वन्हि वृद्धिकरोति ॥"

रसायन ३३८ सुन्दर ६२

यह ताम्रभस्म-प्रथम ताम्र को शुद्ध कर पश्चात् पारद, गंधक शुद्ध के साथ वालुकायंत्र में काँच कुप्पी में पकाकर बनता है और देखने में ठीक मयूर कंठ के वर्ण का होता है तथा घिसने

से चमक भी देता है शास्त्र परीक्षा में उत्तम ठहरता है पर वास्तव में इसकी पूरी२ भस्म नहीं होती इस लिये यह किसी २ को वमन, विरेचन, कर देता है इसलिये हमारी सम्मति में यह उत्तम नहीं है फिर भी वैद्य इसे अधिक पसन्द करते है और व्यवहार करते हैं इस कारण तथा हमने इस को जिन २ रोगों में उपयोगी पाया है उनको भी बतलाना आवश्यक समझ इस की व्यवहार विधि और गुण लिखते हैं :—

शूल की उस अवस्था में जब वमन, विरेचन, कराना आवश्यक हो। अन्नद्रव्य शूल में। अम्ल पित्त ऊर्ध्वगामी की उस अवस्था में जब भूख हो और दस्त न होता हो। प्लीहा, यकृत के बलवान रोगी को। श्वास का रोगी जो वमन, विरेचन सहन कर सकता हो। इतनी अवस्थाओं में यह विशेष उपयोगी सिद्ध हुई है। **मात्रा**—आधीरत्ती से २ रत्ती पर्यन्त। **अनुपान** शहत माशे ६ घृत गौका माशे १ में १ मात्रा ताम्र भस्म की मिलाकर चटावें, भूक लगने पर दुग्ध-पान ही करावें। वमन, विरेचन हो तो चिन्ता न करें।

पारद योग से-शतपुटी

ताम्र भस्म नं० २

"ताम्रकृष्णं गदहरं यकृत्प्लीहोदरामयम्।
क्रिमिशूलाम वातघ्नं गृहण्यर्शोऽम्लपित्तजित्॥"

—धन्वन्तरि

शुद्ध ताम्र में कज्जली डाल पुट लगाये जाते हैं इस तरह १०० पुट लग जाने पर ताम्र भस्म बनती है। आयुर्वेद शास्त्र

का मत है कि जितने पुट लगें और जितना मर्दन हो वस्तु उतनी ही प्रभावशाली बनती है "मर्दनम् गुणवर्द्धनम्" अतः यह भी उतनी ही प्रभावशाली है जितनी कि होनी चाहिये। इसमें रूप, रंग, नं० १ का नहीं है किन्तु गुण में प्रभावशाली होती है, हम चिकित्सकों को इसका ही प्रयोग करने की तथा प्रयोगों में डालने की सम्मति देंगे-कारण कि शास्त्रों में लिखा है कि विद्वान वैद्य विषको विष नहीं कहते किन्तु ताम्र को ही विष कहते हैं। कारण कि विषमें १ ही दोष है और ताम्र में आठ दोष हैं।

"न विषं विषमित्याहुस्ताम्रन्तु विषमुच्यते।
एको दोषो विषे सम्यक्ताम्रे त्वाष्टौ प्रकीर्तिता॥"

यह प्लीहा, यकृत, ज्वर, कफ, श्वास, खाँसी, वायु के रोग, उदर रोग, उदर का शूल, परिणामशूल, कृमि, पाँडु, बवासीर, गुल्म, मस्तिष्क व्याधि, प्रमेह, कुष्ठ, शोथ, वातरक्त और क्षयका नाश करती है। रुचिदायक, सारक, अग्नि और बलवर्धक है। इसके सेवनसे अकाल ही में बाल नहीं पकते, अम्लपित्त, हिचकी, फेंफड़े की सूजन के लिये भी अव्यर्थ है। **मात्रा**-आधी रत्ती से एक रत्ती पर्यन्त। **अनुपान** सेमर की जड़ जो पतली हो उसे ले और कूट कर १ तोला अर्क निकाल उसमें २ माशे

गौ घृत १ तोले शहत और १ मात्रा ताम्रभस्म मिला कर चाटे और ऊपर से मिश्री मिला दूध पीवे इस तरह ४१ दिन सेवन करने से—बल और अग्नि बढ़े वीर्य्य की दृढ़ता देह पुष्ट दिव्य दृष्टि और कामदेव के समान सुन्दर रूप हो। उदर, शूल, शोथ में— एक मात्रा ताम्र भस्म में ३ माशे घृत और ६ माशे शहत मिला चाटे ऊपर से पुनर्नवा की जड़ का रस २ तोले पीवे। कास, श्वास, कफ, में त्रिकुटा का चूर्ण कर १ माशे ले १ मात्रा भस्म मिला गुनगुने जल के साथ फाँके। हिचकी में मधु के साथ चाटे, गुल्म यकृत, प्लीहा, में एक मात्रा भस्म १ तोले ग्वार पाठे में मिलाकर चाटे। सन्निपात (त्रिदोष) में जब श्वास अथवा हिचकी हो तब १ मात्रा भस्म में अद्रक कारस ६ माशे, मधु ६ माशे मिलाकर चटावे।

गन्धक द्वारा जारित—

ताम्र भस्म नं० २

"हिक्का कास प्रमेह मोह पतनाऽतिसार क्षयव्यथाः।
शौल्वंभस्म निराकरोति विधिवन्निष्पादितं वृंहयेत् ॥"

रसायनसार ३४६।

यह ताम्रभस्म गन्धक योग से जारित की जाती है इसका वर्ण कृष्ण होता है यह सस्ते भाव होने से अनेक वैद्य इसको प्रयोगों में व्यवहार करते हैं। गन्धक द्वारा जारित होने से यह न्यून गुण वाली है। बाकी गुण, मात्रा, अनुपान, व्यवहार नं०२ की ताम्रभस्म के अनुसार ही हैं।

तीन सौ पुटी

लोह की सर्वोत्कृष्ट भस्म

" आयुःप्रदाता बलवीर्यकर्ता रोगापहर्ता मदनस्य कर्ता ।
अयःसमानं नहि किंचिदन्यद्रसायनं श्रेष्ठतमं वदन्ति ॥"

बृहत् ७६ निघण्टु २६९ ।

प्लीहा (तिल्ली) के रोग यकृत विकार पाण्डु कामला रक्त-विकार अर्श (बवासीर) शूल, अम्लपित्त, अरुचि, नपुंसकता निर्बलता आदि अनेक रोग दूर होते हैं। रक्त शुद्ध होता है जिस से शरीर का पीलापन दूर हो शरीर कान्तिमान हो जाता है। यह लोह भस्म आयुष्य बल और वीर्य को बढ़ावे, रोगों को नाश करे, कामशक्ति पैदा करे ऐसी लोह भस्म के समान दूसरी श्रेष्ठ रसायन नहीं है ऐसा शास्त्रों का भी मत है। मात्रा—
१ रत्ती से ४ रत्ती पर्यन्त ।

अनुपान—शूल रोग में १ मात्रा लोहा भस्म में १ रत्ती हींग का फूला और ६ माशे चूर्ण मिला कर चाटना चाहिये । श्वास रोग में लोह भस्म १ मात्रा त्रिकुटा १ माशे दोनों को शहद में मिला कर चाटना । प्रमेह रोग में त्रिफला ३ माशे लोह भस्म १ मात्रा मिश्री ३ माशे तीनों को मिला कर फाँकना ऊपर से जल अथवा दुग्ध पीना । त्रिदोष में १ मात्रा लोह भस्म को ६ माशे अद्रक का स्वरस और ६ माशे शहद में मिला कर चटाना । बल वृद्धि के लिए पुनर्नवा मूल १ तोले को पीस कर गौ के दूध में मिला तथा उसमें मिश्री मिला लोह भस्म मात्रा १ को शहद

६ माशे में चाट कर ऊपर से पीना। शोथ रोग में पुनर्नवा का रस १ तोले में मिला कर चाटना। मूत्र-कृच्छ्र रोग में शिलाजीत १ माशे में मिला कर खाना। बाकी सम्पूर्ण रोगों में त्रिफला ६ माशे मधु १ तोले मिला कर चाटने से लाभ होता है। स्मरण रहे प्रातः सायँ व रात्रि को सोते समय सेवन करें।

दरद योगेन—

लोह भस्म

'बलंवीर्यं वपुः पुष्टिं कुरुतेऽग्निं विवर्द्धयेत्।
सर्वान् गदान् विजयते कान्त लोहं न संशयः॥"

सुन्दर, योग, भाव प्रकाश, निघन्टु।
आयुर्वेद रसेन्द्र 'शार्ङ्ग'

लोह की सर्वोत्कृष्ट भस्म नं० १ में ३०० पुट लगते हैं तथा दरद और कज्जली इन दोनों के भी पुट लगते हैं और इसमें केवल दरद (हिंगुल) के ही पुट लगते हैं और इसमें ७ पुट की तो शास्त्रों में आज्ञा है पर इसमें ३५ पुट लगाते हैं तब यह उत्तम भस्म होती है फिर भी नं० १ की से यह न्यून गुण वाली है। बाकी गुण अनुपान व्यवहार सब वही है पर मात्रा इसकी १ माशे पर्यन्त है।

लोह भस्म नं० २

"कृष्णायः शोथशूलार्शः क्रिमिपाण्डुत्व शोषनुत् ।
वयस्यं गुरू चक्षुष्यं सर्वं मेदोऽनिलापहम् ॥"
शार्ङ्ग सुन्दर निघन्टु भाव ।

यह लोहभस्म केवल वनस्पतियों से की जाती हैं। इसमे १२ पुट लगाने की शास्त्रों में आज्ञा है पर २१ पुट लगते हैं तब ठीक भस्म होती है। इसमें कज्जली अथवा दरद के पुट नहीं लगाये जाते इससे न्यून गुण वाली होती है बाकी गुण, मात्रा, अनुपान, व्यवहार सब नं० १ के ही अनुसार हैं।

हरिताल द्वारा जारित

वंग भस्म (वंगेश्वर) नं० १

"सिंहोयथा हस्तिगणं निहन्ति तथैववंगोऽखिलमेहवर्गम् ।
देहस्यसौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वं वरस्यपुष्टिं विदधातिनूनम् ॥"
भाव, योग, प्रकाश, निघन्टु, शार्ङ्ग ।

वीर्य्य की क्षीणता व पतलापन, प्रमेह, नपुन्सकता, सुजाक मूत्रकृच्छ्र आदि वीर्य्य विकार की प्रसिद्ध औषधि है। पाचन अग्नि वर्धक रुचिकारक क्षयरोग नाशक है। सब प्रकार के प्रमेह के लिये जगत प्रसिद्ध है। आयुर्वेद प्रकाश में लिखा है कि जिस प्रकार सिंह हाथियों के समूह को नष्ट करता है उसी प्रकार सर्व प्रमेह को यह वङ्गभस्म नष्ट करती हैं। शरीर को सुन्दर करने वाली इन्द्रियों को प्रबल करने वाली शरीर को पुष्ट करने

वाली है। **मात्रा**—२ रत्ती से ६ रत्ती पर्य्यन्त **अनुपान**-सफ़ेद मूसली, गोखरू, गिलोय, आँवले, सितावर, असगंध, शिलाजीत शुद्ध समान भाग ले कपड़छन कर रक्खे। **व्यवहार**-अनुपान चूर्ण माशे ३ में वङ्गभस्म १ मात्रा मिला फाँके ऊपर से दूध पीवें। समय—प्रातः व रात्रि को सोते समय। छोटी इन्द्री के स्थूल करने के लिये लौंग, समुद्रफल, बंग भस्म तीनों को बंगला पान में घोट कर इन्द्री पर लेप करें और बंगला पान गरम कर बाँध दे ऊपर से लंगोट कसदे।

वंग भस्म नं० २

"धातुस्थौल्यकरं दृप्तिक्षयहरं सर्व प्रमेहापहम्।
वंगंभक्षयतोनरस्य न भवेत्स्वप्नेऽपि शुक्रक्षयः॥"

रसेन्द्र प्रकाश निघन्टु।

नं० १ की वङ्गभस्म हरिताल द्वारा जारित है और यह नं०२ की वङ्गभस्म वनौषधियों द्वारा जारित है। इस लिये यह कुछ न्यून गुण वाली होती है बाकी सेवन विधि, मात्रा, अनुपान, व्यवहार सब नं० १ के ही अनुसार हैं।

त्रिवंग भस्म नं० १

"कासः श्वासः क्षयो रक्तपित्तं कुष्ठं प्रमेहकः।
आवाल्यं वन्हिमान्द्यञ्च मुक्त्वागच्छन्ति रोगिणाम्।"

रसायनसार ५१५।

इसके सेवन से कास, श्वास, क्षय, रक्तपित्त, कुष्ठ, प्रमेह दुर्बलता, मन्दाग्नि, मूत्र नली के विकार और दर्द प्रदर, सोम-रोग स्त्रियों के सफेद पानी का जाना, वीर्य्यस्राव, धातुक्षीणता बहुमूत्र, प्रमेह, पोड़ू आदि रोग नष्ट होते हैं यह खूब बलबर्धक और वीर्य्य को पुष्टि तथा शरीर को शक्ति देने वाली है।

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती पर्यन्त। **अनुपान**—कास, श्वास, क्षय, रक्तपित्त, में बाँसे के पत्तों का चूर्ण माशे ३ भस्म मात्रा १ मधु माशे ६ मिलाकर चाटें। बहुमूत्र, सोमरोग, में केला की फली या गूलर का रस १ तोला ले उसमें १ मात्रा भस्म मिलाकर चाटें प्रदर, सफेद पानी जाने के लिये समुद्र सोख का चूर्ण २ माशे में १ मात्रा भस्म मिला फाँके ऊपर से अशोक छाल का क्वाथ पीवें। प्रमेह, दुर्बलता, वीर्य्यस्राव, आदि में बिदारी कंद का चूर्ण माशे ३ में १मात्रा मिला कर फाँके ऊपर से दूध पीवें।

त्रिवंग भस्म नं० २

"श्वासं कासं नयनरुजः पित्त रोगानशेषान्।"

धन्वन्तरि २१

उल्लिखित नं० १ की त्रिवंग भस्म कज्जली और हरिताल द्वारा जारित है और यह नं० २ की त्रिवंग भस्म वनौषधियों से की जाती है बाकी सेवन विधि गुण अनुपान सब नं० १ के ही अनुसार है। किन्तु इसकी मात्रा २ रत्ती से ४ रत्ती तक है।

नाग भस्म (नागेश्वर) नं० १

"नागस्तु नागशत तुल्यबलं ददाति,
व्याधिं विनाशयति जीवनमातनोति ।
वन्हि प्रदीपयति कामवलङ्करोति ,
मृत्युंच नाशयति संतत सेवितःसः ॥"

शार्ङ्ग, प्रकाश, मणि, समुच्चय ।
योग, भाव, रत्न, निघन्टु ।

नागभस्म के सेवन से हाथी के समान बल बढ़ता है, काम शक्ति प्रबल होती है, अग्नि दीपन होती है। सम्पूर्ण रोग नष्ट होते है, आयु बढ़ती है, प्रमेह, स्वप्नप्रमेह, वीर्य्य का पतलापन निर्बलता और स्त्रियों के प्रदर तथा रज विकार को दूर कर शरीर कान्तिवान् हो जाता है। **मात्रा**-१ रत्ती से ४ रत्ती पर्य्यन्त समय प्रात: और सायङ्काल। **अनुपान**-अनुपान चूर्ण नं० १ सितावर, आमले, इलायची छोटी, मूसरी सफेद, वंशलोचन, समान भाग ले कपड़छन कर रक्खे। अनुपान चूर्ण नं० २-सोंठ, विधारा, समुद्र सोख, माजूफल समान भाग ले कपड़छन कर रक्खे। **व्यवहार**—अनुपान चूर्ण नम्बर १—माशे ३ नाग भस्म मात्रा १ दोनों को मिला कर फांके ऊपर से मिश्री मिला दूध पीवे अथवा मिश्री माशे ६ नागभस्म मात्रा १ दोनों को मिला कर फाँके ऊपर से मिश्री मिला दूध पीवे तो सर्व प्रकार के वीर्य्य विकार दूर हो शरीर हृष्ट पुष्ट हो जाता है। अनुपान

चूर्ण नम्बर २—माशे ३, नाग भस्म १ मात्रा दोनों को मिला कर फांके ऊपर से साँठी चावल का पानी अथवा मिश्री मिला दुग्ध पीवे यदि अनुपान चूर्ण नं० २ तैयार न हो तो मधु के साथ चाटने से सब प्रकार के रज विकार, प्रदर नष्ट हो शरीर कान्तिवान होजाता है।

नाग भस्म नं० २

"दशनागबलं धत्ते वीर्य्यायुः कान्ति वर्द्धनम्।
मेहान्हंति हतं नागं सेव्यं वङ्गञ्च तद्गुणम्॥"
हस्त २२।

नं० १ की नाग भस्म मन्शिल योग से ६० पुट देकर बनाई जाती है और यह नं० २ की नागभस्म बनौषधियों द्वारा बनाई जाती है इस कारण न्यूनगुणवाली है। बाकी सेवन विधि, मात्रा अनुपान, गुण, व्यवहार सर्व उसी प्रकार हैं।

यशद भस्म

[जस्त भस्म]

"श्वासं च कासं समपाकरोति। करोति नेत्र्यं प्रबलं च योगम्॥"
रसायनसार ३९६।

विषमज्वर, जीर्णज्वर, क्षय, कास, श्वास, प्रमेह, धातुक्षीणता और नेत्र रोग नाशक है। यह भस्म स्वर्ण मालिनी वसन्त में खर्पर के न मिलने पर अनेक विद्वान वैद्य व्यवहार करते हैं

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती पर्य्यन्त। **अनुपान**-पुराने घृत के साथ मिला कर नेत्र रोग में लगाने से और त्रिफला का चूर्ण ३ माशे में १ मात्रा मिला कर फाँकने और ऊपर से त्रिफलाक्वाथ पीने से अति लाभ करती है पान के साथ अथवा इलायची के साथ खाने से प्रमेह रोग नष्ट होता है और पंच कोल (पीपर पीपरामूल चव्य चित्रक सोंठ) मासे २ में १ मात्रा यशदभस्म मिला कर फाँकने से मन्दाग्नि में लाभ होता है त्रिसुगन्ध (तज तेजपात इलायची) माशे १ में १ मात्रा यशदभस्म मिला कर देने से पित्त ज्वर में लाभ होता है। सितोपलादि चूर्ण के साथ जीर्ण ज्वर में लाभ दायक है। लौंग अजमायन के साथ शीत ज्वर को दूर करती है।

मण्डूर (कीट) भस्म नं० १

"मण्डूरं शिशिरं रूक्षं पाण्डुश्वयथु शोथजित्।
हलीमकं कामलाञ्च प्लीहानं कुम्भ कामलाम्॥"

सुन्दर, योग, शार्ङ्ग, रसायन, निघन्टु।

यह थोड़े मूल्य की सरलता से बनने वाली भस्म है किन्तु कुछ रोगों में इसके लाभ गुण के सामने बहुमूल्य भस्मे भी नहीं ठहर सकती हैं। शोथ (सूजन) पान्डु, तिल्ली, कामला, यकृत, मेदवृद्धि, के लिये तो यह अव्यर्थ है। रक्तार्श (खूनी बवासीर) और इसके द्वारा उत्पन्न शोथ को भी नष्ट करती है। जिनका शरीर पीला पड़ गया हो चेहरा (मुख) भद्दा तेजहीन हो गया

हो उनके लिये भी बड़ा लाभ करती है **मात्रा** एक रत्ती से ३ माशे पर्यन्त है। **अनुपान** त्रिफला चूर्ण ३ माशे मधु ६ माशे में १ मात्रा मिला कर चाटनी चाहिये। हमने देखा है कि इसको तीन माशे प्रातः और सायं दूध मलाई के साथ चटावे और भोजन में केवल चना की रोटी और वह भी विना निमक मोठे के सूखी, विना घी के, जितनी भी खा सके खिलावें तो जिन्हें कैसा ही शोथ (सूजन) तिल्ली, यकृत, मेदवृद्धि हो—अवश्य नष्ट हो जाती है पहिले रोटी थोडी खाई जायगी किन्तु थोड़े ही समय में भूक बढ़ जायगी और यही रोटी यथेष्ट खा सकेगा, खुश्की अधिक मालूम हो तब त्रिफला का अर्क थोड़ा २ पिला दिया करें जब रोग नष्ट हो जाय तब दूध देना आरम्भ करें फिर घृत दें और उसके बाद मीठा (बूरा, मिश्री) भी दें उसके बाद नमक दे इस तरह करने से रोग समूल नष्ट हो जायगा तथा बल भी यथेष्ट बढ़ जायगा।

हंस मांडूर

मॉंडूर को पहिले त्रिफला के क्वाथ के साथ खूब घोटे पश्चात् मांडूर से अठगुना गौमूत्र डाल मन्दाग्नि से पकावे जब लेहवत हो जाय तब त्रिफला, त्रिकुटा, मोथा, चव्य, वायविडंग, दारुहलदी, चित्रक, देवदारु, पीपरामूल, यह तेरह औषधि समान भाग ले कपड़छन करले और सब के बराबर मॉंडूर ले तब यह हंस मॉंडूर बने। इसकी मात्रा ३ माशे से १ तोला तक है इसे शहद में मिला कर चाटे और जब पच जावे तब तक (मट्ठा)

पोवे तो पान्डु हलीमक ववासीर, सूजन, उरुस्तम्भ कामला दूर हो तथा वृद्धावस्था, रक्तविकार, मन्दाग्नि नष्ट होजाती है।

मण्डूर [कीट] भस्म नं० २

"किट्टंकषायं शिशिरं पाण्डुश्वयथु शोफजित्।
हलीमकं कामलां च हरते कुम्भकामलाम्॥"

प्रकाश, रसेन्द्र, रत्न, आयुर्वेद।

नं० २ की कीटभस्म (मंडूर) का वर्ण लाल है तथा उसमें शोधन के अतिरिक्त त्रिफला के क्वाथ के पुट भी दिये जाते है इससे नं० १ की विशेष गुणवाली है और इसमें वे पुट नहीं लगते इस लिये यह न्यून गुणवाली है। बाकी सेवन विधि, मात्रा, अनुपान सब उसी प्रकार है।

स्वर्ण माक्षिक भस्म

"माक्षिकंतिक्तमधुरं मेहार्श क्रिमि कुष्ठनुत्।
कफपित्तहरंबल्यं योगवाहि रसायनम्॥"

सुन्दर, प्रकाश, योग, रसेन्द्र, निघन्टु।

इसका सेवन स्त्रियों का ऋतु विकार अत्यार्तव, योनि शूल प्रदर, पाण्डु तथा क्षय, हृदय रोग, उन्माद, कामला, विषदोष, गण्ड माला, वीर्य्यविकार नाशक और बलवर्द्धक है अनेक वैद्य स्वर्ण के अभाव में स्वर्ण माक्षिक भस्म का व्यवहार करते हैं कारण इसके गुण स्वर्ण से कुछ ही न्यून हैं। **मात्रा**—१ रत्ती

से ६ रत्ती पर्य्यन्त। **अनुपान**—स्त्री रोग में पुष्पनुग चूर्ण माशे ३ में १ मात्रा माक्षिक भस्म मिला मधु में चाट ऊपर से अशोक का क्वाथ पिलाने से सब स्त्री रोगों में लाभ होता है। पुष्पनुग चूर्ण न होने पर मधु के ही साथ चटाने से भी लाभ होता है। पाण्डु, कामला, क्रिमि आदि में त्रिफला के साथ मिला कर फँकाने से लाभ होता है।

अभ्रक भस्म सहस्र पुटी

रोगान् हन्ति द्रढ़यति वपुर्वीर्यवृद्धिं विधत्ते।
तारुण्याढ्यँ रमयतिशतं योषितां नित्यमेव॥
दीर्घायुष्यान् जनयति सुतान् विक्रमैःसिंहतुल्या।
न्मृत्यो र्भीतिं हरति सततं सेव्यमानं मृताभ्रम्॥

निघन्टु, सुन्दर प्रकाश,

अभ्रक भस्म श्वास कास की प्रसिद्ध और चमत्कारी महौषधि है। इसके सेवन से क्षय, प्रमेह, व्रण, कुष्ट, प्लीहा, उदर, क्रमि रोग, ज्वर और त्रिदोष (सन्निपात) भी तत्क्षण नाश को प्राप्त होते हैं। यह अनुपान भेद से अनेक रोगों को नाश कर बल वीर्य्य को बढ़ावे है। अभ्रक तरुणता को देने वाला और काम शक्ति को अति प्रबल करने वाला है। इसके सेवन करने वाली स्त्री रोगों से मुक्त हो दीर्घायु और पराक्रमी पुत्र पैदा करे। जो पुरुष इसका निरन्तर सेवन करे वह जराव्याधि के भय से रहित हो। **मात्रा**-१ रत्ती से ४ रत्ती पर्य्यन्त। **अनुपान**- कास

श्वास, कफ, क्षय में तालीसादि चूर्ण माशे १॥ में १ मात्रा भस्म मिला मधु में चाटे अथवा बाँसे का स्वरस ६ माशे मिला कर चाटना चाहियें। वीर्य्य विकार प्रमेह आदि में गिलोय के स्वरस माशे ६ मधु माशे ६ में मिला कर अथवा मधु में चाट ऊपर से सितावर का क्वाथ दूध मिश्री मिला कर पीना लाभदायक है त्रिदोश में अद्रक के स्वरस के साथ सेवन करना चाहिये। काम शक्ति वढ़ाने में रसायन और बल के लिये जायफल माशे २ मधु माशे २ घृत माशे ६ में मिलाकर चाटना ऊपर से दूध मिश्री मिला पीना हित कर है।

अभ्रक भस्म शतपुटी

मृताभ्रकं काम बलप्रदं च विषंमरुच्छ्वास भगंदराख्यम्।
मेहभ्रमं पित्तकफंचकासं क्षयंनिहन्त्येव यथानुपानात् १॥
निघन्टु, प्रकाश, योग, रसेन्द्र।

इस अभ्रक भस्म में शतपुट अर्थात् १०० पुट दिये जाते हैं और नं० १ की में सहस्रपुट अर्थात १००० पुट दिये जाते हैं। आयुर्वेद शास्त्र में लिखा है कि "दशादिस्तु शतान्तः स्यात्पुटो चेव्याधिनाशने। शतादिस्तु सहस्रान्तः पुटो देयो रसायने" दश से लेकर सौपर्यन्त व्याधि के नाश के लिये और सौसे लेकर हजार तक रसायन और गुणवृद्धि के लिये दिये जाते हैं अर्थात् जितने पुट दिये जाँय अभ्रक उतनाही प्रभावशाली होता जाता है ऐसा आयुर्वेद का मत है। इस से और अनुभव से जाना

जाता है कि हज़ार पुटी से १०० पुटी न्यून गुण वाला होता है। वाको सेवन विधि वही होती है किन्तु मात्रा उससे इसकी अधिक दी जाती है।

अभ्रक भस्म २५ पुटी

वयस्तम्भकारी जरामृत्युहारी बलारोग्यधारी महाकुष्ठहारी
मृतोऽयंरसः सर्वरोगेषु योज्यः सदासूतरा जस्यवीर्येणतुल्य :

भाव, योग, निघन्टु, प्रकाश, शार्ङ्ग, सुन्दर,
मणि, आयुर्वेद, रसेन्द्र;

उपरोक्त ग्रन्थों में १० पुट लगाने का विधान है किन्तु हमने अनेक वार अनुभव किया है कि १० पुट लगाने पर अभ्रक भस्म सेवन योग्य नहीं होती तथा वह गुण भी नहीं करती इस लिये तथा आयुर्वेद के इस मत सेभी कि जितने पुट दिये जायं अभ्रक उतनाही प्रभावशाली बनता है हम वैद्यों से २५ पुट ही देने का अनुरोध करेंगे और २५ पुट कीही अभ्रक व्यवहार करने की सम्मति देंगे। यह २५ पुटी भी साधारण ही गुण करती है पर जो चिकित्सक अधिक व्यय करना पसन्द नहीं करते उनके लिये तथा साधारण प्रयोगों में डालने के योग्य है सेवन विधि वही नं० १ के अनुसार है पर मात्रा इसकी अधिक दी जाती है।

मुक्ता भस्म नं० १

मौक्तिकं समधुरं सुशीतलं दृष्टिरोग शमनं विषापहम् ।
राजयक्ष्म परिकोपनाशनं क्षीणवीर्यवल पुष्टिवर्द्धनम् ॥

सुन्दर, निघन्टु ।

ज्वर, मोतीज्वर, कास, श्वास, अरुचि, दाह, प्रमेह, क्षयरोग रक्तपित्त, नेत्ररोग, हृदयकी निर्वलता, मस्तिष्क की निर्बलता फुंफड़े की निर्बलता, गर्भिणी बिकार, आँखों की जलन, चक्कर आना, पित्त ज्वर, और सुकुमार स्त्री बालकों को अति लाभदायक है। **मात्रा**—आधी रत्ती से २ रत्ती पर्य्यन्त। **अनुपान**—सर्व ज्वर में मधु के साथ कास, श्वास, क्षय, अरुचि दाह रक्त पित्त में सितोपलादिचूर्ण माशे १॥ मधु माशे ६ में मिला कर। सब प्रकार की निर्बलता में च्यवन प्राश्य माशे ६ में मिलाकर चाटना। ऊपर से मिश्री मिला दूध पिलाना हितकर है

मुक्ता भस्म नं० २

कफ पित्त क्षयध्वंसि कासस्वासाऽग्निमान्द्यजित् ।
पुष्टिदं वृष्य मायुष्यंदाहघ्नं मौक्तिकं मतम् ॥

धन्वन्तरि ।

मुक्ता भस्म नं० १ की कज्जली द्वारा रसराज सुन्दर, निघन्टु रत्नाकर के पाठानुसार बनाई जाती है और वह नं० २ की सिर्फ गुलाब जल में मर्दन कर भस्म बनाई जाती है इस लिये यह नं १ की से न्यून गुण वाली बनती है बाकी सेवन विधि अनुपान सब पूर्ववत ही हैं।

प्रवालभस्म

प्रवालंमधुरं साम्लं कफ पित्तादिदोषनुत्।
वीर्य काँतिकरं स्त्रीणांधृतेमंगल दायकम्॥
क्षय पित्तास्त्रकासघ्नं दीपनं पाचनंलघु।
विषभूतादिशमनं विद्रुमं नेत्ररोगहृत्॥

सुन्दर, निघन्टु,

प्रवाल भस्म, आज कल के वैद्य अनेक प्रकार से बनाते हैं और उनकी क्रियाओं के अनुसार इनके गुण में न्यूनाधिकता रहती है हमने सबही प्रकार की प्रवाल भस्म का अनुभव किया है और थोड़ा २ अन्तर गुणों में पाया यह सब यहाँ क्रम से लिख देते हैं।

नम्बर १—यह मूँगा साबूत जिनकी माला बनती है उनकी कज्जली द्वारा भस्म की जाती है वह गुण में सर्वोत्तम है किन्तु शीत वीर्य्य होते हुए भी शीतलता नहीं पहुंचाती और गरमी भी नहीं करती है। **व्यवहार विधि** एक रत्ती अथवा २ रत्ती प्रवाल भस्म नं० १ की ले उसमें पकी केला की फली १

मिला कर चाटने से धातुक्षय, वीर्य्य स्राव, स्वप्न दोष, मधुमेह में विशेष लाभ होता है और धातु वृद्धि तथा बल बढ़ाने के लिये—विदारीकंद का चूर्ण माशे १॥ में प्रवाल भस्म एक रत्ती अथवा २ रत्ती मिला कर फाँकने और ऊपर से मिश्री मिला दूध पीना श्रेष्ठ है कफ, खाँसी, श्वास, क्षयकी खाँसी में प्रवाल भस्म, सितोपलादि चूर्ण माशे १॥ मधु माशे ६ में मिलाकर चाटने से लाभ होता है। मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने के लिये बादाम पाक में मिलाकर खाने से अथवा मधु में चाट ऊपर से सारस्वतारिष्ट ६ माशे थोड़ा पानी मिलाकर पीने से लाभ होता है। अग्नि बढ़ाने या पाचन करने के लिये पीपल चूर्ण रत्ती २ में प्रवाल भस्म मिलाकर फाँकना ऊपर से गुन गुना जल पीना उत्तम है। ज्वर जीर्ण ज्वर में भो सितोपलादि चूर्ण में मिलाकर चाटना चाहिये।

नम्बर २—यह मूंगा साबूत को ग्वारपाठे के योग से बनाई जाती है। इस के गुण भी नं० १ के ही मुआफिक हैं पर नं १ की १० रोज में लाभ करेगी तो यह १५ दिन में लाभ करेगी सिर्फ इतनाही अन्तर है बाकी सेवन विधि वही है हाँ मात्रा इसकी १ रत्ती से ४ रत्ती तक है।

नम्बर ३ —(चन्द्रपुटी) मूंगा साबूत को गुलाब जल में मर्दन कर चन्द्रमा की चाँदनी में रख दिया जाता है इस तरह ७ दिन मर्दन होता है और चाँदनी में रक्खा जाता है। यह भस्म शीतल होती है मात्रा इस की १ से ४ रत्ती पर्यन्त है गुण अनुपान सब वही है।

नम्बर ४—नम्बर ५—नम्बर ६— यह तीनों प्रवाल साबूत की जगह प्रवाल की शाखाएं लेकर ऊपर की तीनों विधियों से भस्म की जाती है। मूंगा साबूत से शाखाएँ सस्ते भाव में मिलती है इस लिये अधिक तर वैद्य इनका ही व्यवहार करते हैं यह गुण में उनकी अपेक्षा न्यून गुण वाली है बाकी सेवन विधि मात्रा सब वहीं हैं।

शंख भस्म

शंख: क्षारो हिमोग्राही ग्रहणीरेचनाशनः।
नेत्रपुष्प हरोवर्ण्य स्तरुन्यपिटिका प्रणुत् १

सुन्दर, भैषज्य, मणि, भाव।

शङ्ख भस्म से ही सब प्रकार की शङ्खवटी बनाई जाती हैं। यह बात रसायन ग्रन्थों में प्रसिद्ध है। और इससे प्लीहा, मंदाग्नि उदर रोग अवश्य नष्ट होते हैं। और इसके अतिरिक्त ग्रहणी, मलावरोध, शूल, गुल्म, नेत्रपुष्प(आँख का फूला)को भी नष्ट करती है। **मात्रा**—इसकी २ रत्ती से ६ रत्ती तक है।

अनुपान—हिंग्वाष्टक चूर्ण माशे २ में १ मात्रा भस्म मिला गर्म जल के साथ फांकें। पित्त ग्रहणी और अम्लपित्त में मधु के साथ चाटें।

कपर्द [कौड़ी] भस्म

कपर्दिका हिमा नेत्रहिता स्फोटक्षयापहा।
कर्ण स्रावाग्निमान्द्यघ्नीपित्तास्र कफ नाशिनी॥१

प्रकाश, सुन्दर, निघन्टु।

यह बालकों के ज्वर कास श्वास अतिसार शूल दूध डालना अपान वायु की दुर्गन्धि नाशक है। तथा अम्लपित्त प्लीहा अफरा नेत्र रोग कर्णस्राव मंदाग्नि शिरशूल आदि रोगों में भी अति लाभदायक है **मात्रा**—१ रत्ती से ४ रत्ती पर्य्यन्त

अनुपान—बालकों को शहद के साथ अथवा माता के दूध के साथ—युवाओं के लिये त्रिकुटा माशे १ में एक मात्रा भस्म मिलाय शहद के साथ चाटना चाहिए। शिरदर्द में १ मात्रा भस्म खोवा (मावा) १ तोला में मिला कर खाना चाहिये खाने से ही शिरदर्द तत्काल बन्द हो जाता है। कान के रोगों में कान को साफ कर १ रत्ती उसमें सूखी डाल दें।

शुक्ति (मोती की सीप) भस्म

मुक्ता शुक्तिः कटुः स्निग्धा श्वासहृद्रोग हारिणी।
शूलप्रमथनी रुच्या मधुरा दीपनी परा॥ १॥

प्रकाश, सुन्दर, निघन्टु।

शुक्ति भस्म को अनेक वैद्य मुक्ता भस्म के अभाव में व्यवहार करते हैं। कारण यह मुक्ता भस्म से कुछ ही न्यून गुणवाली है। ज्वर, कास, श्वास, हृदयरोग, अरुचि, शूल निर्बलता, प्रमेह दाह, क्षय और नेत्र विकार के लिये अति उत्तम है। **मात्रा—** १ रत्ती से ३ रत्ती पर्य्यन्त। **अनुपान**-सितावर, असगंध हरड़, आमला समान भाग ले चूर्ण कर रखे **व्यवहार—**डेढ़ माशा अनुपान चूर्ण एक मात्रा भस्म शहद ६ माशे और घृत तीन माशे में मिला कर चाटना और ऊपर से मिश्री मिला दुग्ध पीना और शुक्तिभस्म एक मात्रा च्यवन प्राश्य एक तोला में मिला कर चाटने से मस्तक की निर्बलता दूर होती है।

मृग शृंग भस्म

पुट दग्धमश्म पिष्टम् हरिणविषाणांसर्पिषापिवत।
हृत्पृष्ठशूलमुपशममुपयात्यचिरेण कष्ट मपि॥ १॥
निघन्टु, भैषज्य, भाव।

पीनस, खाँसी, गले का दर्द, श्वास नली की सूजन हृदय की निर्बलता हृदय का शूल, कुक्षिशूल, श्वाँस, के लिये परम हितकारी है

मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती तक **अनुपान**-हृदय रोग, श्वास कास में च्यवनप्राश्य ६ माशे के साथ। पीनस, गले का दर्द, श्वास नली की सूजन आदि में सितोपलादि चूर्ण १॥ माशे के साथ अथवा कंटकारी अवलेह तोले १ के साथ।

गोदन्ती हरिताल भस्म

हरितालं कटुस्निग्धं ज्वरघ्नमग्नि दीपनम्।
हन्ति कुष्ठार्श रोगासृक् कफ पित्त मरुद्गणान्॥

सुन्दर रसायन।

यह भस्म ज्वर, विषमज्वर, शीतज्वर, (मलेरिया) अर्थात् पारी से आने वाला ज्वर के लिये अति लाभदायक है तथा अग्निदीपन कुष्ठ अर्श रक्तविकार को हितकारी है

मात्रा—आधी रत्ती से २ रत्ती तक। **अनुपान**—ज्वर के लिये प्रवालभस्म १ रत्ती में १ मात्रा इस भस्म की और ६ माशे शहद मिला कर प्रातः और इसी प्रकार सायंकाल के समय (ज्वर बढ़ने से १ घन्टे पूर्व) चाटनी चाहिये। पारी के ज्वर (मैलेरिया) में १ मात्रा प्रातः और १ मात्रा २ घन्टे पूर्व तथा १ मात्रा १ घन्टे पूर्व शहद माशे छः छ. में मिलाकर चाटनी चाहिये। कुष्ट, अर्श; रक्तविकार में घृत माशे २ मधु माशे ६ में १ मात्रा मिलाकर चाटनी चाहिये और ऊपर से मंजिष्ठादि क्वाथ अथवा अर्क पीना चाहिये।

तवकी हरिताल भस्म

गलित्कुष्ठं वातरक्तं ताम्र वर्णञ्च मंडलम् ।
शीत पित्तं महादद्रु च्छुन्दरं विनाशनम् ॥

भैषज्य,रत्नावली

तवकी अर्थात स्वर्ण पत्री हरिताल भस्म को तालभस्म, तालकेश्वर भी कहते हैं यह कुष्ट रोग की प्रधान औषधि है। कैसाही रक्त दोष हो इसके सेवन से नष्ट हो जाता है। गलित कुष्ट, श्वेत कुष्ट, वातरक्त, ताम्र के रंग के शरीर पर होने वाले चकते, शीत पित्त, दाद को नष्ट करने के लिये रामवाण औषधि है वैसे तो यह दमा, खाँसी, अपस्मार, शोथ ववासीर गृहणी प्रमेह मेद्-रोग में भी लाभदायक है। नासूर भगन्दर भी इसके २-३ महीने सेवन से नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ खदरारिष्ट, इन्द्रवारुणादि क्वाथ भी सेवन किया जाय तब हम दावा करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि कैसा ही और किसही कारण से रक्त का विकार फोड़ा फुन्सी घाव चकते खुजली हो अवश्य नष्ट हो जायंगे। एक वार हमारे अनुभव की परीक्षा करने का कष्ट अवश्य करें यही अनुरोध है। **सेवन विधि**-इसकी मात्रा आधी रत्ती से २ रत्ती तक है साधारणत. अनुपान ३ माशे घृत और ६ माशे शहत में १ मात्रा भस्म मिलाकर चाटें इस प्रकार प्रातः और सायं दो समय सेवन करें। यदि इसके साथ खदरारिष्ट इन्द्र वारुणादि क्वाथ भी लेना हो तब प्रातः

काल इन्द्र वारुणादि क्वाथ २ तोले ले पावभर पानी में औटावें और जब छटाँक भर रहे तब छान कर रखलें प्रथम १ मात्रा भस्म घृत शहत में चाट ऊपर से यह क्वाथ पीवें सायंकाल इसकी एक मात्रा घृत शहत में चाट ऊपर से खदरारिष्ट २ तोले पानी २ तोले मिलाकर पीवें। इससे दस्त होते हैं आँव निकलती है पेट में दर्द होता है उसकी चिन्ता न करें यदि यह बातें न हों तब भी चिन्ता न करें हाँ दस्त अधिक हों और सहन नहो सके तब क्वाथ तीसरे दिन लें बीच में १ दिन बन्द रक्खें। जिस रोज क्वाथ न लें उस दिन खदरारिष्ट ही दोनों समय ऊपर से पीवें।

रस माणिक्य

स्फुटितं गलितं कुष्ठं वातरक्तं भगन्दरम्।
नाड़ीव्रणं व्रणदुष्टमुपदंशंविचर्चिकाम्॥

भैषज्य,रत्नावली

यह भी तबकी (वर्की) हरिताल की भस्म है पर यह सिर्फ थोड़ी पकाई जाती है जब माणिक्य का रंग हो जाता है तब ही उतार ली जाती है इस से यह उपरोक्त हरिताल भस्म से बहुत कम गुणवाली है। बाकी गुण अनुपान मात्रा सब वही हरिताल भस्म के सामान हैं।

रस कपूर (कर्पूर रस)

(कर्पूर भाँड़ेश्वर)

भुक्तोहरतिफिरंगव्याधिसोपद्रवं घोरम्।
विद्दति वन्हे दीप्ति पुष्टि वीर्यबलं विपुलं॥
रमयति रमणी शतकं रसकर्पूरस्य सेवकः सततं।

रसराज सुन्दर

इसके १ रस कपूर २ कपूर रस ३ कपूर भाँड़ेश्वर, ४ श्वेत पारद भस्म यह चार नाम हैं। यह उपदंश (आतशक —चाँदी गरमी) की अव्यर्थ और प्रसिद्ध औषधि है। इसके द्वारा नष्ट हुआ उपदंश पुनः नहीं होता इसमें यह और विशेषता है साथ ही उपदंश के जितने उपद्रव हों वह सब इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं। अग्नि प्रवल होती है, देह पुष्ट होवे, अपार वीर्य हो, अनेक स्त्री सहवास की सामर्थ हो।

सेवन विधि—इसकी मात्रा बलवान को १ रत्ती से २ रत्ती तक निर्बल को आधी रत्ती देनी चाहिये। लौंग १ माशे, सफेद चन्दन १ माशे, कस्तूरी २ रत्ती, केशर ४ रत्ती सबको मर्दन कर उसमें १ मात्रा मिलाकर फाँके ऊपर से गुनगुना जल पीवें। इसके सेवन से काली पीली लाल सफेद रंग की आँव निकलती है दस्त होते हैं किन्तु बल नहीं घटता थोड़ी गरमी करती है इस लिये शरदऋतु में इसका खाना अधिक अच्छा है। पथ्य में दही भात का भोजन करे घी नहीं

खाना चाहिये निमक थोड़ा और सैंधा खाना चाहिये । गठिया,
कुष्ट, आम वात के लिये भी उत्तम है ।

वैक्रान्त भस्म

रसायनेषु सर्वेषु पूर्वगण्यः प्रतापवान् ।
वज्रस्थाने नियोक्तव्यो वैक्रान्तः सर्वदोषहा ॥

सुन्दर, समुच्च्य, रसेन्द्र ।

आयु,बल और वर्ण को बढ़ाने वाला,वाजी करण बुद्धि वर्धक
है । वात पित्तादि समस्त दोषों को दूर करने वाला है जठराग्नि
को बढ़ाने वाला है । हीरे के अभाव में भी प्रयोग किया जाता
है । रसायनों में श्रेष्ठ है । ज्वर, कुष्ट, क्षय, पाण्डु,उदररोग, श्वा-
स, खाँसी को नष्ट करने वाला है। **सेवन विधि**—वैक्रान्त
भस्म १ रत्ती स्वर्ण भस्म २ चावल पीपल छोटी २ रत्ती काली
मिर्च २ रत्ती मक्खन तोले १ में मिलाकर चाटने से राजयक्ष्मा,
पुराना ज्वर, पान्डु, अर्श, श्वास, खाँसी, कठिन संग्रहणी,
उरःक्षत और मुख के रोग दूर होते हैं । पारद भस्म १ तोला,
वैक्रान्त भस्म २ तोला अभ्रक भस्म ३ तोला तीनों को खरल
कर शीशी में रख ले और एक एक रत्ती प्रातः सायं घी माशे
३ शहत माशे ६ में मिलाकर चाटने से मनुष्य के सम्पूर्ण रोग
नष्ट कर देती हैं ऐसा लिखा है किन्तु हमारे अनुभव में एक
प्रकार यह ठीक है क्योंकि चाहें जिस रोग में निर्बलता हो

इस के सेवन से वह निर्वलता नष्ट होती है और रोग में भी लाभ होता है। ६१ दिन सेवन करने से बल अपूर्व बढ़ जाता है।

शंकर लोह भस्म

दुर्नामारिरयं नाम्नाद्दृष्टोवार सहस्रशः।
अनेनाशाँसि दह्यंते यथातूलंच वन्हिना॥
भाव प्रकाश

यह अर्श रोग की प्रधान और अव्यर्थ औषधि है। बिनाहार कर्म के केवल सेवन मात्र से अर्श को यही एक ऐसा औषधि है जो नष्ट कर सकती है। अर्श के साथ होने वाले नाना प्रकार के उपद्रव भी इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं। शास्त्रों में इसके इतने गुण लिखे हैं कि पाठक असम्भव समझेंगे हमने इसे अर्श रोग में ही विशेष अनुभव किया है और पाठकों सेभी अनुरोध करते हैं कि वह भी अनुभव करें इसके समान अर्श रोग में लाभ करने वाली दूसरी औषधि हमारी दृष्टि में नहीं आई। **सेवन विधि**—इसके सेवन से पूर्वअ पने इष्ट देव का स्मर्ण, पूजन, पाठ, करे तथा दान, धर्म; करे उसके पश्चात् १ रत्ती शंकर लोह भस्म में ३ माशे घृत और ६ माशे शहत-मिलाकर चाटे। ३ दिन चाटने के वाद इसकी मात्रा २ रत्ती करदे और पुनः तीन दिन चाट ३ रत्ती मात्रा करदे इस प्रकार १२ रत्ती तक इसकी मात्रा बढ़ादेनी चाहिये। फिर इसी क्रम से घटानी चाहिये। पथ्य में दूध ही सेवन करें। केवल

दूध से न रह सके तब हलके पदार्थ सेवन करे (शास्त्रों में स्निग्ध पदार्थों का उल्लेख है पर वह भारी होते हैं अतः वह पाचन नहीं होने से हानि करते हैं हाँ जिनकी अग्नि प्रबल हो वह सेवन कर सकते हैं।

अमृतीकरण भस्में

शास्त्रों में भस्मोंस्मि के अमृतीकरण करनें का विधान है। अमृती करण करने से भस्म में गुण बढ़ जाता है प्रभावशाली हो जाती है साथ ही उनको रंग परिवर्त्तन हो जाता है जो रंग का ख्याल नहीं करते तथा मूल्य और परिश्रम की चिन्ता नहीं करते वह अभ्रनक, लोह, ताम्र अमृतीकरण ही करके व्यवहार करते हैं हमारी सम्मति भी अमृती करण भस्में प्रयोग करने की है। अमृती करण करने से सेवन विधि में कुछ अन्तर नहीं आता यह पाठक ध्यान रक्खें।

रस, रसायन, गुटिका, गुग्गुल, पर्पटी,

आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र में रस, रसायन, गुटिका, गुग्गुल ,पर्पटी भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते है बिना इन के चिकित्सक का काम ही नहीं चलता। यह भिन्न २ ग्रन्थों में भिन्न २ प्रकार से वर्णित हैं तथा एक ही प्रयोग अनेक ग्रन्थों में मिलताहै कहीं२ पाठा फेर भी होताहैऔर कहीं पाठ ही दूसरा मिलताहैइस तरह एक ही नामके कई प्रयोग मिल जाते हैं जैसे मृत संजीवनी नाम से किसी ग्रन्थ में जो पाठ है दूसरे ग्रन्थ में

मृत संजीवनी के नाम से दूसरा ही पाठ है तीसरे में तीसरा ही तरह का, इस तरह मृत संजीवनी ५, ६ प्रकार की हो जाती है इसही तरह अन्य प्रयोग भी देखने में आते हैं। ऐसी दशा में चिकित्सक रोगी दोनों को भ्रम हो जाता है रोगी कहता है कि वैद्य जी मैंने यह सेवन करली है और वैद्य देखता है कि इसही की आवश्यकता है हमने इन सब बातों को बड़ी गम्भीरता से विचार किया है और जिस प्रयोग की सेवन विधि लिखी है और वह प्रयोग उसही पाठ से जिन २ ग्रन्थों में मिलता है उन २ ग्रन्थों के नाम प्रयोग के नीचे लिख दिये हैं जिससे वैद्य एवं रोगी भ्रम में न पड़े। जहाँ थोड़ा २ मतभेद देखा है वहाँ उत्तम पाठ वाले ग्रन्थ को मुख्य मान और शेषों के उसके साथ नाम लिखा दिये हैं और यह भी देख लिया है कि अनुपान मात्रा गुण में अन्तर न आने पावे। पाठक हमारे परिश्रम को इसके अनुसार व्यवहार कर सफल करेंगे ऐसी आशा है।

मृगांक पोटली रस

(स्वर्ण मोती की मिश्रित भस्म)

एकोनत्रिंशदथरोगगणान्निहन्ति।
यक्ष्माणमेव विनिहन्त्यति शोषमुग्रम्॥
नाम्नामृगाङ्क उदितः सकलामयघ्नः।
सेव्यो मुदा धनवता पुरुषेण नित्यम्॥१

मणि, सुन्दर, रसेन्द्र, योग, सुधाकर, निघन्टु, शार्ङ्ग, भैषज्य, बृहन्नि।

यह मृगाँक पोटली रस स्वर्ण और मोती की संयुक्त भस्म है। युक्त प्रदेश के धनाढ्यों में इसका व्यवहार अधिक होता है। यह जीर्ण ज्वर, विषमज्वर, राजयक्ष्मा सर्व प्रकार के कास मन्दाग्नि संग्रहणी और धातुक्षय में विशेष लाभ दायक है। किसी भी रोग से आई हुई दुर्बलता इसके सेवन से सर्वथा नष्ट होती है तथा रोगभी नष्ट होता है और रोग की पुनः उत्पत्ति नहीं होती। मात्रा दो चावल भर से १ रत्ती पर्यन्त, समय-प्रातः सायं। **अनुपान**—जीर्ण ज्वर,विषम ज्वर में ६४ पहरा पीपल १ रत्ती, मृगाङ्क एक मात्रा, दोनों को शहद में मिला कर चाटे। क्षय और कास में सितोपलादि चूर्ण १॥ माशे में एक मात्रा मिला शहद के साथ चाटे। मन्दाग्नि संग्रहणी में भाँग धुली एक रत्ती काली मिर्च १ रत्ती में एक मात्रा मृगाङ्क मिला शहद के साथ चाटे। धातुक्षय में गिलोय सत्व ४ रत्ती में एक मात्रा मिला शहद के साथ चाटे ऊपर से मिश्री मिला दूध पीवे।

वसन्त कुसुमाकर

वली पलितहृन्मेध्यः कामदः सुखदः सदा।
मेहघ्नः पुष्टिदः श्रेष्ठःपरं वृष्योरसायनम्॥
आयुर्वृद्धिकरंपुंसाँ प्रजा जननमुत्तमम्।
क्षय श्वासतृषोन्माद श्वास रक्त विषार्तिजित्॥१॥

रत्न, सुन्दर, रसेन्द्र, निघन्टु, योग,
वृहन्नि, भैषज्य, भाव,।

यह "बसन्तकुसुमाकर" प्रमेह बहुमूत्र, सुज़ाक, मूत्रनली का दर्द, पथरी, प्रदर, दुर्बलता, क्षय, कास, श्वास, ज्वर की सर्वोत्कृष्ट महौषधि है। इस रसायन के निरन्तर सेवन से आयु की वृद्धि होती है कामशक्ति प्रबल होती है उपद्रव सहित अनेक रोग नष्ट होते हैं बल बढ़ता है। स्त्रियों का बाँझपन नष्ट कर पुत्र देने वाला है और बिगड़ते हुए स्वास्थ्य को रोकने वाला है मधुमेह (डायबिटीज़) के लिये विशेष उपकारी है।

समय-प्रातः सायं या रात्रि को सोते समय। **मात्रा**-आधी रत्ती से दो रत्ती तक। **अनुपान**—प्रमेह में हल्दी १ रत्ती मधु ६ माशे घृत ३ माशे में १ मात्रा मिला कर चाटना ऊपर से दुग्ध पीना। बहुमूत्र में मधु माशे ६ में एक मात्रा मिला कर चाटना ऊपर से गूलर का क्वाथ पीना अथवा च्यवन प्राश्य माशे ६ में मिलाकर चाटना। सुज़ाक, मूत्रनली का दर्द, पथरी में मधु ६ माशे में १ मात्रा मिला कर चाटना ऊपर से पंचतृण पाषान भेद अमलतास का क्वाथ बनाकर पीना। प्रदर रोग में लोध १॥ माशे में १ मात्रा मिला फाँकना, ऊपर से अशोक का क्वाथ अथवा साठी चावल का धोना पानी। क्षय, कास, श्वास; में सितोपलादि चूर्ण १॥ माशे अथवा तालीसादि चूर्ण १॥ माशे में १ मात्रा मिला मधु के साथ चाटना और ऊपर से क्षीर पाक पीना। बाँझपन के लिये असगंध माशे २ पीपरी (जो पीपर वृक्ष पर लगती हैं) माशे २ में १ मात्रा मिला कर फाँकना ऊपर से दूध पीना। बल और रसायन के लिये—मधु में १

मात्रा मिला कर चाटना ऊपर से धारोष्णदुग्ध पीना। यदि धारोष्णदुग्ध न मिले तो औटा कर मिश्री डाल कर ही पीना। मधुमेह में केला की पकी फली १ में मिला कर चाटना।

स्वर्ण वसन्त मालती

(स्वर्ण मालती वसन्त)

जीर्णज्वरे धातुगतेऽतिसारे रक्तान्विते रक्तभवे विकारे।
घोर व्यथे पित्तभवे च दोषे वल्लद्वयंदुग्धयुतंच पथ्यम् ॥
वसन्तो मालिनी पूर्वः सर्व रोगहरः शिशोः।
सर्व ज्वर हरः श्रेष्ठो गर्भ पोषण उत्तमः ॥

योग, भैषज्य, सुन्दर, निघन्टु, वृहन्नि]

ज्वर, विषमज्वर, जीर्णज्वर, धातुगतज्वर, रक्तातिसार, रक्तविकार, पित्तविकार, दाह, प्रदर, बवासीर, मन्दाग्नि, नेत्ररोग, क्षय, कास, निर्बलता, मस्तिष्क शक्ति की न्यूनता (मगज का खालीपन) हृदय रोग, श्वासनली की सूजन, धातुक्षीणता, वीर्य्य का पतलापन, स्वप्न प्रमेह आदि रोग नष्ट होते है। जिन रोगियों को क्षयरोग से अथवा ज्वर रोग से अति निर्बलता होगई हो शरीर रक्त माँस से हीन अस्थिमात्र शेष रहगया हो अनेक औषधियाँ सेवन कर हताश होगए हों उनके लिये यह संजीवनी है। ऐसे रोगियों का रोग नष्ट हो शरीर हृष्ट पुष्ट होजाता है।

मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती पर्य्यन्त। समय—प्रात. सायं।

अनुपान—सितोपलादि चूर्ण माशे १॥ में एक मात्रा मालती-वसन्त और ६ माशे शहद मक्खन १ तोले मिलाकर चाटना ऊपर से गौ का अथवा बकरी का दूध औटाकर ठण्डा कर मिश्री मिलाकर पीवे, क्षयरोग कफ का गिरना, खाँसी का आना, श्वासनली की सूजन हाथ पैरों में जलन, ज्वर, जीर्णज्वर का रहना, निर्बलता, स्वर बैठ जाना, भूख न लगना आदि उपद्रव सहित क्षय रोग नष्ट हो शरीर बलवान होजाता है।

(२) पीपल छोटी १ माशे अथवा ६४ पहरा पीपल २ रत्ती में १ मात्रा मालती बसंत मिलाय शहद के साथ चाट ऊपर से दूध पीना इस प्रकार १ मास सेवन करने से रोगी का हृदय, फुफ्फुस शुद्ध होगा मस्तिष्क शक्ति की न्यूनता, आँखों की जलन, मस्तिष्क का दर्द नष्ट होगा।

(३) बालकों को सफेद मूसरी माशे ३ में १ मात्रा मालती वसंत मिला फाँक ऊपर से दूध पीने से वीर्य्य विकार दूर होते हैं, असगंध माशा १ में १ मात्रा मालती बसंत मिला मधु, घृतके साथ प्रातः सायं चटाने से बालकों का ज्वर, खाँसी दस्त, सूका आदि रोग नष्ट हो बालक हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं। मुलेहठी का चूर्ण माशे १ शहत माशे ६ गिलोइ का सत्व रत्ती ४ में एक मात्रा मालती वसंत को मिला चटाने से गर्भ काल के ज्वर में वड़ा लाभ होता है।

वृहत् कस्तूरी भैरव रस

कस्तूरीभैरवः ख्यातः सर्वज्वर विनाशनः।
त्रिदोषजनितेघोरे सन्निपाते सुदारुणे ॥

भैषज्य, रसेन्द्र, रत्न, सुन्दर।

इसके सेवन से विषमज्वर, द्वन्द्वजज्वर, भौतिक, कामादिजनित अभिघातज ज्वर, शुक्रस्थज्वर, सन्निपात, विशूचिका, प्लेग आदि रोग नष्ट होते हैं। तथा सन्निपात कीउस अवस्था में जब कि रोगी का शरीर शीतल पड़जाय नाड़ी की गति शिथिल पड़ जाय कफ का प्रकोप हो तब यह चमत्कारिक गुण करता है। मात्रा—१ वटी से ४ वटी पर्य्यन्त। समय प्रातः व सायं व आवश्यक समय पर। **अनुपान**— अद्रक का स्वरस ६ माशे अथवा पान का स्वरस ६ माशे में १ मात्रा मिला चटाना चाहिये। रोग की भयंकर अवस्था में,शीत प्रकोप में,मृत संजीवनी सुरा माशे ६ में १ मात्रा मिला पिलानी चाहिये तथा जबतक दशा न सुधरे प्रति तीन घन्टे बाद एक एक मात्रा देते रहना चाहिये।

कस्तूरी भैरव रस

रक्तिद्वयंततः खादेद् सन्निपाते सुदारुणे।
आर्द्रकस्य रसैः पेयो विषमज्वर नाशनः॥

भैषज्य, रसेन्द्र सुन्दर।

उल्लिखित "वृहत् कस्तूरी भैरव रस" में स्वर्ण, रौप्य,

मुक्ता प्रवाल, लोह, आदि बहुमूल्यवान् औषधियाँ भी पड़ती हैं पर इसमें यह नहीं पड़तीं। इसमें कस्तूरी हिंगुल वच्छनाग वगैरह पड़ते हैं। इससे यह कुछ न्यून गुण वाला है। मात्रा, समय, व्यवहार, अनुपान सब पूर्ववत् हैं।

कस्तूरी भूषण रस

वातश्लेष्मणिमन्देऽग्नौ पित्तश्लेष्माधिकेऽपिच ।
त्रिदोषजनिते घोरे कासे श्वासे क्षये तथा ॥

भैषज्य रत्नावली ।

बात, कफ, ज्वर, पित्त कफ ज्वर, घोर सन्निपात, कास, श्वास, शोथ, विषमज्वर, प्लेग, विशूचिका आदि रोगों में अति लाभदायक है। मात्रा १ बटी से २ तक। **अनुपान**-अद्रक का स्वरस माशे ६ में १ मात्रा मिला कर चटावें।

स्वर्ण-पर्पटी

ग्रहणी विविधांहन्ति शूलमष्टविधंतथा ।
सर्व्वज्वरहरो वृष्या मान्नेयं स्वर्ण पर्पटी ॥

निघण्टु, वृहन्नि रसेन्द्र, सुन्दर, योग, भैषज्य ।

स्वर्ण पर्पटी—मंदाग्नि, संग्रहणी, ज्वर की प्रधान तथा चमत्कारिक और प्रसिद्ध औषधि है। जब किसी प्रकार का

अन्तड़ियों में विकार हो और अन्न न पचने से ज्वर दस्त या मलावरोध, हो शोथ संयुक्त संग्रहणी हो तथा, क्षय, कास, अमल-पित्त हो तब इसके व्यवहार से बड़ा लाभ होता है। जिस संग्रहणी में अनेक उपद्रव हों रोगी बलहीन होगया हो, या अनेक औषधि सेवन कर निरास होगया हो तब इसके सेवन से रोग नष्ट हो रोगी बलवान और हृष्ट पुष्ट हो जाता है। स्वर्ण पर्पटी-पारद गंधक स्वर्ण द्वारा बनती है और इनमें पारद मुख्य वस्तु है। शास्त्रों में पर्पटी के लिये पारद के शोधन के विशेष नियम हैं। उन विशेष नियमों से ही पारद का शोधन कर पर्पटी बनानी चाहिये। इस शोधन से पारद के अग्नि दोष, मल दोष, पृथ्वी दोषादि नष्ट हो जाते हैं तथा उस में अनेक गुण बढ़ जाते हैं। आज कल अनेक वैद्य हिंगुलोत्थ पारद से ही पर्पटी बना लेते हैं उसमें मलादि दोष रहने से वह यथेष्टगुण नहीं करती फिर भी हम इसमें सबही प्रकार की पर्पटी के गुणदोष अनुपान लिखेंगे साथ ही विशेष शुद्ध पारद की पर्पटी को नम्बर १ और हिंगुलोत्थ पारद की पर्पटी को नं० २ कहेंगे। **व्यवहार**—इसकी मात्रा १ रत्ती से ६ रत्ती तक है पर प्रथम १ रत्ती से आरम्भ कर ६ रत्ती तक क्रमशः एक एक रत्ती अथवा आधी आधी रत्ती बढ़ाकर ६ रत्ती तक करनी चाहिये। समय—प्रातः और सायं। **अनुपान**—प्रथम सब प्रकार की पर्पटियों को खरल में अच्छी तरह घोट लें फिर उस में अनुपान मिला सेवन करनी चाहिये। ज़ीरा सफेद का चूर्ण माशे १ में १ मात्रा पर्पटी और ६ माशे शहत मिला कर चाटने से सब प्रकार की ग्रहणी को

लाभ होता है। जीरा सफेद का चूर्ण माशे २ हींग भुनी आधी, रत्ती में १ मात्रा पर्पटी मिला गुनगुने जल के साथ फांकने से शूल मन्दाग्नि नष्ट होती है। संग्रहणी में इसके सेवन काल में, लवण, अन्न, जल छोड़ दूध मात्र सेवन करने और पर्पटी की मात्रा क्रमशः बढ़ा कर ६ रत्ती की करलेने और उस पूर्ण मात्रा को २१ दिन ही सेवन करने के पश्चात् क्रमशः मात्रा घटाने इस प्रकार ४१—५१ दिन सेवन करने से ग्रहणी में बड़ा लाभ होता है। इस विधि से पर्पटी सेवन करा हमने अनेक कष्ट साध्य रोग मुक्त किये हैं। परीक्षा प्रार्थनीय है।

रस पर्पटी

अर्शो रोगं ग्रहणीं सामां शूलातिसारौच।
कामला पाण्डु व्याधिं प्लीहानञ्च दारुणं हन्ति॥

रसेन्द्र, चक्र, योग, बृहन्नि, सुन्दर,
भैषज्य, निघन्टु, भाव।

उल्लिखित स्वर्ण पर्पटी में और इसमें सिर्फ यही अन्तर है कि स्वर्ण पर्पटी में स्वर्ण, विशेष शुद्ध पारद, गंधक तीनों वस्तु डाली जाती हैं और इसमें विशेष शुद्ध पारद और गंधक तीनों वस्तु डाली जाती है स्वर्ण नहीं डाला जाता। इससे स्वर्ण पर्पटी बल अधिक लाती है। और यह रस पर्पटी रोग नाशक ही है बल कारक नहीं। बाकी मात्रा, समय, अनुपान सब स्वर्ण पर्पटी के समान ही हैं।

पंचामृत पर्पटी

नानावर्णग्रहमरुचि समुदये दुष्ट दुर्नामकादौ ।
छर्दां दीर्घातिसारे ज्वरभवकालते रक्तपित्तक्षयेऽपि ॥
तृष्याणाँ वृष्यराशी बलिपञ्जित हर नेत्र रोगैक हन्त्री ।
तुन्दं दीप्तं स्थिराग्नि पुनरपि नवकं रोगिदेहंकरोति १

रसेन्द्र, बृहन्नि, रसायन, योग, रत्न, सुन्दर ।

पञ्चामृत पर्पटी—ग्रहणी, मन्दाग्नि की प्रसिद्ध महौषधि है तथा इसके साथ होने वाले यकृत, शूल, अम्लपित्त, ज्वर उदर कास,श्वास, पाण्डु आदि रोग भी इसके सेवन से दूर होते हैं। यदि इस प्रयोग के सेवन के समय सद्वैद्य की सम्मति से अन्न जल बन्द कर ४१ दिन तक ही सेवन किया जाय तो रोगी काल के मुख से भी बच जाता है। समय—प्रातः सायं । **मात्रा**—१ रत्ती से १ माशे पर्य्यन्त । **अनुपान**—मन्दाग्नि संग्रहणी में हींग भुनी आधी रत्ती, जीरासफेद १ माशे, सेंधा-नमक ४ रत्ती में १ मात्रा मिला कर फांके ऊपर से गौ का तक्र (मठा) लवण, मिर्च, जीरा भुना डाल कर पीवे । यकृत शूल उदर रोग में कुमारी का रस एक तोला,शहद ६ माशे में १ मात्रा मिलाय चटाना । पाण्डु रोग में त्रिफला मासे ३ मधु मासे ६ में १ मात्रा मिला कर चटाना । कृमिरोग में बायविडंग माशे १ मधु माशे ६ में १ मात्रा मिला कर चाटना । कास श्वास ज्वर अमलपित्त में मधु के साथ । क्षय की उस अवस्था में जब कि दस्त पतला हो भूक कम हो अन्न हजम ... हो तब

लवंगादि चूर्ण माशे १॥ में १ मात्रा पंचामृत पर्पटी की मिला मधु के साथ चाटने से विशेष लाभ होता है।

लोह पर्पटी

सूतिकांच ज्वरां चैव ग्रहणी हन्ति दुस्तराम।
आमशूलांतिसारंच पांडुरोगं सकामलाम् १॥

सुन्दर, भैषज्य, रत्न, रसेन्द्र।

लोह पर्पटी—ग्रहणी के साथ में होने वाले पाण्डु, कामला, तिल्ली, अर्श, यकृत, उदर, आमशूल, मन्दाग्नि के लिये उत्तम है।
व्यवहार—इस की मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती पर्यन्त।
अनुपान—इसकी एक मात्रा मधु माशे ६ में मिलाकर चाटें ऊपर से धनियाँ १ तोले, जीरा सफेद १ तोले कुचल कर पावभर पानी में औटावें जब छटाँक भर पानी शेष रहे तब छान कर पीवें।

वृहत् क्रव्यादि रस

गुरूणिमाँसानि पयांसि पिष्टीकृतानिसेव्यानि फलानिचैव।
मात्रातिरिक्तान्यपिसेवितानि यामद्वयाज्जारयति प्रसिद्ध॥

भैषज्य रसेंद्र, कलिका, भाव, सुन्दर, योग, वृहन्नि,
समुच्चय, रस निघन्टु, मणि।

क्रव्यादि रस—अजीर्ण मंदाग्नि, अम्लपित्त, शूल, उदर, अफरा आदि रोगों के लिये सर्वोत्तम औषधि है। प्रबल विसू-

चिका में प्रारम्भ से इसका व्यवहार करने से रोगी अवश्य निरोग होजाता है। मंदाग्नि के कारण जिनको सदैव मलावरोध रहता है उनके लिये बड़ी लाभप्रद महौषधि है। भारी, मांस, पिट्ठी के पदार्थ, आदि के सेवन से अथवा बहुत अधिक भोजन करने से हुए प्रबल अजीर्ण को २ पहर में पचा कर पुनः क्षुधा लगाने वाली प्रसिद्ध औषधि है। जहाँ विशूचिका (हैजा) फैल रहा हो वहाँ भोजनोपरान्त एक एक मात्रा लेने से विशूचिका का भय नहीं रहता। सेवनविधि—इसकी मात्रा २ रत्ती से १ माशे पर्यन्त। **अनुपान**—साधारणावस्था में १ मात्रा फाँक ऊपर से जल गुनगुना पीना चाहिये। पुराने रोगों में १ मात्रा फाँक ऊपर से तक्र (मठा) में सेंधो निमक, कालीमिर्च, जीरा भुनाडाल कर पीना चाहिये। मलावरोध यदि पुराना हो तब १ मात्रा फाँक ऊपर से मठा में काला निमक डालकर पीना चाहिये।

प्राणेश्वर रस।

प्राणेश्वर रसोनाम सन्निपातं नियच्छति।
शीत ज्वर दाह पूर्वं गुल्म शूले त्रिदोषजे ॥१

सुन्दर, रसेन्द्र, भैषज्य,।

ज्वर, सन्निपात, दाह पूर्वक शीत ज्वर, शूलः मंदाग्नि के लिये प्रसिद्ध है। ज्वर की उस अवस्था में जब कि रोगी को दस्त साफ न होता हो पेट भारी हो शूल हो उस समय अति

लाभ दायक है **मात्रा**—१ रत्ती से २ रत्ती पर्य्यन्त। समय-प्रात: सायं या आवश्यक समय पर। **अनुपान**—उष्ण जल (गरमपानी) अथवा अद्रक का स्वरस माशे ६। सन्निपात में मृतसँजीवनी सुरा माशे ६ के साथ।

चौंसठ पहरा पीपल

कासं श्वासं महाघोरं विषमाख्यं ज्वरं वमिम्।
धातुस्थं प्रबलं दाहं ज्वरदोषं चिरोद्भवम्॥ १॥

धन्वन्तरि।

चौशठ पहरा पीपल—निरन्तर ६४ पहर विना एक मिनट के रुके दिनरात्रि बराबर मर्दन कर बनाई जाती है वही सर्वोत्तम होती है। हमने देखा है कि अनेक वैद्य ६४ पहर घुट जानी चाहिये इस मत के अनुसार अवकाश के समय घोटकर बना लेते हैं वह समुचित लाभ नही करती कारण घोटने से जो ऊष्मा उत्पन्न होती है वह शान्त हो जाती है इस से गुण में वृद्धि नहीं होने पाती हमने दोनों रीति से बना तथा प्रयोग कर अनुभव कर लिया है जो विना रुके निरन्तर रात्ति दिन ६४ पहर घोटी जाती है वही विशेष गुण करती है वही ६४ पहरा पीपल कहलाने योग्य है हम यहाँ उस का ही गुण अनुमान लिखते हैं।

यह ६४ पहरा पीपल पुरानी खाँसी, श्वास, में तथा क्षय और जीर्ण, विषम-ज्वर में विशेष लाभप्रद है। सीने की बीमारियों में इसका चमित्कारिक गुण देखा गया है। अस्थिगत, मज्जागत, ज्वर को यह निकालने में एक ही औषधि है। बसंत मालती के साथ व्यवहार करने से विशेष लाभ होता है।

अनुपान—इस की मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती तक शहत माशे ६ में मिलाकर चाटना चाहिये। मालती बसंत १ रत्ती ६४ पहरा पीपल १ रत्ती शहत मिला कर चटाने से जीर्ण रोगी निरोग हो जाते है। सितोपलादि चूर्ण माशे १ में १ मात्रा ६४ पहरा पीपल मिलाकर शहत के साथ चटाने से पुरानी खाँसी श्वास, कफ को बड़ा लाभ होता है।

चन्द्रप्रभा वटी

चन्द्रप्रभेति विख्याता सर्व रोग प्रणाशिनी।
निहन्ति विंशति मेंहान् कृच्छ्रमष्टविधंतथा॥
चतस्रश्चाश्मरीस्तद्वन्मूत्राघातां स्त्रयोदश।
अण्डवृद्धि पाण्डुरोगं कामलाञ्चहलीमकम्॥ १॥
शार्ङ्ग, भाव, भैषज्य।

चन्द्रप्रभा—जिस प्रकार चंद्रमा की प्रभा संसार के अन्धकार को नाश कर चाँदनी (प्रकाश) फैलाती है उसी प्रकार चद्रप्रभा समस्त वीर्य्य विकारों को नष्ट कर कीर्ति प्रकाशित

करता है। इसके सेवन से पेशाब की जलन मूत्र के साथ या स्वप्न अवस्था में वीर्य्य का जाना वार २ पेशाव का होना पथरी, सुज़ाक, मूत्रकृच्छ्र,बीस प्रकार के प्रमेह, मूत्र की जलन, मूत्रमार्ग से रक्त का श्राव, कामला, पाण्डु, अर्श, मंदाग्नि, अण्डवृद्धि, रक्तविकार, मलावरोध, शरीर का दर्द आदि नष्ट हो शरीर बलवान होता है। **समय** प्रातः सायं वा रात्रि को सोते समय।

मात्रा—१ वटी से ४ गोली पर्य्यन्त। **अनुपान**—वीर्य्य विकार, अर्श, मलावरोध, शरीर का दर्द, अण्ड वृद्धि, में गोली निगल ऊपर से मिश्री मिला हुआ दूध पीना अथवा जलपीना, मूत्रकृच्छ्र, सुज़ाक, पाण्डु, कामला, रक्तश्राव, मूत्र की जलन पथरी आदि में गोली निगल ऊपर से २ तोला गिलोय का स्वरस, ६ माशे शहद मिलाकर पीवें।

मृत्युञ्जय रस

नव ज्वरं द्वन्दजं वा सन्निपातं च दारुणम्।
मृत्यु रूपं ज्वरं हन्ति तेन मृत्युञ्जयस्स्मृतः॥ १
भाव, रसेन्द्र,।

मृत्युञ्जय रस ज्वर, वातज्वर, द्वन्दज ज्वर,सन्निपात विषम ज्वर, अजीर्णज्वर, नवीन ज्वर आदि सब प्रकार के ज्वर के लिये तत्काल लाभदायक महौषधि है। **मात्रा**—१ वटी से २ वटी

पर्य्यन्त समय-प्रातः सायं या वेग के पूर्व । **अनुपान**- द्वन्द्वज और सन्निपात ज्वर में अद्रक का स्वरस मासे ६ में एक मात्रा मिला चटाना, वात ज्वर में पान के स्वरस माशे ६ में १ मात्रा मिला चटाना , अजीर्ण ज्वर में जम्भीरी के रस में निमक मिला गोली के ऊपर पिलाना; नवीन ज्वर में मधु के साथ, चटाना चाहिये ।

संजीवनी रस

एकामजीर्णयुक्तस्य द्वेविषूच्यां प्रदापयेत् ।
त्रिस्रे भुजङ्ग दंष्टस्य चतस्रःसन्निपातिके ॥
गुटिका जीवनी नाम्ना संजीवयति मानवम् ॥१॥

सुन्दर, भैषज्य, योग, मणि ।

अजीर्ण, अतिसार, विशूचिका, शूल, अफरा, सर्प बिच्छू आदि का विष अजीर्णज्वर, सन्निपात ज्वर, इन सब को नाश करने वाला है। **मात्रा**—एक गोली से चार गोली तक, एक दिन में १० गोली से अधिक नही। समय प्रात: सायं और आवश्यक समय हर तथा सन्निपात और विसूचिका में दो २ तीन तीन घंटा पीछे देना योग्य है। **अनुपान**—गर्म जलके साथ निगले अथवा अद्रक का स्वरस मासे ६ या मृत सञ्जीवनी सुरा माशे ६ में मिलाकर चाटें।

आनन्द भैरव रस नं० 1

कास श्वासातिसारेषु ग्रहण्याँ सन्निपातिके।
गुञ्ज मात्रः प्रदातव्यो रस आनन्द भैरवः॥ १

मणि, सुन्दर, शार्ङ्ग।

आनन्दभैरव रस—कास, श्वास, अतिसार, ग्रहणी, सन्निपात के लिये प्रसिद्ध औषधि हैं। सन्निपात में जब दस्त होते हों उस समय देने से विशेष लाभ होता है। **मात्रा**—१ गोली से ३ गोली पर्य्यन्त। समय प्रातःसायं। **अनुपान** अतिसार में इन्द्रजौ माशे १॥ कुड़ा की छाल माशे १॥ इन दोनों का चूर्ण कर उसमें एक मात्रा रस मिला सहत के साथ चटावें अथवा शीतल जल के साथ फकावें। कास श्वास में शहत के साथ चटावें; सन्निपात में अद्रक के स्वरस माशे ६ में एक मात्रा मिला चटावें।

आनन्द भैरव रस नं० २

सन्निपात ज्वरं हन्ति वटिकानन्द भैरवी।

भैषज्य, सुन्दर, रसेन्द्र

आनन्द भैरव रस यह सन्निपात ज्वर (मैलेरिया) कफ़ ज्वर आदि आठ प्रकार के ज्वर उपद्रव सहित नष्ट करता है। सन्निपात (त्रिदोष) की यह प्रधान औषधिहै ।

अनुपान—आक (अर्क मूल) की जड़ का क्वाथ बना इसमें १ माशे त्रिकुटा मिलाकर, गोली के ऊपर पीने से घोर सन्निपात नष्ट हो जाता है। धनियाँ, पीपल, सोंठ, कुटकी, कटेरी की जड़, इनका क्वाथ बना १ माशे पीपल का चूर्ण डाल कर पीने से शीताङ्ग सन्निपात सामान्य त्रिदोष ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

मात्रा एक एक वटी। समय प्रातः सायं।

महा ज्वरांकुश रस

महा ज्वरांकुशो नाम ज्वराष्टकनिसूदनः ॥
विषमं च त्रिदोषोत्थं हन्ति सर्वं न संशयः ॥ २

रसेन्द्र, बृहन्नि, योग, भैषज्य।

महाज्वरांकुश—मलेरिया ज्वर (यानी ठण्ड लगकर पारी से आने वाला ज्वर) के वेग को रोकने के लिये कुनैन से भी अधिक लाभकारी है। तथा विषम ज्वर (पुराने ज्वर) के वेग को रोकने में भी विशेष काम देता है। त्रिदोष ज्वर की प्रथमावस्थामें भी लाभप्रद है। **व्यवहार**—प्रातः और जूड़ी आने से एक घण्टा पूर्व एक २ वटी तुलसीपत्र ५ कालीमिर्च ५ जीरा काला माशे २, दो तोले पानी में पीस और गरम कर ऊपर से पिलावें। अथवा सोंठ माशे २ काला नमक माशे १ को एक छटाँक पानी में पीस और गरम कर गोली खाकर ऊपर

से पीना। चढ़े हुए बुखार में इस रस का प्रयोग नहीं करना चाहिए। त्रिदोष में अद्रक स्वरस माशे ६ में मिलाकर चटावें। **मात्रा** १ गोली से ३ गोली पर्यन्त।

वृहच्छंख वटी

सर्वाजीर्ण प्रशमनी सर्व शूल निवारिणी।
विशूच्यलसकादीनाँ सद्यो भवति नाशनी ॥१॥

भाव, वृहन्नि, सुन्दर।

वृहत् संखवटी अजीर्ण-उल्टी (वमन) जी मिचलाना, पेट का दर्द, अफरा, मंदाग्नि, विशूचिका, अरुचि, गुल्म, शूल, परिणामशूल आदि पाचन क्रिया के सब विकारों के लिये प्रसिद्ध महौषधि है। अम्लपित्त के कारण छाती में या गले में जलन हो तो उसको मिटाने के लिये अति लाभदायक है। **अनुपान**— गरमपानी अथवा ताजी पानी के साथ। समय—प्रातः सायं अथवा भोजनोपराँत। **मात्रा**—१ वटी से ३ वटी पर्य्यन्त।

शंख वटी

सर्वोदरेषु शूलेषु विशूच्याँ विविधेषुच।
अग्निमान्द्येषु गुल्मेषु सदा शंखवटी हिता ॥१॥

सुन्दर, भैषज्य योग, मणि।

यह वृहत् शंख वटी से कुछ ही न्यून गुण वाली है। बाकी अनुपान मात्रा समय व्यवहार सब पूर्ववत् ही हैं।

गन्धक वटी।

चणक प्रमितां कुर्याद् वटिकां रुचिदायिनीम्।
भोजनान्ते सदा देया गन्धकाख्या वटी शुभा ॥१॥

धन्वन्तरि।

गन्धकवटी—अजीर्ण, अरुचि, पेटका शूल, मलावरोध, अफरा के लिये सर्वोत्तम है। ज्वर के चले जाने पश्चात् अनेक रोगियों को अरुचि हो जाती है। उस समय देने से बड़ा लाभ होता है। **अनुपान**—जल गरम अथवा ठंडा। समय—भोजनोपरांत। **मात्रा**—१ दिन में २ गोली से ७ गोली पर्य्यन्त। टिप्पणी—अरुचि में भोजन के पूर्व ठण्डे जल से लें। बाकी अजीर्ण, शूल, मलावरोध, अफरा में गरम जल से भोजन के पश्चात्।

सप्त धातु मिश्रित

बृहत् योगराज गुग्गल

गुग्गुलु योगराजोऽयम् त्रिदोषघ्नोरसायनः
मैथुनाहार पानानां त्यागोनैवात्र विद्यते ॥ १ ॥
सर्वान्वातमयान्कुष्ठानर्शांसि ग्रहणी गदम्।
मन्दाग्नि श्वास कासांश्च नाशयेदरुचिं तथा ॥ २ ॥

शार्ङ्ग, बृहन्नि।

बृहत् योगराज गुग्गुल—इसमें रस सिंदूर, रौप्यभस्म, अभ्रक भस्म, लोहभस्म, नागभस्म, बङ्गभस्म, मांडूर आदि उत्तमोत्तम औषधियाँ डाली जाती हैं। यह लघु योगराज गूगल से विशेष लाभप्रद हैं। तथा वातरोग की प्रसिद्ध और चमत्कारक महौषधि है। इसके सेवन से सब प्रकार के वायुरोग जैसे सन्धिवायु, सर्वाङ्ग वायु (लकवा) अर्धाङ्गवायु अर्दितवायु और पाँडु, मेद रोग वातरक्त, संधिशूल, सूजन, गण्डमाला, विषरोग नाडीव्रण प्रदर प्रमेह, स्त्रियों का ऋतुदोष पुरुषों का वीर्य्यदोष, उदरवायु आदि में अति लाभदायक है। जठराग्नि को बलवान बना और अपानवायु को शुद्ध कर दस्त साफ लाती है। यह गर्भ स्थान की वायु और सूजन को भी दूर करने को उत्तम है। वायु और मेद से फूले स्त्री पुरुष के मेद को घटाती है, स्त्रियों का वन्ध्यादोष दूर कर गर्भ देने वाली है। **अनुपान**-प्रमेह प्रदर तथा रज और वीर्य्य दोष, मेदरोग, मंदाग्नि, मलावरोध, में गरम किया हुआ मिश्री मिला दूध ऊपर से पीना। गर्भ स्थान की वायु और सूजन गंडमाला में दशमूल का क्वाथ गोली के ऊपर पीना। वातव्याधि में तथा आमवात में रास्नादि क्वाथ अथवा गरम जल गोली के ऊपर पीना चाहिये।

मात्रा—१ वटी से ३ वटी पर्य्यन्त। समय-प्रातः सायं।

टिप्पणी—सेवन काल में नारायणतैल अथवा सोम के तेल की मालिश (मर्दन) करना श्रेष्ठ है।

योगराज गुग्गुलु

सर्वान्वातमयान् कुष्ठानर्शों संग्रहणीगदम् ।
प्रमेहं वातरक्तञ्च नाभिशूलं भगन्दरम् ॥ १ ॥
निहन्ति च गदान् सर्वान् दुर्वाराश्चात्र संशयः ।
अस्मिन्न परिहारस्तु पान भोजन मैथुनम् ॥ २ ॥

भषि, गद ।

बृहत् योगराज गुग्गुलु में रौप्य, अभ्रक लोह रससिन्दूर आदि सात धातु पड़ती हैं और इसमें नहीं । इससे ही यह लघु कहलाता है तथा गुण में भी बृहत् से न्यून गुण वाला है । फिर भी वातव्याधि की उत्तम और प्रसिद्ध औषधि है । मात्रा अनुपान व्यवहार आदि बृहत् योगराजवत् ही हैं ।

पुटपक्व

विषमज्वरान्तक लोह

ज्वरमष्टविधं हन्ति वातपित्तकफोद्भवम् ।
प्लीहानं यकृतं गुल्मं साध्यासाध्यमथापिवा ॥
सन्ततं सततान्यञ्च विषमज्वरनाशनम् ।
कामलां पाण्डुरोगञ्च शोथं मेदमरोचकम् ॥

भैषज्य, सुन्दर, रसेन्द्र।

पुटपक्व विषमज्वरान्तक लौह-इसके सेवन से वातिक, पैत्तिक और श्लेष्मिकादि अष्टविध ज्वर, सन्तत, सतत, त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वर प्लीहा, यकृत, रोग गुल्म कामला पाण्ड सूजन, प्रमेह अरुचि, संग्रहणी, आमाशयगत रोग, कास श्वास मूत्र कृच्छ्र और अतिसार आदि विकार नष्ट हो जाते हैं। बल बढ़ता है। हमारा यह विशेष अनुभव है कि जिस विषम ज्वर के साथ निर्बलता, प्लीहा, यकृत, कास आदि विकार हों उस विषमज्वर में बड़ा ही चमत्कारक फल मिलता है **अनुपान**—पीपल छोटी माशे ६ हींग भुनी माशे २॥ सेंधा निमक माशे ३ तीनों को कपड़ छन कर रखले। **व्यवहार**—एक मात्रा रस और एक माशे अनुपान चूर्ण दोनों मिला कर फाँकना ऊपर से अष्टादशा-ङ्गाद्यादि क्वाथ का अर्क खींच कर २॥ तोला पिलाया जाय तो विशेष लाभ होता है। रस की मात्रा एक रत्ती से ३ रत्ती पर्य्यन्त।

विषमज्वरान्तक लौह

मोहाग्निसाद दौर्बल्य यकृच्छोथ समन्वितान्।
सर्व्वान् ज्वरान् निहन्त्येव भास्करस्तिमिरंयथा॥

भैषज्य,

विषमज्वरान्तक लौह—यह विषमज्वर और इस के साथ होने वाले यकृत प्लीहा शोथ कास आदि उपद्रव को नष्ट करता है विषमज्वर के वेग को रोकने के लिये विशेष उपयोगी है

व्यवहार—पुराने ज्वर (विषमज्वर) में जब वेग रोकना हो तब एक गोली प्रातः और एक गोली वेग के १ घन्टे पूर्व निगलवाकर ऊपर से चिरायता तोले १ का क्वाथ* बना कर पिलावें अथवा यवतिक्ता (कल्पनाथ) माशे ६ पानी १ छटाँक में पीस छान और गरम कर पिलावें अथवा सुदर्शन अर्क २॥ तोले पिलावें। जिस विषमज्वर के साथ यकृत प्लीहा आदि उपद्रव भी हों उसमें एक गोली प्रातः १ गोली सायं काल, निगलवा कर ऊपर से अमृतारिष्ट २ तोले पिलावें अथवा चिरायते का क्वाथ।

विषमुष्टिका

अजीर्णं मन्दतामग्निं शूलमष्टविधंतथा।
बिशूचीं वायुरोगंच नाशयति विषमुष्टिका ॥१

धनौषधि०।

विषमुष्टिका—अजीर्ण, मन्दाग्नि; वातशूल, गुल्म, ज्वर रोग के लिये उत्तम है। विशूचिका में जब पेट शूल हो और अनेक औषधियों से शान्त न हुआ हो तब यह तत्काल शान्त कर देता है। **अनुपान**—गरम जल। **मात्रा**—एक वटी से ३ वटी पर्य्यन्त समय-प्रायः सायं या भोजनोपरांत तथा शूल के

---

*चिरायता २ तोला ले यवकुट कर पाव भर पानी में औटाना (उबालना) जब चतुर्थांश शेष रहे तब छान कर पिलाना

समय। एक मात्रा से जब शूल शान्ति न हो तब १ घण्टे बाद पुनः १ मात्रा देनी चाहिये।

समीरगज केशरी

कुब्जे च खजवाते च सर्वजे गृध्रसीग्रहे।
अपबाहौ प्रयोक्तव्यः शोफे कम्पे प्रतानके॥
विशूच्यामश्चचौवेयमपस्मारे विशेषतः॥१॥

सुन्दर, बृहन्नि, निघन्टु।

समीरगज केशरी—यह वात व्याधि और प्रसूत ज्वर के लिये तथा विशूचिका, निमोनियाँ के लिये उत्तम है। **अनुपान**—गरम जल और पान **मात्रा**—एक वटी से २ वटी पर्य्यन्त समय—प्रातः सायं या प्रसूत, विशूचिका के वेग के समय। **व्यवहार** गोली खा ऊपर से गरमजल पीना इसके पश्चात पान चबाना चाहिये।

स्वरसार वटी

निहन्ति सर्व्वजं कासं वात श्लेष्म समुद्भवम्।
क्षय कासं रक्तपित्तं श्वासमाशु विनाशयेत्॥

धन्वन्तरि महोदधि।

खैरसार वटी—इसके सेवन से सर्व प्रकार की साधारण कास (खाँसी) जुकाम आदि दूर होते हैं। साधारण खाँसी को रोकने के लिये उत्तम है। यह "खाँसी की गोली" अनेक स्थानों में धर्मात्माओं द्वारा बाँटी जारही हैं। इसका अनुपान आदि कुछ नहीं सिर्फ मुख में पड़ी रहे और रस चूसते रहना चाहिये। दिन रात्रि में ५—७ गोली सेवन की जा सकती हैं। बच्चों को शहद वा माता के दूध में मिलाकर खिलाई जा सकती हैं।

हिंग्वादि वटी

गुल्माध्मान गुदाङ्कुरान् ग्रहणिकोदावर्त संज्ञौ गदौ ।
प्रत्याध्मान गरोदराश्मरियुतांस्तूनी द्वयोः रोचकान् ॥

वृहन्नि, भाव, गद, बङ्ग, योग, निघण्टु ।

हिंग्वादिवटी—यह गुल्म प्लीहा, अष्ठीला शूल उदर अफरा आदि रोग नष्ट कर अग्नि बढ़ाती है तथा क्षुधावर्द्धक है। मात्रा एक वटी से ६ वटी पर्य्यन्त। समय—प्रातः सायं वा भोजनोपरान्त। अनुपान—गरमजल के साथ।

चित्रकादि गुटिका

गुटिका चित्रका नाम्नी मातुलुङ्गरसेन वै ।
कृत्वा विपाचयत्यामम् दीपयत्याशु चानलम् ॥१॥

निघण्टु, भैषज्य, वृहन्नि, चक्र भाव ।
गद, चरक, योग,

चित्रकादि वटी—मंदाग्नि,संग्रहणी, अतीसार अजीर्ण, आम शूल प्रभृति अग्नि दोष और इससे होने वाले साधारण उपद्रव इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं और अग्नि, क्षुधा बढ़जाती है।

व्यवहार विधि—संग्रहणी, अतीसार, में-एक एक गोली अथवा दो दो गोली प्रातः सायं खा ऊपर से तक्र (मठा-छाछ) अथवा जल पीना चाहिये। मन्दाग्नि, अजीर्ण आदि में भोजनोपरान्त जल के साथ लें।

श्वासकुठार रस

रसः श्वास कुठारोऽयं विषमश्वास कास जित्।
प्रातिश्यायं दृत क्षीणमेकादशविधं क्षयम्॥

बृहन्नि, मणि, भाव, भैषज्य, निघन्टु।

श्वासकुठार रस—कास, कफ, श्वास, की प्रसिद्ध औषधि है इसको अनेक वैद्य "स्याह मात्रा, भी कहते हैं और सन्निपात की उस अवस्था में जब कि श्वास हो, कफ बोलता हो रोगी अचेत पड़ा हो तब इसको खिला और सुँघा कर रोगी को आरोग्य कर कीर्ति लाभ करते हैं। तथा प्रतिश्याय क्षय, हृदयरोग पार्श्वशूल स्वरभेद तंद्रा सूर्य्यावर्त्त (आधाशीशी) शिरशूल को भी नष्ट करता है। **अनुपान**—पान का स्वरस अथवा अद्रक का स्वरस, मधु। समय—प्रातः सायं या आवश्यक समय पर। **मात्रा**—एक रत्ती से ४ रत्ती पर्य्यन्त। व्यवहार—आधाशीशी

तन्द्रा, शिरशूल में नस्य देनी चाहिये शेष रोगों में सेवन करावें।

प्रवाल पञ्चामृत रस

आनाह गुल्मोदर प्लीह कास,श्वासाग्निमान्द्यान्कफमारुतोत्थान्।
अजीर्णमुद्गारहृदामयघ्नं, ग्रहण्यतीसार विकार नाशनम् ॥ १ ॥

योग, निघन्टु।

प्रवाल पञ्चामृतरस—ज्वर, कफ, कास, श्वास, गुल्म, शूल, उदर रोग नाशक और बल वर्द्धक है। गुल्म के साथ होने वाला ज्वर इसके सेवन से नष्ट हो जाता है तथा बल बढ़ जाता है।
अनुपान—मधु (शहद) में एक अथवा दो रत्ती मिला प्रातः सायं चाटना चाहिये।

रामबाण रस

संग्रह ग्रहणिकुम्भकर्णकं साम वात खरदूषणं जयेत्।
वह्नि मांद्य दशवक्त्रनाशनो रामबाण इवविश्रुतो रसः ॥१ ॥

रसेन्द्र, वृहन्नि, सुन्दर; निघन्टु।

भैषज्य, भाव, शार्ङ्ग, मणि,

रामबाण रस—अजीर्ण मन्दाग्नि, विशूचिका, आम, वात-शूल, संग्रहणी प्रभृति अग्नि दोष इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं और जठराग्नि दीपन हो जाती है। जिस प्रकार भगवान राम के बाण से कुम्भकर्ण खरदूषण, दशानन (रावण) नष्ट हो गये थे,

उसही प्रकार इस रामबाण रस के सेवन से संग्रहणी आमवात, मंदाग्नि नष्ट हो जाती है। **अनुपान**—गरम जल या सेंधा नमक कालीमिर्च, जीरा भुना, चित्रक डाला हुआ तक्र (मठा) समय-प्रातः और सायंकाल मात्रा–१ बटी से ३ बटी पर्य्यन्त।

हिरण्यगर्भ पोटली रस

मन्दाग्नौ रोग सङ्घे च, ग्रहण्यौं विषम ज्वरे।
गुदांकुरे महाशूले, पीनसे श्वास कासयोः॥

भैषज्य, रसेन्द्र, सुन्दर।

हिरण्यगर्भ पोटली रस—मंदाग्नि, रोगशङ्कर संग्रहणी, विषम ज्वर, अर्श, शूल, पीनस श्वास, कास (खाँसी) अतीसार शोथ पाण्डु, कुष्ठ, यकृत, प्लीहा रोग नाशक और बल वर्द्धक है। उपरोक्त जिस रोग में निर्बलताहो रोग कष्टसाध्य हो तब अन्य औषधियों के साथ २ इसका उपयोग करने से रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाता है तथा बल भी बढ जाता है। मंदाग्नि संग्रहणी विषमज्वर में विशेष लाभप्रद है। **अनुपान**— घृत शहद कालीमिर्च। **मात्रा** १ रत्ती से २ रत्ती पर्य्यन्त। समय—प्रातः सायं। व्यवहार—घृत माशे ४ मधु माशे ८ कालीमिर्च नग २१ को कपड़छन कर एक मात्रा में तीनों पदार्थ मिला कर चाटना चाहिये।

ग्रहणी गजेन्द्र रस

ग्रहणी गजेन्द्र संज्ञोसौ चूर्णोवैलोक रक्षणः ।
ग्रहणी विविधांहन्ति ज्वरातीसार नाशनः ॥

धन्वन्तरि ।

ग्रहणीगजेन्द्र रस—जिस रोगी को १५ दिन में, १ महीने में, १० दिन में, अथवा नित्यप्रति फूले चिकने पतले दस्त होते हों। आँतें बोलती हों आलस्य हो प्रति दिन निर्बलता होती जाती हो । दस्त के साथ आँम आती हो पेट में दर्द हो, भोजन के बाद शरीर भारी होजाता हो गले में जलन हो मुख में छाले हों आदि सब विकार ग्रहणी गजेन्द्र रस के सेवन से नष्ट हो जाते हैं। शरीर निरोग होकर बलवान हो जाता है। भूख समय पर लगने लगती है भोजन किया हुआ पचने लगता है। दस्त बंधा हुआ साफ होता है। **व्यवहारविधि**—ग्रहणीगजेन्द्र रस की **मात्रा**-(खुराक) चार रत्ती से १ माशे पर्यन्त है बालकों और निर्बल स्त्री पुरुषों को उनकी अवस्था के अनुसार मात्रा कम करके देना चाहिये। एक मात्रा प्रातः और एक सायंकाल फका ऊपर से गौके मठे (तक्र) में चित्रक छाल २ रत्ती और सेंधा निमक, जीरा भुना, काली मिर्च यह स्वाद के अनुसार डाल कर पीना चाहिये। यदि रोगी को ग्रहणी के साथ ज्वर भी हो तब तक्र (मठा) न देकर ऊपर से ताजे जल अथवा

द्राक्षादि अर्क २॥ तोले पिलाना चाहिये यदि ज्वर न हो तब रोगी को तक्र ही देना चाहिये। तथा पथ्य में भी अन्न जल बन्द कर तक्र ही पिलाया जाय तब विशेष लाभ होता है कैसाही असाध्य रोगी हो ४१ दिन तक्र पान से निरोग हो जाता है। अन्न जल क्रमशः घटा कर बन्द करदेना चाहिये और तक्र रोगी की इच्छानुसार क्रमशः बढ़ाते रहना चाहिये। साधारणतः एक रोगी ५-७ सेर दूध का तक्र पीलेते है। जब रोग निर्मूल हो जाय तब रोगी को पथ्य देना चाहिये और क्रमशः बढ़ा कर पूरा कर लेना चाहिये। यह क्रिया कुशल वैद्य के सामने की जाय तब विशेष उत्तम रहेगी। बिना वैद्य के ही करली हो तब थोड़ा अन्न जल रहने देना चाहिये जिस से उपद्रव का भय न रहे। इस प्रयोग से हमने सैकड़ों रोगी आरोग्य किये हैं। परीक्षा प्रार्थनीय है।

लाईरस (लाई चूर्ण)

प्रातस्तक्रेण शाणान्यहेयं शाणार्द्धकं निशि।
अतक्रं हन्त्यतीसारं ग्रहणींच प्रवाहिकाँ॥

भाव, सुन्दर।

लाई रस—इस के सेवन से मन्दाग्नि, संग्रहणी, अतीसार आमातिसार में विशेष लाभ होता है। इस को ४ रत्ती से एक माशे की मात्रा से प्रातः और सायं काल फका कर तक्र अथवा जल पिलाना चाहिये। तक्र गौका लेना चाहिये तथा उस में काली मिर्च, जीरा भुना, सेंधानिमक, चीते की छाल डाल कर पिलाना चाहिये।

प्रदरारिवटी

सर्वोपद्रव संयुक्तं प्रदरं सर्वसम्भवम् ।
द्वन्द्वजं चिरजञ्चैव रक्तपित्तं विनाशयेत् ॥

वृहन्नि, योग, निघन्टु ।

प्रदरारियटी—यह रक्तप्रदर श्वेतप्रदर कुक्षिशूल योनिशूल आर्तव दोष नाशक है । रक्तपित्त के लिये भी उत्तम है । प्रदर के साथ होने वाला रक्तपित्त तथा अन्य उपद्रव इसके सेवन से नष्ट हो जाते है । **सेवन विधि**—प्रातः और सायंकाल एक एक गोली शहद (मधु) में मिलाकर चाटना ऊपर से यदि पत्रांगासव तोले २ पानी तोले २ मिलाकर पिलाया जाय तब शीघ्र लाभ होता है । रक्त पित्त में गोली १ मधु माशे ६ बाँसेकास्वरस माशे ६ मिलाकर चाटना चाहिये ।

चन्द्रोदय वर्त्ती

अपित्रि वार्षिकंशुकं मासेनैकेन नाशयेत् ।
अधिकानिच मांसानि रात्रावन्धर-मेवच ॥

भाव,वृन्द,शार्ङ्ग, रत्न, भैषज्य, चक्र, वृहन्नि,योग ।

चन्द्रोदय वटी—यह नेत्र रोग की श्रेष्ठ औषधि है, इसके लगाने से फुली. जाला, पानी गिरना, रतोंधी आदि रोग नष्ट हो जाते हैं । **अनुपान**—दुखती हुई आँख में पानी में घिसकर

लेप करने से या गुलाबजल माशे ६ में ? गोली घिसकर उसको २ दो बूंद आंख में डालने से आराम (लाभ) होता है। शेष रोग में पानी में घिसकर काजल की तरह लगाना चाहिये। प्रातः और सायंकाल इसके लगाने के दिनों में त्रिफलादि घृतभी सेवन किया जाय तब बड़ा लाभ होता है।

अग्निकुमार रस

विशूचिकाऽजीर्ण समीरणान्ते—
क्षयादि वल्लं ग्रहणी गदेषु ॥
योग, भैषज्य, सुन्दर, रसेन्द्र।

अग्निकुमार रस—इसके सेवन से विशूचिका, अजीर्ण वात रोग, ग्रहणी आदि अग्नि और अजीर्ण सम्बन्धी विकार नष्ट हो जाते हैं। **अनुपान**—अद्रक के रस के साथ या गरम जल के साथ एक एक वटी प्रात.सायं सेवन करनी चाहिये।

अजीर्ण कण्टक रस

त्रिगुञ्जां वटिकां खादेत्सर्वाजीर्ण प्रशान्तये।
अजीर्ण कण्टकः सोयं रसो हंति विशूचिकाम् ॥
निघण्टु, शार्ङ्ग, बृहन्नि, योग, समुच्चय,
भैषज्य, रसेन्द्र, सुन्दर ॥

अजीर्ण कण्टक रस—यह अजीर्ण मंदाग्नि, उदरशूल के लिये प्रसिद्ध है। यह अनुपान भेद से सब प्रकार के अजीर्ण को तत्काल शांति कर देता है। **अनुपान**—गरम जल के साथ प्रातः सायं एक अथवा २ वटी सेवन करनी चाहिये।

अम्लपित्तान्तक लौह

अम्लपित्तादिकान् रोगान् हन्ति शूलान्यशेषत‧।
अम्लपित्तान्तको नाम्ना लौहोऽयं परिकीर्त्यते॥

भैषज्यरत्नावली।

अम्लपित्तान्तक लौह—अम्लपित्त, कण्ठ की दाह (जलन) वमन, मंदाग्नि, शूल, नाशक है। पित्त संग्रहणी और रक्त संग्रहणी में भी विशेष लाभप्रद है। **अनुपान**—धनियां, हरड़ का वक्कुल मुलहठी इन तीनों का क्वाथ बना अम्लपित्तान्तकलौह के ऊपर पीना चाहिये। समय प्रातः और सायंकाल। **मात्रा**-१ वटी ४ वटी पर्य्यन्त।

यदि अम्लपित्त के साथ ज्वर हो तब एक एक वटी प्रातः सायं खिला ऊपर से द्राक्षादि अर्क ढाई ढाई तोले पिलाना चाहिये।

इच्छा भेदी रस

इच्छाभेदी द्विगुञ्जाः स्यात्सितया सह दापयेत्।
पिबेत्तु चुलकान्यावत्तावद्वारान्विरेचयेत् ॥१॥

योग, भैषज्य, वृहन्नि, रसेन्द्र, निघन्टु

इच्छाभेदी रस—यह उदर, जलोदर, प्लीहा, प्राकृत मलावरोध प्रभृति पर और इच्छानुसार दस्त कराने के लिये प्रसिद्ध-औषधि है **अनुपान**—मिश्री माशे ६ में एक मात्रा मिलाकर फाँकना ऊपर से जल पीना जितने चुल्लू जल पीया जायगा उतनेही दस्त होंगे समय-प्रातः काल, **मात्रा**-१ रत्ती से ४ रत्ती तक। यदि जी मिचलावे और दस्त न हो तब थोड़ा गुनगुना दूध पीना चाहिये।

उपदंश कुठार रस

पञ्चोपदंश रोगाणां प्रमेहाणांतथैवच।
व्रणानां वातरोगाणां कुष्ठानाचं विनाशनम् ॥

निघन्टु, वृहन्नि

उपदंश कुठार रस—यह उपदंश अर्थात् आतशक (गरमी) की प्रसिद्ध औषधि है उपदंश जन्य रक्त विकार जैसे खुजली चकता और सन्धि स्थानों के दर्द को भी लाभदायक है।

अनुपान—अद्रक का रस तोले १ के साथ इस रस का सेवन करे। समय—प्रातःकाल और सायं काल। **मात्रा**—एक एक वटी अथवा दो दो वटी।

कामिनी विद्रावणरस

पयसा परिपीतोऽयं शुक्रस्तंभं करोति सः।
विद्रावणः कामिनीनां वशीकरण एव च।
भैषज्य, सुन्दर।

कामिनी विद्रावण रस—यह रस कामोद्दीपन करने वाला है तथा वीर्य्य का स्तम्भन और स्त्री-द्रावक है। प्रमेह नपुन्स-कता बहुमूत्र तथा प्रमेह के साथ होने वाले दस्त इसके सेवन करने से नष्ट होते हैं **अनुपान**—एक वटी प्रात· एक रात्रि को (एक घन्टे पूर्व) सोते समय सेवन कर ऊपर मिश्री मिला हुआ तथा गरम किया हुआ दुग्ध ठन्डा कर पीना चाहिये।

कामाग्नि सन्दीपन मोदक

वृष्यन्त्वतः परतरं सततं न दृष्टमेनं-
निषेव्य मनुजः प्रमदा सहस्रम्।

मेण्ढूक लिङ्ग शिथिलत्वमुपैति नित्यं-
नागाधिपं विजयते बलतः प्रमत्तः ॥१॥

भैषज्य, सुन्दर, रत्न, योग।

कामाग्नि सन्दीपन मोदक—इसके सेवन करने से सब प्रकार के वीर्य्य विकार नष्ट हो कामशक्ति प्रबल होजाती है। इसको २ घन्टे पूर्व सेवन करने से स्तम्भन होता है। वीर्य्य विकार के साथ होने वाले रोग जैसे मन्दाग्नि, संग्रहणी, अर्श, कास श्वास, कमर दर्द भी नष्ट होजाता है। शास्त्रों में इसके गुण अधिक वर्णन किये गये हैं। और गुण भी वैसाही देखा गया है पर पाठक अत्युक्ति न समझें। इस लिये हमने उतने ही लिखे हैं जितने अनुभव में आचुके हैं। **अनुपान**—गौ का दुग्ध औटा कर ठण्डा कर मिश्री मिलाकर मोदक के ऊपर पीना चाहिये। अथवा जलके साथ सेवन करना चाहिये। **मात्रा**-४ रत्ती से ३ माशे पर्य्यन्त। समय—प्रातः और रात्रि को सोते समय।

कीट मर्द रस

चूर्णयेन्मधुना मिश्रं निष्कैकं क्रमिजित् भवेत्।
कीटमर्दो रसोनाम मुस्त क्वाथं पिवेदनु ॥

भैषज्य, सुन्दर।

कीटमर्द रस—यह उदर में होने वाले सब प्रकार के कीट (कृमि) को नष्ट करने के लिये प्रसिद्ध और अनुभूत औषधि है। बच्चों के चुनचुना तथा दस्त के साथ आने वाले कीट सबही इसके सेवन से दूर होते हैं। **अनुपान**—शहद में मिलाकर चाटना चाहिये और ऊपर से मोथा का क्वाथ* पिलाना चाहिये। समय—प्रातः और सायंकाल। **मात्रा** एक रत्ती से १ माशे पर्य्यन्त

कुमार कल्याण रस

> कामलामतिसारञ्च कृशतां वह्निवैकृतिम्।
> एषः कुमार कल्याणो नाशयेन्नात्र संशयः ॥ १ ॥
>
> सुन्दर, भैषज्य।

कुमार कल्याण रस—इस के सेवन से बालकों का ज्वर, श्वास वमन कामला अतिसार मन्दाग्नि निर्बलता आदि दूर होते हैं। तथा परिगर्भक (गर्भ के समय के) समस्त रोग भी इसके सेवन से नष्ट होते हैं। जिस समय बालक को भयानक रोग हो और अनेक औषधियाँ सेवन करा चुकने पर भी लाभ न हुआ हो तब इसका सेवन आश्चर्य्य फलदायक होता है।

---

* २ तोले मोथा ले कुचलकर पावभर पानी में औटावें जब छटाँक भर पानी रहे तब छाँनकर पीवे।

अनुपान—माता का दूध या मधु में चटावें। इसका सेवन करा ऊपर से बालरोगान्तकारिष्ट माशे ६ थोड़े से पानी में मिलाकर पिलाने से विशेष लाभ होता है। **मात्रा** आधी गोली से १ गोली तक प्रात और सायं काल या आवश्यक समय पर।

गुल्म कुठार रस

अजीर्णमामं गुल्मं च हृत्पार्श्वोदर शूलके।
नाम्ना गुल्मकुठारोऽयं सर्वं गुल्मान्व्यपोहति॥

योग, बृहन्नि०।

गुल्मकुठार रस—इसके सेवन से गुल्म, रक्त गुल्म, शूल, वायुशूल, प्लीहा नष्ट होती है। तथा वल वढ़ता है भूख बढ़ती है। दस्त साफ आता है। अजीर्ण और हृदय शूल भी इसके सेवन से नष्ट होजाता है। **अनुपान**—शहत माशे ६, अद्रक कास्वरस १ तोला, यवक्षार रत्ती ४ तीनों को मिलाकर गुल्म कुठार मात्रा १ सेवन कर ऊपर से पीना चाहिये। समय प्रातः और सायं काल। **मात्रा** एक एक बटी।

संग्रहणी कपाट रस

नवज्वरे चार्शसि षट् प्रकारे माद्यातिहारेऽरुचि पीनसेच।
मेहे त्र कृच्छ्रे गतधातु वृद्धौ गुञ्जाद्वयं चापि महामयघ्नम्॥

भैषज्य, सुन्दर, रसेन्द्र।

संग्रहणी कपाट रस—यह संग्रहणी, मंदाग्नि रक्तातिसार की परम प्रसिद्ध औषधि है। जिन रोगियों को संग्रहणी के साथ प्लीहा और शूल हो उन्हें यह विशेष लाभ करता है। ग्रहणी के साथ होने वाली निर्बलता भी इसके सेवन से जाती रहती है।

अनुपान—वाताधिक ग्रहणी में मिर्च काली रत्ती २ में एक मात्रा रस को मिला कर मधु के साथ चटाना चाहिये और पित्ताधिक में पीपल छोटी रत्ती २ में एक मात्रा रस को मिला मधु से चटाना। कफाधिक में त्रिकुटा रत्ती ४ में १ मात्रा रस तथा ३ माशे घृत और १ तोले भाँग का रस *मिला कर चाटना चाहिये। शेष रोग में मधु के साथ। समय-प्रातः और सायं काल **मात्रा**—१ से ४ रत्ती पर्य्यन्त।

---

*धुली हुई भाँग माशे १ को २ तोले पानी में औटा कर जब एक तोला रहे तब मल छान कर जो रस (अर्क) निकले वही भाँग का रस लेना।

चन्द्र कला रस

वद्धावटी चन्द्रकलेति संज्ञा ।
सर्व प्रमेहेषु नियोजयेत्ताम् ॥

मणि , कणिका ।

चन्द्रकलारस — यह रस सब प्रकार के प्रमेह मूत्र कृच्छ्र सुजाक बहुमूत्र के लिये उत्तम है । जिस प्रमेह में दस्त होते हों संग्रहणी हो उस में यह विशेष उपकार देता है ।

अनुपान—एक वटी निगल ऊपर से दूध औटा कर ठंडा कर मिश्री मिला कर पीना चाहिये । अथवा गिलोय मासे १ हल्दी रत्ती ४ दोनों को १ छटाँक पानी में पीस छान कर शहद माशे ६ डाल कर चन्द्रकला रस गोली १ निगल ऊपर से पीना चाहिये । **मात्रा**— १ से दो वटी तक ।

कामधेनु रस

प्रमेहान् विंशतिं हन्ति शुक्रमेहं विशेषतः ।
ज्वरं जीर्णञ्च यक्ष्माणं कामधेन्वभिधोरसः

भैषज्य रत्नावली ।

कामधेनु रस—यह शुक्रमेह की प्रधान औषधि है । इसके सेवन से प्रमेह ज्वर, जीर्णज्वर, यक्ष्मा रोग भी नष्ट होते हैं यह

बल वीर्य्य को बढ़ाने वाला है। प्रमेह शुक्रमेह के साथ होने वाला ज्वर खांसी प्रभृति रोगों में विशेष लाभ कारी है।

अनुपान—दुग्ध के साथ निगलनी चाहिये। (दुग्ध गौ का औटा कर ठंढा कर मिश्री मिला कर लेना चाहिये)। **मात्रा**-एक से २ वटी पर्य्यन्त। समय-प्रातः सायं काल।

दुर्जल जेता रस

अयंरसो ज्वरे योज्यः सामे दुर्जलजेऽपिच।
अजीर्णध्मान विष्टंभ शूलेषु श्वास कासयोः॥

योग, वृहन्नि०, निघन्टु।

दुर्जल जेतारस—यह दुर्जल जनित ज्वर की प्रसिद्ध और उत्तम औषधि है। इसके सेवन से अजीर्ण, अफरा, शूल, श्वास, कास नष्ट हो जाते हैं। परदेश भ्रमण करने वालोंके लिये उत्तम औषधि है। परदेश में रह कर प्रति दिन एक वटी सेवन करने से जल वायु परिवर्त्तन का प्रभाव नहीं होता। **अनुपान**—गरम जल के साथ प्रात और सायकाल, दो दो वटी निगलनी चाहिये

नव ज्वर हर रस (वटी)

एकाहिकं द्विहिकं चात्र्यहिकं च चतुर्थकम् ।
विषमं च ज्वरंहन्यान्नवं जीर्णं च सर्वथा ॥

निघन्टु; भाव, वृहन्नि, सुन्दर ।

नव ज्वर हर रस—यह नवीन ज्वर के लिये प्रसिद्ध औषधि है। इसके सेवन से विषमज्वर (मलेरिया) इकतरा तिजारी चौथईया तथा प्रति दिन ठण्ड लग कर आने वाला ज्वर तथा ज्वर के साथ होने वाला मलावरोध जाता रहता है

अनुपान—औटा हुआ जल ठंडा करके गोली के ऊपर पीना चाहिये एक गोली प्रातः और एक सायंकाल सेवन करनी चाहिये । मलावरोध में दो दो गोली सेवन करनी चाहिये ।

नवायस लौह ।

भक्षयेत्पाण्डु हृद्रोग कुष्ठार्शः कामलापहम् ।
नवायसमिदं चूर्णंकृष्णात्रेयेन भाषितम् ॥

तरङ्गणी, शार्ङ्ग, वंग, चक्र,
वृहन्नि, रत्न, गद निघन्टु,
योग, सुन्दर, भाव, भैषज्य,
मणि, वृन्द, चरक, सुश्रुत,

नवायस लौह—इसको नवायस चूर्ण, नवरसादि चूर्ण (लौह) भी कहते हैं। इसमें लोह चूर्ण डालना अनेक ग्रन्थकारों

ने लिखा है पर भस्म अधिक उपयोगी होती है हमने भस्म को डाल कर अनेक रोगियों पर अनुभव किया है और चूर्ण से अधिक लाभ प्रद प्रमाणित हुआ है इससे हम भस्म ही डालते हैं और डालने का अनुरोध करते हैं। इसके सेवन से पाँडु, तिल्ली, शोथ, कामला, उदर रोग शीघ्र नष्ट होजाते हैं।

अनुपान–शहत माशे ६ में एक मात्रा मिला कर प्रातः और सायंकाल चाटना चाहिए। **मात्रा**–२ रत्ती से१ माशे पर्य्यन्त

—o—

नाराच रस

आध्मानं मल विष्टम्भानुदावर्त्तं च नाशयेत्।
गुल्म प्लीहोदरं हन्ति पिवेत्तण्डुल वारिणा ॥ १ ॥
भैषज्य, रसेन्द्र, योग, वृहन्नि, निघन्टु शार्ङ्ग।

नाराच रस–यह उदर शोथ, गुल्म, प्लीहा, यकृत, रोग नाशक और रेचन औषधि है। तीक्ष्ण जुल्लाव (विरेचन) में वैद्य इसका ही सेवन कराते हैं। **अनुपान**–चावल का पानी *

---

* चावल साठी तोले २ लेकर पावभर पानी में ८-७ घन्टे भिगोदे पश्चात् मल कर छानले। यह छना हुआ पानी ही चावलों का पानी कहलाता है।

मात्रा-१ से २ रत्ती। समय प्रातः या आवश्यक समय पर अर्थात् १ मात्रा रसकी फंका ऊपर से चावल का पानी पिलावें।

प्रताप लंकेश्वर रस

प्रसूत वातेऽनिलदन्त बन्धे सार्द्राम्भसा वल्लभ तुष्य छिद्यात्।
ग्रतामये श्लेष्मगृहेऽर्शसिस्यात्पुराम्तृताद्रौ त्रिफला युतोऽयम् ॥१॥
वङ्ग, योग, तरंगिनो।

प्रताप लंकेश्वर रस—यह प्रसूत, वायुरोग सन्निपात की प्रसिद्ध औषधि है। प्रसूत की उस अवस्था में जब कि रोगी दाँतों को बन्द करले और बेहोश हो तब यह तत्काल लाभ देता है और अनुपान भेद से अतिसार संग्रहणी को भी लाभ प्रद है।

अनुपान—प्रातः और सायं काल एक एक रत्ती रस, अद्रक के स्वरस माशे ६ में मिला कर चटानी चाहिये। जिस समय दाँती बन्द हो उस समय १ तोले अद्रक के स्वरस में दो रत्ती रस मिला और दाँतों को खोल मुख में डालदें तथा श्वास कुठार रस की नस्य दे दें तो दाँत खुल जाते हैं।

वृ० बहुमूत्रान्तक रस

बहुमूत्रान्तक रसो नाशयेदविकल्पतः ।
बहुमूत्रं तथा चान्यान् रोगांश्चैव तदुद्भवान् ॥१॥

भैषज्य, सुन्दर ।

वृहत् बहुमूत्रान्तक रस—मधुमेह सोमरोग, बहुमूत्र तृष्णा (प्यास) को नष्ट करने की अनुभूत और प्रसिद्ध शास्त्रीय औषधि है । प्रमेह और प्रमेह के साथ होने वाली संग्रहणी के लिये भी उत्तम औषधि है । **अनुपान**—प्रातः और सायंकाल एक २ अथवा दो दो वटी गूलर के क्वाथ * के साथ सेवन करनी चाहिये यदि रोगी की प्यास अधिक हो तब शालपर्णी मुलेठी, दाख, दाभ की जड़, सफेद चंदन, हरकुला बकुल, महुआ के फूल यह प्रत्येक छः छः माशे ले कुत्तल कर पावभर जल में रात्रि को भिगो दे और प्रातः काल, मल कर छान कर वटी के ऊपर पीना चाहिये । इस प्रकार प्रातः काल भिगो कर सायं काल मल कर छान कर पिलावें ।

---

* दो तोले गूलर को कुचल पावभर पानी में औटा कर छटांक भर शेष रहे तब छान कर लेना ।

ग्रहणी कपाट रस

पाण्डु रोगमतीसारं शोथं हन्ति तथा ज्वरम्।
ग्रहणी कपाट नामायं रसःपरम दुर्लभः॥

भैषज्य, रसेन्द्र, रत्न।

ग्रहणी कपाट रस—यह मंदाग्नि, संग्रहणी, रक्तार्श, रक्त-ग्रहणी, रक्तातिसार को नष्ट करने के लिये एक चमत्कारिक औषधि है। पाण्डु, शोथ, ज्वर युक्त ग्रहणी के लिये भी विशेष उपकारी औषधि है। **अनुपान**—बेलपत्र का स्वरस १ तोले ग्रहणी कपाटरस की एक वटी खा ऊपर से पीवे प्रात और सायं।

बालामृत वटी

चिरज्वरञ्च कासञ्च शूलं सर्व्वभवं तथा।
शिशूनाँ रोग नाशाव सर्व्वं रोगं निहन्ति च॥१॥

धन्वन्तरि

बालामृत वटी—यह बालकों के हरे पीले दस्त, ज्वर, खाँसी कफ सरदी, अजीर्ण रोग नाशक है। बालकों के सामयिक रोगों व्यवहार करने योग्य औषधि है। **अनुपान**—प्रातः और सायं काल एक वटी माता के दूध के साथ अथवा गरम जल के साथ सेवन करानी चाहिये।

शृंगाराभ्रक रस

पानार्थं पीतमन्ते ध्रुवमपहरति क्षिप्रमेतान्विकारान्।
कोष्ठे दुष्टाग्नि जाताञ्ज्वरमुदर रुजो राजयक्ष्मा क्षयञ्च।
कासं श्वासं सशोथं नयन परिस्रवं मेह मेदो विकारान्।
छर्दिं शूलाम्लपित्तं तृषमपि महतीं गुल्म जोल विशालम्॥१॥
रसेन्द्र, भैषज्य, सुन्दर।

शृङ्गाराभ्रक रस—यह सेवन से जीर्ण ज्वर, विषमज्वर, राजयक्ष्मा, खांसी, पुरानी खाँसी, कफ श्वास, की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। तथा इनके साथ होने वाले उपद्रव तथा वीर्य्यस्राव वमन, शूल, रक्तश्राव रक्त पित्त, अमल पित्त आदि रोग भी नष्ट हो जाते हैं तथा बल बढ़ जाता है। **अनुपान** प्रातः और सायंकाल एक एक अथवा दो दो वटी खा ऊपर से अद्रक का स्वरस माशे ६, पान का स्वरस माशे ६ दोनों को मिला पीना चाहिये। यदि थोड़ी देर में ही खुश्की मालूम हो तब थोड़ा जल पी लेना चाहिये। जहां पान अद्रक न मिले वहाँ अद्रक का सत्व ४ रत्ती लेना चाहिये, यदि यह भी न मिले तब जल के साथ ही सेवन करना चाहिये।

प्रदरान्तक रस

मन्दाग्निमरुचिं पाण्डुं कृच्छ्रं श्वासञ्च कासनुत्।
असाध्यं प्रदरं हन्ति भक्षणान्नात्र संशयः ॥ १ ॥

रसेन्द्र, भैषज्य, सुन्दर।

प्रदरान्तक रस—यह प्रदर रोग की प्रसिद्ध औषधि है। इसके सेवन से रक्त प्रदर और अत्याधिक आर्तव श्राव नष्ट होता है। प्रदर के साथ होने वाला मन्दाग्नि, अरुचि, कास, श्वास, पाँडु, कामला, शोथ को भी नष्ट करता है। **अनुपान**—प्रातः और सायंकाल एक २ अथवा दो दो वटी साठी चावल के पानी (चावल का पानी बनाने की विधि पूर्व लिख चुके हैं) के साथ सेवन करना चाहिये।

दुग्ध वटी नं० १

शोथं नानाविधं हन्ति ग्रहणी विषमज्वरम्।
मन्दाग्निं पाण्डुरोगञ्च नाम्ना दुग्धवटी परा ॥१॥

(भैषज्य-भाव)

दुग्ध वटी नं० १—अहिफेन युक्त यह वटी सब प्रकार के शोथ की प्रसिद्ध और चमत्कारिक महौषधि है। तथा संग्रहणी

विषमज्वर, मन्दाग्नि, पांडु, रोग के लिए भी उपयोगी है यह महौषधि उस अवस्था में विशेष लाभ करती है जब कि शोथ के साथ संग्रहणी हो अथवा ज्वर हो। **अनुपान**-दुग्ध। दुग्ध गौ का औटा कर ठन्डा कर मिश्री डाल कर लेना चाहिये यदि अन्न जल, बन्द कर दुग्ध का ही पथ्य लिया जाय तब तो यह अमृत का काम करती है। चारपाई पर पड़े हुए रोगी को हमने इसका सेवन करा हृष्ट पुष्ट किया है। जल और लवण नहीं देना चाहिये प्यास के लिये दुग्ध या मकोइ का अर्क देना चाहिये। समय-प्रातःसायं मध्याह्न काल में **मात्रा**—१ वटी से ४ वटी पर्य्यन्त

दुग्ध वटी नं० २

शोथं नानाविधं हन्ति पाण्डु रोगं सकामलम्।
सेयं दुग्ध वटी नाम्ना गोपनीया प्रयत्नतः॥ १॥

भैषज्य, भाव।

दुग्ध वटी नं० २—कनकबीज युक्त। यह शोथ की प्रसिद्ध औषधि है। तथा शोथ के साथ होनेवाला पांडु और कामला रोग को भी नष्ट करता है। **अनुपान**—दुग्ध के साथ एक एक वटी प्रातः और सायंकाल सेवन करनी चाहिये। पथ्य में दुग्ध ह लेना चाहिये। अन्न, जल, बन्द कर सेवन कराने से विशेष लाभ

शहत डाल कर उसमें एक मात्रा रस मिला कर चाटना चाहिए काला निमक हरड़ पीपल का चूर्ण माशे १॥ में मिला कर गरम पानी के साथ फाँकने से शूल गुल्म प्लीहा यकृत रोगमें लाभ करता है।

लोकनाथ रसः

यकृतगुल्मोदरहरः प्लीह श्वयथु नासनः।
अग्निमांद्यञ्च शमयेल्लोकनाथो रसोत्तमः ॥१

भैषज्य , रसेन्द्र , सुन्दर

लोकनाथ रस—यह प्लीहा यकृत्, उदर, गुल्म, पाँडु शोथ, ज्वर, नाशक और बलवर्धक है। यह ज्वर के साथ होने वाले यकृत प्लीहा शोथ आदि रोग को नष्ट करने में विशेष उत्तम है।

अनुपान—प्लीहा यकृत गुल्म में पीपल छोटी माशे १ में २ रत्ती रस और मधु मिलाकर चाटना चाहिये। उदर, पाँडु, शोथ में हरड़ का चूर्ण माशे १ में २ रत्ती रस और मधु मिलाकर चाटना चाहिये। ज्वर में काला जीरा माशे १ में २ रत्ती रस और शहत मिलाकर चाटना चाहिये।

शिरोवज्र रस (शिरः शूलादि वज्ररस)

वातिकं पैत्तिकंचैव श्लैष्मिकं सान्निपातिकम् ।
शिरोर्ति नाशयत्याशु वज्रं मुक्तमिवासुरम् ॥१॥

सुन्दर, रसेन्द्र, भैषज्य ।

शिरोवज्ररस—अर्थात् शिरः शूलादिवज्र रस । यह शिर-शूल मस्तिष्क शूल की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। पुराने से पुराना शिर दर्द जाता रहता है **अनुपान**-प्रात: और सायंकाल एक एक वटी बकरी के दुग्ध के साथ निगलनी चाहिये बकरी का दूध औटाकर ठण्डाकर मिश्री मिलाकर देना चाहिये ।

जातीफल रस

आमातिसारं हरति कुरुते वह्नि दीपनम् ।
जातीफल रसोह्येष ग्रहणी गद हारकः ॥ १ ॥

सुन्दर, रसेन्द्र ।

जातीफल रस—यह आमातिसार, रक्तातिसार, संग्रहणी, रक्त संग्रहणी की प्रभावशाली औषधि है। जिस संग्रहणी में रक्त जाता हो तथा दस्त जाते समय दर्द हो उसके लिये बहुत अच्छी अनुभवसिद्ध औषधि है। **अनुपान**—आमातिसार

में कुडा की छाल के क्वाथ* के साथ एक वटी प्रातः और १ वटी सायं काल निगलनी चाहिये। रक्तातिसार तथा रक्त ग्रहणी में बेलगिरी का चूर्ण मासे १ में १ वटी पीसकर मधु मिलाकर प्रातः चाटनी चाहिये और इसी तरह सायं काल भी चाटनी चाहिये। साधारणातिसार में तथा ग्रहणी में सोंठ धनिये के क्वाथ के साथ एक २ वटी प्रातः सायं निगलनी चाहिये।

शूलवज्रिणी वटी

शूलमष्टविधं हन्ति प्लीह गुल्मोदर ज्वरान्।
अष्ठीलानाह मेहांश्च मन्दाग्नित्वमरोचकम् ॥ १ ॥

भैषज्य, सुन्दर, रसेन्द्र, रत्न।

शूलवज्रिणी वटी—यह शूल, आमशूल, परिणामशूल, आदि आठ प्रकार के शूल की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। प्लीहा, उदर ज्वर, अष्ठीला, अफरा, प्रमेह, मन्दाग्नि, अरुचि, रोग नाशक भी हैं। शूल के साथ होने वाले ज्वर अफरा, प्रमेह मन्दाग्नि रोग के लिये उत्तम औषधि है। **सेवन विधि**—एक एक वटी बकरी के दूध के साथ प्रातः और सायं काल निगलनी चाहिये। दूध औटाकर और मिश्री डालकर गरम गरम पीना चाहिये यदि दूध न मिले तब ठण्डा जल ही लेना चाहिये।

---

* क्वाथ जिस औषधि का क्वाथ बनाना हो उसको दो तोला ले कुचल और पावभर पानी में औटाकर जब छटांक भर रहे तब छाँन कर काम में लाना चाहिये।

शूल गज केशरी

हच्छूलं पार्श्वशूलञ्च आमवातं कटीग्रहम् ।
असाध्यं साधयेच्छूलं श्री शूल गजकेशरी ॥ १

भैषज्य, सुन्दर, वृहन्नि, निघन्टु शार्ङ्ग
भाव, रत्न सुधाकर ।

शूलगज केशरी—यह रस सब प्रकार के उदरस्थ शूल के लिये उत्तम है गुल्म, प्लीहा में होने वाला दर्द (शूल) भी नष्ट हो जाता है शूल के साथ होने वाली वमन अथवा हिचकी (हिक्का) भी इसके सेवन से शाँत हो जाती है। **अनुपान**-सोंठ, जीरा भुना, वच मिरचकाली यह प्रत्येक एक एक तोला, हींग भुनी माशे ६ ले सब को कपड़ छन कर रखलें। उसमें से १॥ माशे चूर्ण ले उसमें एक या २ रत्ती रस मिला रोगी को गरम जल के साथ फंकाना चाहिये प्रातः और सायं काल या दर्द के समय, इस से शूल तत्काल बन्द हो जाता है।

सर्व ज्वरहर लौहः

सर्वज्वरहरो लौहः सर्वज्वर कुलान्त कृत् ।
प्लीहानमग्र माँसञ्च यकृतञ्च विनाशयेत् ॥ १ ॥

भैषज्य, सुन्दर, रसेन्द्र

सर्वज्वरहर लौह—यह विषमज्वर, जीर्णज्वर आदि सर्व प्रकार के ज्वर के लिये उत्तम औषधि है। प्लीहा यकृत् के साथ होने वाला ज्वर भी दूर होता है **अनुपान**—एक एक वटी प्रातः और सायं काल अद्रक के साथ सेवन करानी चाहिए।

लक्ष्मी विलास रस

निहन्ति सन्निपातोत्थान् गदान्घोरांसुदारुणान् ।
सर्वशूलं शिरः शूलं स्त्रीणां गदनिसूदनम् ॥ १ ॥
रसोलक्ष्मी विलासोयं वासुदेव जगत्पतिः ।
अभ्यासादस्य भगवाँल्लक्ष नारीषुवल्लभः ॥१॥

लक्ष्मीविलास रस—यह रसायन है इस लिये इसके सेवन से अनेक रोग अनुपान भेद से नष्ट होते हैं। बल वीर्य्य, पुरुषार्थ बढ़ाने को तथा काम शक्ति प्रबल करने को प्रसिद्ध हैं। इसके शास्त्रों में अनेक गुण वर्णित हैं। इसके सेवन से प्रमेह शिर शूल, सन्निपात, स्त्री रोग. कुष्ठ श्लीपद आदि अनेक रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—सन्निपात, कुष्ठ, शूल प्रभृति रोग में पानके स्वरस माशे ६ में १ मात्रा रस मिला कर प्रातः सायं काल सेवन करना चाहिये। बल, धातु, पुरुषार्थ के लिये या प्रमेह नाशनार्थ मधु ३ माशे में १ मात्रा मिला चाटनी चाहिये। ऊपर से दूध पीना चाहिए।

लीला विलास रस

हंत्यम्लपित्तं मधुनावलीढं लीलाविलासो रसराज एषः ।
छर्दिं सशूलं हृदयस्य दाह निवारयेदेष न संशयोस्ति ॥१॥

रसेन्द्र, रत्न, सुन्दर

लीलाविलास रस—यह अमलपित्त की अनुभवसिद्ध शास्त्रीय औषधि है। अमलपित्त में होने वाला शूल, वमन,(कै), हृदय और गले की जलन आदि उपद्रव भी इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं। जिस शूल में वमन होती हो उसमें भी लाभदायक है। ग्रहणी रोग में भी जब शूल गले की जलन हो, खट्टीडकारें आती हों तब भी इसका उपयोग होता है। **अनुपान**—ऊर्ध्वगामी अम्लपित्त में दुग्ध के साथ निगले अथवा च्यवन प्राश्य में मिलाकर चाटना चाहिये। अधोगामी में आमले के क्वाथ के साथ प्रातः और सायं काल एक एक वटी सेवन करनी चाहिये।

गर्भ विनोद रस

सर्वातिसार शमनं सर्व शूल निवारणम् ।
निहन्ति गर्भिणी रोगं भास्कर स्तिमिरं यथा ॥१॥

रसेन्द्र।

गर्भविनोदरस—यह गर्भिणी स्त्री के प्रायः सब ही रोगों में लाभ दायक औषधि है। गर्भ के पुष्ट करने में भी तथा स्त्री रोग सम्बन्धी विकारों के नाश करने में इसने ख्याति प्राप्त की है।

अनुपान—एक वटी प्रातः एक सायं काल गौ दुग्ध के साथ, अथवा मुलेठी के चूर्ण माशे १ में १ वटी मिला और फाँक ऊपर से जल पीना चाहिये।

गर्भपाल रस

गर्भपुष्टा भवेदस्य गात्राणां स्फुरणं जयेत्।
पुत्र प्राप्नोति सा नारी बुद्धिमन्तं शतायुषम्॥ १॥

वैद्यक सार संग्रह।

गर्भपाल रसः—जिन स्त्रियों का गर्भ वार २ श्राव हो जाता है, उनको गर्भ रहने के साथ ही से, नव (नौ) महीना तक बराबर सेवन कराना चाहिये और जिन स्त्रियों का बालक थोड़े ही दिन जीता है उन्हें भी गर्भ रहने से लेकर बच्चा पैदा होने तक बराबर सेवन करना चाहिये। तथा जिन को गर्भ के समय ज्वर, खाँसी, वमन, शोथ आदि उपद्रव होते हों उनके लिये भी उत्तम औषधि है। इसके सेवन से गर्भ में रहने वाला बच्चा पुष्ट और दीर्घ जीवी होता है तथा स्त्री का भी शरीर निर्बल नहीं होता यह गर्भ की रक्षा करने वाली प्रसिद्ध रसायन औषधि है।

अनुपान-मुनक्का [द्राक्षामाख] तोले एक, को १ छटाँक पानी

में पीस कर गर्भपाल रस रत्ती २ को मधु अथवा शर्बत अनार में चटा कर ऊपर से पिलाना चाहिये यदि स्त्री अधिक निर्बल हो अथवा गर्भाशय भी अधिक निर्बल हो (गर्भ बार २ स्राव हो जाता हो) तब वसन्त मालिनी रत्ती १ गर्भ पाल रस रत्ती १ मुलैठी माशे १ तीनों को अनार के शर्बत १ तोले में चटा ऊपर से दुग्ध पान कराना चाहिये। यह अनुपान हमारा अनुभूत है इनसे अनेक स्त्रियों के गर्भस्राव रुक कर बच्चा समय पर उत्पन्न होता है और बच्चा पुष्ट एवं दीर्घ जीवी होता है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

महाशूल हर रस

योगोऽयं शमयत्याशु शोथ मेदोनिलार्शसाम् ।
शूलार्तानां कृपा हेतोस्तारया प्रकटो कृतः ॥ १ ॥

निघन्टु, वृहन्नि।

महाशूलहररसः—यह प्रयोग सब प्रकार के उदरस्थ शूल को नष्ट करने वाला है। कठिन से कठिन शूल इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं। साथ ही यह विरेचक भी है। शूल को नष्ट कर दस्त साफ लाता है शोथ उदर में भी लाभप्रद है। **अनुपान** प्रात और सायं काल अथवा शूल के समय। दो २ रत्ती रस घृत माशे ३ शहद माशे ६ में मिलाकर चटावें।

तक्रवटी

तक्रेण भोजनं पानं लवणाम्भो विवर्जितम् ।
निहन्ति शोथं ग्रहणी मन्दाग्निं पाण्डुतामपि ॥ १ ॥

भैषज्य, रत्नावली ।

तक्रवटी—यह शोथ रोग की प्रसिद्ध औषधि है शोथ के साथ होने वाले संग्रहणी, मन्दाग्नि, पाँडु रोग के लिये भी उत्तम है। अन्न जल बन्द कर तक्र ही पथ्य में पिलाया जाय तब यह शोथ संग्रहणी में विशेष उपकार करती है। हमने इसका अनेक रोगियों पर (जिनको संग्रहणी के साथ शोथ था) अनुभव किया है और लाभप्रद हुई है

अनुपान—तक्र (छाछ—माठा) गौ का। मात्रा एक वटी से ३ वटी पर्य्यन्त। समय—प्रातः सायँ काल।

कर्पूर रसः

ज्वरातिसारिणे चैव तथातीसार रोगिणे।
ग्रहणी षट् प्रकारेच रक्तातीसार उल्वणे ॥ १ ॥

भैषज्य, सुन्दर।

कर्पूरस—यह रस ज्वरातिसार; संग्रहणी, रक्तातिसार की प्रसिद्ध औषधि है। **अनुपान**—ताज़ो जलके साथ एक एक

वटी प्रातः सायं निगलनी चाहिये। यदि १ ही मात्रा से दस्त रुक जाय तब दूसरी मात्रा जब तक १-२ दस्त न हो जायं नहीं देनी चाहिये।

मेहमुद्गर रसः

प्रमेहान् विंशतिं हन्ति साध्यासाध्यमथापिवा।
मूत्र कृच्छ्रं तथा पाण्डुं धातुस्थञ्च ज्वरं जयेत्॥

सुन्दर, रत्न, भैषज्य।

मेहमुद्गररस—यह सब प्रकार के प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पाँडु रक्तपित्त मन्दाग्नि, अश्मरी (पथरी) अरुचि, ग्रहणी, रोग के लिये अति उपयोगी औषधि है **व्यवहार**--मात्रा-एक २ वटी। प्रात सायंकाल। **अनुपान**—बकरी का दुग्ध गरम किया हुआ ठंडाकर मिश्री डाल पीना चाहिए।

ताम्र पर्पटी नं० 1

त्रिसप्तरात्र योगेन रोगराजं च नाशयेत्।
अद्रार्कस्य रसेनैव सन्निपातं नियच्छति॥ १॥

योग, निघण्टु, वृहन्नि सुन्दर।

ताम्र पर्पटी—यह श्वास, कास, की प्रसिद्ध औषधि है। इसके सेवन से प्लीहा, शूल, शीत पित्त, हिक्का, सन्निपात वमन आदि रोग नष्ट हो जाते हैं। सन्निपात के साथ होने वाली हिक्का इसके सेवन से तत्काल शान्त हो जाती है।

व्यवहार—मात्रा-दो अथवा तीन रत्ती। समय-प्रातः एवं सायंकाल अथवा आवश्यक समय पर। **अनुपान**-रक्तपित्त क्षय में चार रत्ती पीपल के चूर्ण और ६ माशे शहद के साथ, सन्निपात में अद्रक के स्वरस के साथ, शीतपित्त और पाण्डु रोग में त्रिफला का चूर्ण माशे १॥ मिश्री माशे ३ में मिला कर फाँकना चाहिये, शूल प्लीहा रोग में कुमारी (ग्वारपाठा) के रस तोले १ के साथ, अथवा-एरंड के तैल के साथ। इस प्रकार अनुपान भेद से प्रमेह, कुष्ठ आदि रोग में भी लाभप्रद है।

ताम्र पर्पटी नं० २

वातारि तैल संयुक्ता सर्व शूल निवारिणी।
त्रिफला मधु संयुक्ता सर्व मेह निवारिणी ॥१॥

योग; निघन्टु, बृहन्नि, सुन्दर।

ताम्र पर्पटी—नम्बर एक ताम्रपर्पटी और नम्बर दो की ताम्रपर्पटी में पारद का अन्तर है।-नम्बर एक में विशेष शुद्ध

पारद पड़ता है और नम्बर दो में हिंगुलोत्थ पारद डाला जाता है जिससे यह नम्बर २ को से न्यूनगुणवाली होती है। बाकी गुण अनुपान, मात्रा व्यवहार सब नम्बर एक की भांति ही हैं ॥

चन्द्रामृत रस (वटी)

हन्ति पञ्चविधं कासं वात पित्त समुद्भवम्।
तृष्णाँ दाहं भ्रमं हन्ति जठराग्नि प्रदीपनी ॥१॥

भैषज्य, सुन्दर, रसेन्द्र, रत्न।

चन्द्रामृत रस—यह सब प्रकार की कास (खाँसी) की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। ज्वर, श्वास, कफ, तृषा, दाह मन्दाग्नि के लिये भी उत्तम है। बलवर्द्धक कान्ति जनक भी है। **व्यवहार**—समय-प्रातः सायं काल। **मात्रा**—एक वटी से ३ वटी पर्य्यन्त। **अनुपान**-दाह, तृषा, में नील कमल का रस माशे ६ में मिला कर चाटे। मन्दाग्नि श्वास में अद्रक के रस के साथ चाटे, ज्वर तथा सब प्रकार की कास, कफ में वांसा, गिलोइ, भार्गी, मोथा, कटेरी की जड़, समान भाग ले जौकुट कर २ तोला को पाव भर पानी में औटावें जब छटाँक भर रहे तब छान कर इसके ऊपर पीना चाहिये। हमारे

अनुभव—मैं क्वाथ के साथ ही सब रोगों में विशेष लाभप्रद हुआ है, हाँ तृष्णा दाह में कमल का रस ही उत्तम है।

प्रदरारि लौह

रक्तं श्वेतं तथा पीतं नीलं प्रदर दुस्तरम्।
आयुः पुष्टिकरं बल्यं बलवर्ण प्रसादनम्॥१॥

भैषज्य रत्नावली।

प्रदरारि लौह-प्रदर रोग के साथ होनेवाली मन्दाग्नि संग्रहणी की सर्वोत्तम औषधि है। इसके सेवन से सब प्रकार का प्रदर कुक्षिशूल, कटिशूल नष्ट हो जाता है तथा बल वर्ण अग्नि को बढ़ाता है। **व्यवहार**—एक एक वटी प्रातः सायं मधु के साथ चाटे अथवा साठी चांवल के पानी के साथ निगलें। अथवा गोली निगल ऊपर से अशोक छाल का क्वाथ बना कर पीवें।

प्रदरान्तक लौह

कुक्षिशूलं कटीशूलं योनिशूलञ्च सर्वगम्।
मन्दाग्निमरुचिं पाण्डुं कृच्छ्रं श्वासं च कासनुत्॥१॥

सुन्दर, रसेन्द्र, रत्न।

प्रदरान्तक लौह—इसके सेवन से लाल, पीला, नीला सफेद ऐसा घोर प्रदर तथा योनिशूल, कमर का दर्द, मन्दाग्नि, मूत्र-कृच्छ्र, आदि नष्ट होते हैं। आयु पुष्टि और बल बढ़ाने वाला है। **व्यवहार**—मात्रा एक वटी से ४ वटी पर्य्यन्त। समय-प्रातः और सायंकाल **अनुपान**—मधु अथवा साठो चावल का पानी, अथवा मधु में चटा ऊपर से पत्राँगासव २॥ तोला पानी मिला कर पिलाना चाहिये।

वृहत लोकनाथ रस

क्षौद्रेण श्लेष्मजे दद्यादतीसारे क्षये तथा।
कासे श्वासेषु गुल्मेषु लोकनाथो रसो हितः॥

वृहन्नि, शार्ङ्ग, मणि, निघन्टु सुधाकर।

वृहत लोकनाथ रस—क्षय, जीर्ण ज्वर, कास (खाँसी) श्वास, मन्दाग्नि, गुल्म संग्रहणी नाशक और बल वर्द्धक रसायन है। क्षय के साथ होने वाली प्लीहा, यकृत को नष्ट करने में विशेष उपयोगी है। अनुपान भेद से अनेक रोग नाशक शास्त्रों में वर्णित है पर अनुभव में उपरोक्त रोगों में ही विशेष उपयोगी सिद्ध हुआ है। **व्यवहार**—समय-प्रातः और सायंकाल। मात्रा-१ रत्ती से २ रत्ती पर्य्यन्त। अनुपान-उभोस कालीमिर्च

और ६ माशे शहद में एक मात्रा मिला कर चाटना चाहिए। अथवा सितोपलादि चूर्ण माशे १ में १ मात्रा वृ० लोकनाथ रस और ६ माशे शहत मिला कर चाटना चाहिये।

अतीसार संग्रहणी मे एक रत्ती भुनी भाँग और ६ माशे शहत मे १ मात्रा रस मिला कर चाटना चाहिये।

जयवटी

श्वासेषु कासेषु च वह्निमान्द्ये चार्शःसु पाण्डौ च भगन्दरेषु।
बहूपकुर्यु वटिका मलानाँ संशोधने तु प्रवरा मताः स्युः ॥ १॥

रसायनसार।

जयवटी—इसके सेवन से सब प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं कफ ज्वर वात ज्वर में विशेष उपकारी है। श्वास, कास, मन्दाग्नि, ववासीर, पाँडु रोग भगन्दर रोग इनमे उपकार प्रत्यक्ष देखा गया है। कोष्ठ को मल शुद्धि करने के लिये भी यह गोलियाँ एक ही चीज़ हैं॥ इसके खाने से दो तीन दस्त खुलासा हो जाते हैं॥ ज्वर तत्काल उतर जाता है॥ **व्यवहार**—प्रातः सायँ काल एक २ गोली मधु के साथ चाटनी चाहिए।

घोड़ा चोलीरसः (अश्व-कञ्चुकी)

सूक्ष्मं विरेचनं कुर्य्याज्जीर्ण ज्वर विनाशिनी ।
अजीर्ण शूल ग्रहणी गुल्मवाताम वातजित् ॥ १ ॥

योग, सुधाकर, सुन्दर, मणि ।

घोड़ा चोलीरस—इससे मलावरोध, उदरविकार, ज्वर, मन्दाग्नि, शोथ, आदि अनेक रोग अनुपान भेद से नष्ट होते हैं। ज्वर के साथ होने वाले मलावरोध में विशेष लाभप्रद है। **व्यवहार**—समय प्रातः और सायं काल। मात्रा—एक वटी से ३ वटी पर्य्यन्त। अनुपान—मिश्री माशे ६ में मिला कर फाँकना ऊपर से जल पीना चाहिये।

सौभाग्य वटी

येषाँ शीतमतीव दाहमखिलं स्वेद द्रवार्द्री कृतम् ।
निद्राँ घोरतराँ समस्त करण व्यामोह मूढ़ं मनः ॥
शूलं श्वास वलास कास सहितं मूर्च्छारुचिस्तड्ज्वर
स्तेषाँ वै परिहृत्य जीवितमसौ गृह्णाति मृत्योर्मुखात् ॥१॥

भैषज्य रसेन्द्र, सुन्दर ।

सौभाग्यवटी—सन्निपात की उस अवस्था में जब कि शीत, दाह, पसीना का आना, निद्रानाश, प्रदिप्त, श्वास, कफ, मूर्छा, प्रभृति उपद्रव हो तव यह विशेष लाभकारी होती है तथा ज्वर के वेग को रोक कर ज्वर को नष्ट कर देती है। **व्यवहार**—समय प्रातः और सायङ्काल या आवश्यक समय पर। मात्रा—१ वटी से ३ वटी पर्य्यन्त। अनुपान—अद्रक के स्वरस के साथ चाटें।

सिद्ध प्राणेश्वर रस

ज्वरातिसारेऽतिसृतौ केवले वा ज्वरे पिबा।
ज्वरे त्रिदोषजे घोरे ग्रहण्यादि गदेऽपिच ॥१॥

रसेन्द्र, सुन्दर, भैषज्य।

सिद्ध प्राणेश्वर—ज्वरातिसार, अतिसार, आमातिसार, की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। यह पाचन और दीपन भी है, इसके द्वारा बन्द होने वाले दस्त सहसा पुनः नहीं होते। **व्यवहार**—समय—प्रातः, मध्याह्न, सायं। मात्रा—१ वटी से ४ वटी पर्य्यन्त। अनुपान—ताजी जल ३ अञ्जुली (चुल्लू अर्थात गोली निगल ऊपर से ३ चुल्लु पानी पीलेना चाहिये।

महागन्धक

ज्वरघ्नं दीपनञ्चैव बलवर्ण प्रसाधनम् ।
दुर्वारं ग्रहणीरोगं जयत्येव प्रवाहिकाम् ॥१॥
बालानां गद युक्तानाँ स्त्रीणाञ्चैव विशेषतः ।
महागन्धकमेतद्धि सर्वव्याधि निसूदनम् ॥२॥

रसेन्द्र, भैषज्य सुन्दर ।

महागन्धक—इसके सेवन से ज्वर, मन्दाग्नि, कास, श्वास, अतिसार, संग्रहणी, प्रसूति ज्वर, ग्रहदोष, यह सब नष्ट हो जाते हैं यह विशेष कर स्त्रियों और बालकों को अधिक लाभप्रद है। **व्यवहार**—समय—प्रातः सायं । मात्रा–२ से ८ रत्ती पर्य्यन्त । **अनुपान**—जल अथवा अद्रक का स्वरस बालकों और स्त्रियों की ग्रहणी में अपूर्व लाभ करती है।

लीलावती गुटिका

दुर्वारं ग्रहणी रोगंञ्चाम शूलञ्च नाशयेत ।
ज्वरातिसार पाण्डुघ्नी बालानाँ सर्व रोगनुत् ॥१॥

बृहन्नि, निघन्टु, रत्नाकर ।

लीलावती गुटिका—यह ज्वर ज्वरातिसार अतीसार नाशक तथा बालकों के हरे पीले दस्त बन्द करने में विशेष उत्तम है।

व्यवहार—मात्रा— बच्चों को एक एक वटी और बड़ों को तीन तीन वटी। समय प्रातः और सायङ्काल। **अनुपान** बच्चों को माता का दुग्ध अथवा जल।

पाशुपत रस

रसो पाशुपतो नाम सद्यः प्रत्यय कारक।
दीपन, पाचनो हृद्यः सद्यो हन्ति विसूचिकाम् ॥१॥

रसेन्द्र, योग, तरङ्गिणी, सुन्दर।

पाशुपत रस—यह मन्दाग्नि, विशूचिका, उदर संग्रहणी, अतीसार, शूल, अर्श, राजयक्ष्मा, प्रभृति वात, पित्त, कफ के रोग नष्ट करने वाला तथा अग्निवर्धक पाचक दीपन है **व्यवहार मात्रा**—एक वटी से ३ वटी पर्यन्त। समय—प्रातः और सायं **अनुपान**—उदर रोग में - मूसली के क्वाथ के साथ निगलें। अतीसार में मोचरस का चूर्ण माशे एक में १ मात्रा मिला जल के साथ फाँके। ग्रहणी अर्श के रोग में—गौ का तक्र (मठा) सेंधा नमक डाल कर रस के ऊपर पीवें। शूलमें - काला नमक, पीपल, सोंठ यह तीनों एक २ माशे ले १ मात्रा गरम

जल के साथ फाँके। राजयक्ष्मा में—पीपल का चूर्ण मिला मधु के साथ चाटें। वातरोग में सोंठ, कालानमक मिला कर जलके साथ फाँके। पित्त रोग में धनिया मिश्री मिला कर जलके साथ फाके। कफ रोग में-पीपल और मधु मिला कर चाटें।

एलुआदि वटी

उदरश्चामवातञ्च गुलम प्लीह भगन्दरान्।
निहन्त्येष प्रयोगोहि वायुर्जलधरानिव॥ ॥

योग चिन्तामणि।

एलुआदि वटी—तिल्ली, उदर, अफरा आमवात, गुलम, रोग नाशक। ज्वर के अन्त में होनेवाली तिल्ली के लिये विशेष उपयोगी है। **व्यवहार**—एक एक वटी अथवा दो दो वटी प्रातः और सायङ्काल गरम जल के साथ अथवा कुमारी आसव के साथ निगलनी चाहिये।

एलादि वटी

श्वासं कासं ज्वरं हिक्काँ छर्दि मूर्छा मद भ्रमम्।
रक्त निष्ठीवनं तृष्णाँ पार्श्वशूलमरोचकम्॥ १॥

भैषज्य, माध, मणि, वृन्द तरङ्गिणी।

एलादि गुटिका—रक्तपित्त, उरःक्षत, क्षय, कास रोग की प्रसिद्ध औषधि है। शुष्क पित्त की खाँसी के लिये एक ही वस्तु है **व्यवहार**-एक दिन रात्रि मे पाँच सात गोली एक एक करके मुख मे डालनी चाहिये और रस चूसते रहना चाहिये।

सिंहनाद गुग्गुल

शोफोदर प्लीहरुजो विकार नाभि व्रणार्शो ग्रहणी प्रदोषैः।
नासाध्यमस्तीति विकार जातं ख्यातस्तु एषोभुवि सिंहनादः॥

योग चिन्तामणि।

सिंहनाद गुग्गुल—शोथ, उदर प्लीहा, नाभी का व्रण, अर्श (बवासीर) वातरक्त, कुष्ठ, पाण्डु, रोग नाशक है। **व्यवहार** एक अथवा दो दो वटी प्रातः सायं गरम जल के साथ अथवा दूध के साथ सेवन करनी चाहिये।

पुनर्नवादि माण्डूरम्

प्लीहानं यकृतं गुल्ममुदरञ्च विशेषतः।
पाण्डु शोथोदरानाह शूलार्शःकृमि गुल्मनुत्॥१॥

रत्न, भैषज्य।

पुनर्नवादि माण्डूर—यह पाण्डु, उदर शोथ, शूल, अर्श, कृमि, अफरा नाशक, प्लीहा युक्त ज्वर के लिये अथवा ज्वर के साथ होने वाले पाण्डु, शोथ के लिये अति उपयोगी है। **व्यवहार**-मात्रा एक वटी से ४ वटी पर्य्यन्त। समय प्रात और सायंकाल अनुपान—गौ मूत्र के साथ निगलें अथवा मधु के साथ चाटें।

गुडा पिप्पली

जीर्णज्वरं तथा शोथं कासं पञ्चविधं तथा।
अश्विभ्यां निर्म्मिता श्रेष्ठा बालानां गुड पिप्पली॥१॥

भैषज्य रत्नावली।

गुडपिप्पली—यह ज्वर कास, प्लीहा, (तिल्ली) यकृत (जिगर) उदर, गुल्म, नाशक है। बच्चों की तिल्ली की अति उत्तम औषधि है। **व्यवहार** मात्रा—२ से ४ वटी पर्य्यन्त, बच्चों को एक एक वटी गरम जल के साथ निगलनी चाहिये। प्रातः और सायंकाल दोनों समय।

वृहत सूरण मोदक

हिक्कां श्वासं कासं सराजयक्ष्म प्रमेहांश्च।
प्लीहानञ्चाथोग्रं हन्तीति रसायनं पुंसाम्॥ १॥

चक्र, भैषज्य।

वृहत् सूरणमोदक—यह अर्श (बवासीर) की प्रसिद्ध औषधि है। अर्श के साथ होने वाले कास, श्वास, हिक्का, यक्ष्मा, प्रमेह प्लीहा आदि रोग भी इसके सेवन से नष्ट होजाते हैं। **व्यवहार** एक एक वटी दिन में ३ वार प्रातः मध्यान्ह सायं, जल के साथ अथवा अभयारिष्ट के साथ।

पञ्चामृत रस नं० १

सन्निपातेषु रोगेषु नासाव्याधौ सपीनसे।
घ्राणशोथे व्रणे चैव उपदंशे भगन्दरे॥

रसेन्द्र, सुन्दर।

पञ्चामृतरस नं० १—नाक के समस्त रोगों में लाभदायक है, पीनस, प्रतिश्याय के साथ होने वाला शोथ भी इसके सेवन से नष्ट हो जाता है। **व्यवहार**—एक २ अथवा दो दो वटी प्रातः सायं, अद्रक के स्वरस के साथ निगलनी चाहिये।

पञ्चामृत रस नं० २

नाड़ीव्रणे ज्वरेच्चैव नखदन्त विघातके।
पञ्चामृत रसो योज्यः सर्व रोग प्रशान्तये॥१॥

पञ्चामृत रस—यह शोथ रोग की प्रसिद्ध औषधि है तथा नाड़ी व्रण, ज्वर, नख, दन्त के लगने से जो पक गया हो

अथवा घाव होगया हो तब यह सेवन करना चाहिये। **व्यवहार**—एक एक अथवा दो दो वटी प्रातः सायं अद्रक के स्वरस के साथ निगलनी चाहिये।

त्रिपुर भैरव रस

क्रमविवर्द्धित मुद्दलित ज्वरः।
त्रिपुर भैरव एष रसोत्तरः॥ १॥

भाव, योग।

त्रिपुर भैरव रस—वात ज्वर की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। दोषी ज्वर में जब लंघन हो रहे हों और वायु की अधिकता मालूम हो तब यह विशेष उपकारी होता है। जल जनित ज्वर के लिये भी उपयोगी है। **व्यवहार**—मात्रा एक एक वटी प्रातः सायं, अद्रक के स्वरस के साथ चटावें अथवा अष्टमांश जल तोले एक, के साथ निगलवादें या जल में घोल कर पिलादें।

जयमंगल रस

जीर्णज्वरं महाघोरं चिरकाल समुद्भवम्।
ज्वरमष्ट विध साध्यासाध्यमथापि वा॥

भैषज्यरत्नावली।

श्री जयमंगलरस—यह आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र की अव्यर्थ औषधि है। इस के द्वारा कैसाही ज्वर हो छूट जाता है। अनेक वैद्यों का मत तो यहाँ तक हो गया है कि यदि इससे ज्वर न छूटेगा तब किसी औषधि से ही नहीं छूटेगा। जीर्णज्वर की प्रधान और अव्यर्थ औषधि है। पुराने और नवीन दोनों ही प्रकार के ज्वर के लिये उत्तम है। इसमें स्वर्ण पड़ता है इसलिये यह बलवर्धक भी है इसके साथ अन्य बलवर्धक औषधि देने की आवश्यकता नहीं होती। चढ़े हुऐ ज्वर को उतारने में भी यह तत्काल फर्ज करती है। **व्यवहार विधि**—एक वटी प्रातः, एक वटी ज्वर के वेग से १ घन्टे पूर्व एक एक माशे काला जीरा पीस कर उसके साथ जयमगल रस की गोली १ पीस कर फकावें ऊपर से गुनगुना पानी अथवा अमृतारिष्ट तोले २ पानी तोले २ मिला कर पिलावें, ज्वर के उतारने को गुनगुने पानी के साथ जीरा काला मिला फकावें ऊपर से कम्बल उढ़ावें। थोड़ी देर में पसीना आकर ज्वर उतर जायगा।

किशोर गुग्गुल

जयेत् सर्वाणि कुष्ठानि वातरक्तं त्रिदोषजम्।
सर्व व्रणानि गुल्मानि प्रमेह पिडिकास्तथा ॥१॥

शार्ङ्ग, योग, भाव, मणि, निघन्टु, भैषज्य।

किशोर गुग्गुल—यह सब प्रकार के वातरक्त, आमवात-व्रण, कुष्ट, गुल्म, प्रमेह रोग नाशक है। वात रक्त की प्रधान औषधि है। खून फिसाद के साथ किसी अंग में दर्द होता हो तब यह लाभ दायक होता है। **व्यवहार**—मात्रा एक २ वटी। समय—प्रातः और सायं काल अनुपान—प्रमेह में दूध के साथ, गुल्म में गरम जल के साथ। वातरक्त आम-वात प्रभृति रोग में मजीठ के क्वाथ के साथ निगलना चाहिये।

काञ्चनार गुग्गुल

गण्डमालाँ जयत्युग्रामपचीमर्बुदानि च ।
ग्रन्थीन्व्रणांश्च गुल्मांश्च कुष्ठानि च भगन्दरम् ॥

शार्ङ्ग-योग-मणि-निघन्टु ।

काञ्चनार गुगल—यह गण्डमाला की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। अपची अर्बुद, गांठ व्रण, कुष्ट, भगन्दर रोगनाशक है। **व्यवहार**—प्रातः और सायङ्काल एक एक वटी सेवन करनी चाहिये। अनुपान— कुष्ठ भगन्दर में खैरसार के क्वाथ के साथ। गण्डमाला में घुंडी अथवा हरड़ के क्वाथ के साथ निगलें [हमारे अनुभव में बृहत् रास्नादि क्वाथ के साथ विशेष उत्तम है। हमने अनेक रोगियों को गण्डमाला में बृ० रास्नादि क्वाथ के साथ दिया है और लाभ-प्रद पाया है]

गोक्षुरादि गुग्गुलः

हन्यात्प्रमेहं कृच्छ्रञ्च प्रदरं मूत्रघातकम् ।
वातास्रं वातरोगांश्च शुक्रदोषं तथाऽश्मरीम् ॥

शार्ङ्ग, योगचिन्तामणि, ।

गोक्षुरादिगुग्गुल-यह वातजप्रमेह और सुजाक, की प्रसिद्ध औषधि है। मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात के लिये भी उत्तम है। सुजाक में जब वात व्याधि रोग हो जाता है तब विशेष लाभ करती है । **व्यवहार**—प्रातः और सायं काल—एक एक वटी—गुनगुने पानी के साथ अथवा औटाकर मिश्री डाल कर ठन्डा कर गौ दूध के साथ निगलनी चाहिये ।

अमृताद्य गुग्गुल

हृद्रोगो राजयक्ष्मा च काल श्वासो गलग्रहः ।
कृमयो ग्रहणीदोषाः शैत्यं स्थौल्यमतीवच ॥

भैषज्यरत्नावली ।

अमृताद्यगुग्गुल—यह मेद रोग की अव्यर्थ औषधि है जो मेद के बढने से दिन प्रतिदिन मोटे होते जाते हैं साथ ही निर्बल और शिथिल होते जाते हैं उनके लिये अमृत है, भगन्दर रोग में भी विशेष लाभ प्रद है। मेद रोग के साथ होने वाले कास, श्वास, गलग्रह, कृमि, गृहणी; हृदयरोग को भी लाभ होता है।

सेवन विधि-एक गोली प्रातः और १ गोली सायं काल गुन गुने जल अथवा दूध के साथ निगलनी चाहिये। दूध औटा कर ठन्डा कर मिश्री मिलाकर लें।

व्योषादि वटी

व्योषादि गुटिका सेयं पीनस श्वास कासजित्।
रुचिस्वरकरी ख्याता प्रतिश्याय प्रणाशिनी॥

शार्ङ्गधर संहिता।

व्योषादिगुटिका—यह जुकाम खाँसी की प्रसिद्ध और लाभ प्रद वटी हैं। पीनस, श्वास कोभी नष्ट करने में विशेष प्रभाव रखती है। रुचि को बढ़ाती है और स्वर को साफ करती हैं। **सेवनविधि**—दिनरात में ५-७ वार एक एक गोली मुख में डाल रस चूसना चाहिये। पीनस और श्वास में अद्रक का स्वरस १ तोला शहत १ तोला मिलाकर गोली १ निगल ऊपर से पीना चाहिये।

वृहत यकृतहरि लौह।

प्लीहोदर यकृद् गुल्मान् सर्वोपद्रव संयुतान्।
एकाहिकं द्वयाहिकं वा त्र्याहिकं चातुराह्निकम्॥
सर्वान् ज्वरान् निहन्त्याशु भक्षणादार्द्रक-द्रवै।

भैषज्यरत्नावली।

वृहद् यकृद्हरि लौह—यह यकृत (जिगर) की प्रधान और प्रभावशाली औषधि है। ज्वर के साथ प्लीहा, यकृत गुल्म, उदर, आदि उपद्रव हों तब विशेष लाभ करती है। विषमज्वर उपद्रव सहित नष्ट हो जाता है हम वैद्यों से इस के व्यवहार करने का अनुरोध करते हैं। **सेवन विधि**—एक वटी प्रातः एक वटी सायंकाल अद्रक का स्वरस ६ माशे में मिलाकर चटावें, अथवा एक वटी प्रातः और १ वटी ज्वर के वेग के १ घन्टे पूर्व चिरायते के क्वाथ के साथ निगलनी चाहिये। अथवा अमृतारिष्ट तोले २ पानी तोले २ मिला, उसके साथ निगलें।

बहुशाल गुड़

पञ्चगुल्मान् प्रमेहांश्च पाँडुरोगं हलीमकम्।
जयेदर्शांसि सर्व्वाणि तथा सर्व्वोदराणिच॥

शार्ङ्गधर, भैषज्य।

बहुशालगुड़—इसके गुणों का शास्त्र में जो वर्णन है उसे लिखने हमें सकोच होता है फिर भी जितने गुण अनुभव में आये हैं वह लिखते है। यह अर्श ववासीर की प्रधान औषधि है ववासीर के साथ होने वाले अनेक उपद्रव भी इस के सेवन से नष्ट हो जाते हैं। गुल्म, प्रमेह, पाँडु, को भी लाभदायक है। **सेवन विधि**—एक एक वटी प्रातः और सायंकाल गुनगुने जल के साथ अथवा गौ के तक्र के साथ निगलनी चाहिये। ५—७ दिन वाद इस की मात्रा दूनी कर देनी चाहिये उसके पश्चात् पुनः ५—७ दिन वाद मात्रा बढ़ा देनी चाहिये।

प्राणदा गुटिका

हन्यादर्शांसि सर्वाणि सहजान्यस्रनान्यपि।
वात पित्त कफोत्थानि सन्निपातोद्भवानि च॥

भैषज्य रत्नावली।

प्राणदा गुटिका—यह सब प्रकार के अर्श अर्थात् बवासोर के लिये प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। बवासीर के साथ होने वाली मन्दाग्नि संग्रहणी के लिये विशेष लाभप्रद है।
व्यवहार—भोजनोपरान्त और प्रातः सायं एक एक अथवा दो दो वटी जल के साथ अथवा पिप्पल्यासव या अभयारिष्ट तोले २ पानी तोले २ मिला गोली निगल ऊपर से पीवें।

वृहच्छूरण मोदक

अग्नि बल वृद्धि हेतुर्न केवलं सूरणे महावीर्यः।
प्रभवति शस्त्रक्षाराग्निभिर्विनाप्यर्शमेषः॥

भैषज्यरत्नावली।

वृहत् सूरणमोदक—यह बिना शस्त्र कर्म के अर्श को नष्ट कर देने वाली औषधि है। साथही बलवीर्य्य और अग्निको भी बढ़ा देने वाली है। बहुशाल गुड़ प्राणदा गुटिका, वृहत् सूरणमोदक इनके सेवन से और वृ० कासीसादि तैल की गुदा में पिचकारी

देने से बड़ा लाभ होता है। **सेवनविधि**-एक एक मोदक प्रातः सायं जल के साथ निगलनी चाहिये। यदि तीनों औषधि देनी हों तब प्राणदा गुटिका भोजनोपरान्त, बहुशालगुड प्रातः और सायं वृ० सूरणमोदक रात्रि को सोते समय देना चाहिये।

रसाभ्र गुग्गुल

वातरक्त विनाशाय धन्वन्तरि कृतः पुरा।
रसाभ्रगुग्गुलुः ख्यातो वातरक्तेऽमृतोपमः॥
भैषज्यरत्नावली भावप्रकाश।

रसाभ्रगग्गुल-वातरक्त कैसा ही हो इसके सेवन से अवश्य लाभ होता है। कुष्ठ अठारह प्रकार के भी इस के सेवन से कम हो जाते हैं। निरन्तर कुछ समय तक सेवन करने से फोड़ा फुन्सी चकता घाव खुजली सबको ही लाभ होता है एक बार परीक्षा कर देखिये। **सेवन विधि**—एक वटी प्रातः और १ वटी सायं काल गिलोइ के क्वाथ के साथ या स्वरस के साथ निगलनी चाहिये अथवा गुनगुने जल के साथ।

विशूचिका विध्वंसरस

विसूचीं नाशयत्याशु दुष्यन्नं पथ्यमाचरेत् ।
त्रिदोषोत्थमतीसारं सर्वोपद्रव संयुतम् ॥

भैषज्य, भाव ।

विशूचिका विध्वंसरस—यह विशूचिका की प्रसिद्ध और अव्यर्थ औषधि है। इसको विशूचिका की उस अवस्था में जब कि नाड़ी की गति शिथिल होगई हो शरीर ठन्डा पड़ गया हो उस समय देने से तत्काल लाभ होता है। इसमें सर्प विष पड़ता है अतः बड़ी सावधानी से व्यवहार करना चाहिये।
सेवनविधि—आधी गोली से १ गोली तक मृतसंजीवनी अर्क तोले १ में घोल कर अथवा अद्रक का स्वरस माशे ६ में घोल कर पिलाना चाहिये। दो दो घन्टो बाद २-३ खुराक देना ही परियाप्त है।

विजय पर्पटी

दुर्व्वारां ग्रहणीं हन्ति उसाध्यां बहुवर्षिकीम् ।
आम शूल मतीसारं सामञ्चैव सुदारुणम् ॥

भैषज्य, सुन्दर ।

विजयपर्पटी—कठिन से कठिन ग्रहणी, मन्दाग्नि, आमशूल अतीसार के लिये बहुत ही उपकारी और प्रभावशाली औषधि

है। अर्श से जो ग्रहणी उत्पन्न हुई हो उसके लिये भी विशेष उपयोगी है। तथा ग्रहणी के साथ होने वाले पान्डु कामला, प्लीहा, जलोदर, शोथ, यकृत, अमलपित्त, प्रमेह, को भी दूर करने को उत्तम है। **सेवनविधि**-प्रातः सायं एक एक रत्ती मधु मिला कर चटावें अथवा जीरा सफेद माशे १ में एक रत्ती पर्पटी मिला फंका ऊपर से गौ तक्र पिलावें।

मन्मथाभ्ररस

अस्य भक्षणमात्रेण काष्ठं जीर्य्यतितत् क्षणात्।
नाशयेद् ध्वज भङ्गादीन रोगान् योग कृतानपि ॥

भैषज्य, सुन्दर।

मन्मथाभ्ररस--प्रमेह और नपुंसकता की प्रसिद्ध औषधि है इसके सेवन से कैसाही निर्वल निस्तेज वीर्य्य हीन रोगी हो अवश्य ही बलवान वीर्य्यवान हो जाता है। वृद्ध भी तरुण हो जाने की इच्छा रखने वाले इस का व्यवहार कर प्रसन्न होते हैं। जो निरास थे गृहस्थ धर्म्म के अयोग्य थे वह अब पुत्रवान इनके ही सेवन से हो चुके हैं एकबार परीक्षा प्रार्थनीय है। **सेवनविधि**--एक अथवा दो रत्ती मुख में डाल ऊपर से गौ दुग्ध औटा कर ठन्डा कर मिश्री तथा घृत मिलाकर पीना चाहिये।

पूर्णचन्द्र रस

वृद्धोऽपि तरुणस्पर्द्धी स्त्रीषु चापिवृषायते।
दृष्टः सिद्ध फलोह्येष रसायनवरः स्मृतः॥

भैषज्य, सुन्दर।

पूर्णचन्द्ररस – वाजीकरण औषधियों में यह प्रधान औषधि है इस के सेवन से प्रमेह नपुंसकता, बहुमूत्र मधुमेह सोमरोग नष्ट हो जाते हैं। बल वीर्य्य बढ़ जाता है निर्बल भी बलवान हो जाता है। **सेवनविधि**–एक एक अथवा दो दो रत्ती रस में एक एक तोला मिश्री मिलाकर फाँकना चाहिये और ऊपर से दूध पीना चाहिये। यदि दूध न मिले तब गुन-गुना जल पीकर पान चबा लेना चाहिये।

त्रिभुवन कीर्तिरस

सस्त्रिभुवन कीर्तिर्गुंञ्जेकाद्ररसेन वै।
विनाशयेज्ज्वरान्सर्वान्संनिपातांस्त्रयोदश।

योगरत्नाकर।

त्रिभुवन कीर्तिरस—यह सब प्रकार के ज्वर के लिये और त्रिदोष अर्थात सन्निपात के लिये प्रसिद्ध औषधि है। **सेवन विधि**--अद्रक के स्वरस के साथ अथवा गरम जल के साथ एक एक गोली प्रातः और सायंकाल अथवा आवश्यक समय पर देना चाहिये।

अरिष्ट-आसव

आयुर्वेदीय चिकित्सकों का बिना अरिष्ट-आसव के काम ही नहीं चलता क्योंकि यह बड़े प्रभावशाली और स्थाई लाभ करने वाले होते हैं। आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्रों में भी इनका स्थान बहुत ऊँचा है। किन्तु ध्यान रहे कि व्यवहार उनहीं अरिष्ट आसवों का किया जाय जो ठीक ढंग से उत्तम विधि से किया कुशल वैद्य की देख रेख मे बने हों और बनाते समय ४ बातों का ख्याल रक्खा गया हो। १—शास्त्रीय प्रक्रियानुसार प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर बनाये गये हो। २—जिन अरिष्ट आसवों मे शास्त्रीय मतभेद हो उन्हें अपने पुराने अनुभव से उत्तम मत वाले ग्रंथ के अनुसार बनाये गये हो। ३—बने हुए प्राचीन हों अर्थात उन्हें बनाये हुऐ कम से कम २-३ वर्ष होगये हों क्योंकि शास्त्रों में प्राचीन ही का महत्व है और वही पूर्ण लाभ भी करते हैं। ४—वनौषधियां सब नवीन हों तथा उच्चश्रेणी की हों। हम अपने कार्यालय मे भी इन सब बातों को ध्यान रखते हैं। और इसी कारण से अनुभवी वैद्य व डाक्टर बन्धु हमारे यहाँ के अरिष्ट आसव बहुत पसंद करते हैं।

अरिष्ट-आसव, पुराने उत्तम होते हैं किन्तु पुराने होने से उन मे थोड़ा अम्लत्व आजाता है इस लिये सबही अरिष्ट आसवो के व्यवहार करते समय उनमें उतना ही पानी मिलाकर पीने चाहिये।

सेवन विधि—अरिष्ट आसवों की सेवन करने की विधि प्रायः एक ही है अर्थात १ खुराक अरिष्ट वा आसव ले उस में उतना ही अथवा २-३ तोला पानी मिला कर पीना चाहिये। पोने का समय भी प्रायः सब का यही है कि १ खुराक (मात्रा) प्रातः और १ खुराक सायंकाल। इसलिये हम आगे जिनकी सेवनविधि यही होगी उनकी सेवनविधि नहीं लिखेंगे पाठक जहां विधि न लिखी हो वहां यही विधि समझें और जहां कुछ भिन्न तथा आवश्यक होगी वहां देदी जायगी। हां मात्रा सब की लिखदी जायगी।

लोहासव

पाण्डुश्वयथुगुल्मानि जठराण्यर्शसाँ रुजम्।
प्लीहामयं ज्वरं जीर्णमाशु लोहासवो जयेत्॥

शार्ङ्ग, बृहन्नि भैषज्य, निघन्टु मणि।

यह आसव बड़ा प्रसिद्ध है प्राचीन समय के चिकित्सकों का तो यह पाण्डु, तिल्ली, शोथ, गुल्म, ज्वर पर अमोघ अस्त्र है। आज कल भी यह बड़ा लाभ करता है, प्लीहा, यकृत के साथ होने वाले ज्वर मे चमत्कारिक है। मात्रा (खुराक) २ तोला।

कुमारी आसव

पञ्चकासं तथा श्वासं क्षयरोगंच दारुणम्।
उदराणि तथाऽष्टौच षडर्शांसि च नाशयेत्॥

योग, बृहन्नि, निघन्टु, शार्ङ्ग,।

कुमारी आसव—उदररोग, शूल, गुल्म, प्लीहा, यकृत (जिगर) नष्टपुष्प (स्त्रियों का मासिक स्राव का रुकना) और गर्भाशय विकार के लिये प्रसिद्ध है कास, श्वास, क्षय, कृमि, अर्श रोग में भी लाभ करता है। मात्रा २ तोला। यह भोजनोपरान्त भी सेवन कराया जा सकता है।

कनकासव

निहंति निखिलाँ श्वासान् कास यक्ष्माणमेव च।
क्षत क्षीणं ज्वरं जीर्णं रक्तपित्त सुरा क्षतम् ॥१॥

-भैषज्य, भाव।

कनकासव—श्वास, कास, और कफप्रधान यक्ष्मा के लिये प्रभावशाली महौषधि है। निरन्तर सेवन करने से श्वास नली के साफ होने पर चिरकालिक श्वास भी दूर होते हैं।

सेवनविधि—श्वास रोग में प्रथम स्नेहन, स्वेदन, वमन, यह तीन कर्म कराने पश्चात् इसका सेवन विशेष उपयोगी है। यदि तीन कर्म न करा सके तब वमन ही कराकर सेवन कराना चाहिये। इस की खुराक ६ माशे से २॥ तोला तक है उतना ही पानी मिला कर पिलाना चाहिये। प्रातः और सायं काल दो समय पिलावें।

दशमूलारिष्ट (आसव)

ग्रहणीमरुचिं श्वासं कासं गुल्मं भगन्दरम्।
वातव्याधिं क्षयं छर्दिं पाँडुरोगंच कामलाम् ॥

कृशानाँ पुष्टि जननं वन्ध्यानाँ गर्भदः परः ।
अरिष्टोदशमूलाख्यस्तेजः शुक्रबल प्रदः ॥ १ ॥

शार्ङ्ग, मणि, भैषज्य, निन्घटु ।

दशमूलारिष्ट - इस को कोई २ वैद्य आसव भी कहते हैं इसके शास्त्रो में अनेक गुण वर्णित हैं किन्तु हम बहुत न लिख अपने अनुभव में आये हुये गुण ही लिखते हैं कि यह वीर्यवर्धक, पुष्टि कारक, स्मृतिजनक, मस्तिष्कशक्ति दायक है । निरन्तर कुछ दिन सेवन से नजला, प्रसूति, हिस्टेरिया, वातव्याधि, क्षय, कास, को नष्ट करता है तथा जिन स्त्रियो को हमेशा प्रसूत रोग की शिकायत रहती है उनके लिये राम बाण है । गर्भाशय को ठीक कर गर्भधारण शक्ति प्रदान करता है। मात्रा २ तोला । जिन्हें गर्भाशय विकार हो उन्हें ३, ४ महीने बराबर सेवन करना चाहिये ।

उशीरासव

उसीरासव इत्येष रक्तपित्त विनाशनः ।
पाण्डु कुष्ठ प्रमेहार्शः क्रमिशोथहरस्तथा ॥ १ ॥

भैषज्य, भाव, गद, शार्ङ्ग-निघन्टु ।

उसीरासव—यह ऊर्द्ध या अधोमार्ग [ऊपर के हिस्सा से अथवा नीचे के हिस्सा) से जाते हुए रक्तपित्त के रुधिर को रोकता है ॥ दाह सन्ताप और कास को दूर करता है, जिन सज्जनों को गरमी में प्रायः नक्की छूटा करती है उनके लिये रामबाण है यदि इसके साथ रक्तवल्लभ रसायन भी सेवन की जाय तब किसी भी मार्ग से

और किसी भी रोग के कारण से रक्त जाता हो अवश्य बन्द हो जाता है ॥ मात्रा २ तोला। इसमें पानी और ६ माशे मिश्री दोनों मिलाकर सेवन करावें। यदि रक्त वल्लभ रसायन भी दें तो २ माशे फाँक ऊपर से इसे पिलावें।

पत्रांगासव।

रजदोषो तथा सर्वान् प्रदरान् दुस्तरानपि।
पीत नीलारुण श्वेतान् सर्वानेव विनाशयेत् ॥

भैषज्य।

पत्रांगासव—यह सब प्रकार के प्रदर रोग और योनि रोग के लिये उत्तम है। नीला, लाल, पीला, श्वेत प्रदर के नष्ट करने के लिए प्रसिद्ध औषधि है। वात प्रकृति की स्त्री या प्रसूत ज्वर के साथ होने वाले प्रदर में विशेष लाभप्रद है। मात्रा २ तोला।

पिप्पल्यासव

क्षयं गुल्मोदरं कार्श्यं ग्रहणीं पाण्डुतां गदम्।
अर्शांसि नाशयेच्छीघ्रं पिपल्याद्यासवस्त्वयम् ॥

शार्ङ्ग, भैषज्य, निघन्टु, वृ३नि।

पिपल्यासव—क्षय, गुल्म, उदर, ग्रहणी, पाण्डु, मन्दाग्नि अर्श रोग के लिये उत्तम औषधि है। कफ युक्त क्षय के साथ मन्दाग्नि हो तब विषेश लाभ करता है। मात्रा ६ माशे से २॥ तोला पर्यन्त।

द्राक्षारिष्ट

उर. क्षतं क्षयं हन्ति कास श्वास गला मयान् ।
द्राक्षारिष्टाह्वय. प्रोक्तो बलकृन्मलशोधन ॥ १

भैषज्य, भाव, शाङ्‌र्ग, मणि

द्राक्षारिष्ट—यह क्षय उर क्षत के साथ होनेवाली खाँसी की प्रसिद्ध औषधि है। यह फेफड़े और हृदय की शक्ति को बढ़ाने वाला है। अमलपित्त, मन्दाग्नि, स्वरभेद को नष्ट करता है। इसके साथ च्यवनप्राश्य का सेवन विशेष उत्तम है। मात्रा—एक तोला से २ तोला पर्यन्त।

अमृतारिष्ट

प्लीहानं पाण्डुं श्वयथुं नाशयेन्नात्र संशय.
अमृतारिष्ट इत्येष सर्वज्वर कुलान्तकृत् ॥ १ ॥

भैषज्य० ।

अमृतारिष्ट—जीर्णज्वर, (पुराने ज्वर) के लिये प्रसिद्ध औषधि है। जिस ज्वर के साथ वीर्य विकार या सन्ताप हो उस अवस्था में इससे विशेष फल होता है। यह धातु में प्रवेश की हुई उष्माको धीरे२ निकाल कर धातुओं को बढ़ाता है। प्राकृतिक ज्वर (मलेरिया) में भी लाभप्रद है। पित्तप्रधान प्रकृति वाले के लिये विशेष उपयोगी है। मात्रा २ तोला।

कुटजारिष्ट

ज्वरान् प्रशमयेत् सर्व्वान् कुर्य्यात्तीर्ण धनञ्जयम् ।
दुर्वारां ग्रहणीं हन्ति रक्तातिसारमुल्वणम्॥ ॥

भैषज्य, शार्ङ्ग, भाव ।

कुटजारिष्ट—ज्वरयुक्त अथवा ज्वर रहित रक्तातिसार आमातिसार, ग्रहणी, रोग की प्रसिद्ध और चमत्कारिक ओषधि है । मल के साथ आता हुआ रक्त इसके सेवन से बन्द होजाता है । पेचिश की रामबाण औषधि है ।

मात्रा—१ तोले से २ तोला पर्यन्त ।

बब्बूलारिष्ट

क्षयं कुष्ठमतीसारं प्रमेह श्वास कासकान् ।
हन्युः सर्व्वमतीसारं शिवस्याज्ञा विशेषत. ॥

भैषज्य, शार्ङ्ग, गद, भाव ।

बब्बूलारिष्ट—यह क्षय, कुष्ठ, अतीसार, प्रमेह, श्वास, कास, की प्रसिद्धऔषधि है। कास (खाँसी) तथा क्षय की उस अवस्था में जब रोगी का मल पतला होगया हो अथवा अधिक खाँसने पर भी कफ न निकलता हो तब यह विशेष लाभ देता है। इससे फेंफड़े साफ होते हैं और बल बढ़ता है। मात्रा—१तोला से २॥ तोला पर्यन्त ।

कर्पूरासव

विसूचिकायाः परमौषधंतद्-
निहंति चान्यान् विविधान् विकारान् ॥१॥

भैषज्य भाव, सुन्दर।

कर्पूरासव— इसको सर्व साधारण में 'अर्क कपूर' तथा अमृतधारा भी कहते हैं। वह बाजारू अर्क कपूरों से विशेष उत्तम है। क्योंकि यह शास्त्र प्रक्रिया से बनाया जाता है। यह विशूचिका (हैजा) की प्रसिद्ध और परीक्षित औषधि है। तथा इसके सेवन से सामयिक रोग जैसे गरमी के दस्त, पेट का दर्द, जी मिचलाना, अजीर्ण, आदि दूर होते हैं। गृहस्थी को सदैव पास रखने योग्य औषधि है यदि इसमें समान भाग अहिफेनासव मिला लिया जाय तब यह सुधासिन्धु, पीयूष सिन्धु क्लोरोडिन के मुआफिक गुण वाला हो जाता है। **सेवनविधि**—मात्रा ५ बूंद से १५ बूंद तक अनुपान—गरम जल या सौंफ का अर्क। समय—जब आवश्यकता हो।

अहिफेनासव

त्रिदोषोत्थमतीसारं सज्वरं वाथ विज्वरम्।
हन्त्यतीसारमत्युग्रं विशूचीमपि दारुणाम् ॥

भैषज्य, भाव।

अहिफेनासव—यह सब प्रकार के अतीसार में लाभप्रद है, देखा गया है कि इससे दारुण विशूचिका के दस्त और प्रवाहिका में

तत्काल लाभ हुआ है। आमातिसार, रक्तातिसार में भी लाभ प्रद है। तत्काल दस्त बन्द करने में इसके समान दूसरी औषधि देखने में नहीं आई इसमें समान भाग "कर्पूरासव,, मिलाने से सुधासिन्धु पीयूषसिन्धु कल्लोल प्रभृति औषधियों के समान गुण वाली औषधि होजाती है। सेवन विधि-मात्रा ३से१५ बूंद तक, अनुपान गरमजल।

अशोकारिष्ट

ज्वरञ्च रक्तपित्ताऽर्शो मन्दाग्नित्वमरोचकम्।
मेह शोथारुचिहरस्त्वशोकारिष्ट संज्ञितः ॥१॥

भैषज्य रत्नावली।

अशोकारिष्ट—सब प्रकार के प्रदरों के लिये शीघ्र फलदायक है, योनिशूल वस्तिशूल रजोदोष दूर करने में अति प्रभाव दिखाता है। इस से दूर हुआ प्रदर फिर सहसा उत्पन्न नहीं होता है। इस के साथ प्रदरांतक रस सेवन करने से विशेष लाभ होता है। मात्रा १तोला से २॥ तोला पर्यन्त यदि प्रदरान्तक रस भी सेवन करना हो तब एक वटी निगल कर ऊपर से अशोकारिष्ट एक खुराक पानी मिला कर पीना चाहिये।

मृगमदासवः

विशूचिकायां हिक्कायां त्रिदोष प्रभवे ज्वरे।
तीक्ष्ण्यकोष्ठं बलञ्चैव भिषङ्मात्रां प्रयोजयेत् ॥१॥

भैषज्य, सुन्दर

मृगमदासव—सन्निपात विशूचिका की परम औषधि है। कफ और वायु के प्रकोप को तत्काल दूर करता है। जिस समय नाड़ी की गति शिथिल होगई हो और शीत का प्रकोप हो उस समय यह तत्कालिक फल देकर वैद्यों को यशस्वी बनाता है यदि—शीत की अवस्था में मल्ल सिंदूर,, को भी साथ दिया जाय तब विशेष फल शीघ्र होता है। **सेवनविधि**—मात्रा-७ बूंद से २५ बूँद और तक। अनुपान—मृत संजीवनी सुरा अथवा अष्टांशेष जल॥ यदि मल्ल सिंदूर भी साथ दिया जाय तब मल्लसिंदूर १खुराक अद्रक के रस में चटाकर ऊपर से मृगमदासव १ खुराक मे मृतसंजीवनी सुरा अथवा अष्टावशेष जल १ तोला मिला कर पिलाना चाहिये।

चन्दनासवः

चन्दनासव इत्येष शुक्रमेह विनाशनः।
बलपुष्टि करोह्यो वह्नि सन्दीपनः परः॥१॥
भैषज्य रत्नावली।

चन्दनासव—प्रमेह, वीर्य्य विकार, स्वप्न प्रमेह, और सुजाक की प्रसिद्ध औषधि है। मूत्रनली मे होने वाले घावों को दूर कर मूत्र की जलन पोलापन दूर करता है इसके साथ कुशावलेह सेवन करने से स्पप्न प्रमेह और पित्त प्रमेह अवश्य नष्ट होजाते हैं। यदि उष्ण वाताघ्न वटी के साथ सेवन किया जाय तब पुराने से पुराना सुजाक नष्ट होता है, **सेवनविधि**—मात्रा १तोला से २॥ तोले पर्य्यन्त। अनुपान—जल। समय-प्रातः और सांयकाल यदि इसके साथ

कुशावलेह लेना हो तब प्रथम अवलेह २तोला चाट कर ऊपर से चन्दनासव १खुराक पानी मिलाकर पीना चाहिये इसी प्रकार यदि साथ में वटी लेनी हो तब प्रथम चण्डवातान्नवटी १गोली सेवन कर ऊपर से आसव, पानी मिला कर पीना चाहिये।

वांसारिष्ट

उरः क्षते यक्ष्मणि रक्तपित्ते श्वासेच कासेऽभिहिता विभज्य।
ये चागदा वैद्य विमूढ़ चेतः सुखाव बोधाय यथाधिकारम्॥१॥

क्षयादर्श।

वाँसारिष्ट—यह आयुर्वेदीय प्रभाव शालीऔषधि है। कास श्वास, यक्ष्मा, प्रभृति रोगों के लिये "बाँसा" (अडूसा) एक मुख्य औषधि है। तब इसके द्वारा बनाये हुये अरिष्ट से कास, श्वास, स्वर भेद, छाती का दर्द, कफ मुखशोष उरःक्षत रक्तपित्त प्रतिश्याय (जुकाम) आदि नष्ट होने में क्या सन्देह है? हम वैद्यो से प्रार्थना करते हैं कि उपरोक्त रोगो मे इसका उपयोग कर इसके अपूर्व गुणो को अवश्य परीक्षा करें। मात्रा—६माशे से १तोला पर्य्यन्त।

स्वर्ण घटित

सारस्वतारिष्ट नं० १

अकाल मृत्योहरणे यदीच्छा नारी प्रियत्वं यदि वाञ्छितं स्यात्।
वाक् शुद्धि धैर्य्यं स्मृतिलब्धिरिष्टा निसेव्यतां तद्धमृतं भवद्भिः॥

भैषज्य रत्नावली।

सारस्वतारिष्ट नं० १—आज कल स्मरणशक्ति की बड़ी शिकायत सुनने में आती है रात दिन के परिश्रम से, शारीरिक मिथ्या विहार से दिमागी ताकत क्षीण हो जाती है सच पूछिये तो बढ़ी हुई दिमागी ताकत के बिना न वैद्य चिकित्सा में, न वकील वकालत में, न व्यापारी व्यापार में, न वैज्ञानिक नये नये आविष्कारों में यश प्राप्त कर सकता है इस लिये दिमागी ताकत बढ़ाने का सब को प्रयत्न करना चाहिये। सारस्वतारिष्ट मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने के लिये एक चमत्कारिक औषधि है यह महर्षि धन्वन्तरि ने अपने शिष्यों के उपकार के लिये बनाया था। इसके सेवन से स्मरण-शक्ति और देहकान्ति बढ़ती है वाणी शुद्ध होती है वीर्य विकार दूर होते हैं विद्यार्थी अपने पाठ को जल्दी याद कर सकते हैं इस अरिष्ट में बुद्धिवर्धक प्रधान औषधियों के सा[illegible] रसायनिक प्रक्रिया से 'स्वर्ण' का समावेश किया जाता है मात्र[illegible] मासे से १ तोला पर्यन्त। इसके सेवन के थोड़ी देर पश्चा[illegible] दुग्ध पीना चाहिये दुग्ध औटा कर ठण्डा कर मिश्री मिल[illegible] पीना चाहिए।

सारस्वतारिष्टः नं० २

आयु वीर्यं धृतिं मेधां बलं कांतिं विवर्द्धयेत्।
वाग्विशुद्धिकरो ह्यो रसायनवरः स्मृतः॥ १॥

भैषज्य रत्नावल्‍[illegible]ता-

सारस्वतारिष्ट नं० २—इस में और नम्बर एक के मिलाया [illegible] रिष्ट में सिर्फ स्वर्ण का अन्तर है। नम्बर एक में

जाता है और यह नम्बर २ का बिना स्वर्ण के ही है इसलिये यह उतना गुणप्रद और बलकर्त्ता नहीं है बाकी स्मरणशक्ति, बुद्धि बढ़ाने वाला है और वाणी शुद्ध करने वाला है बाकी सेवन विधि अनुपान आदि नम्बर एक के अनुसार ही हैं। सिर्फ मात्रा ६ माशे से २ तोला पर्यन्त।

अभयारिष्टः

ग्रहणी पाण्डुरोगघ्नः प्लीह गुल्मोदरापहः।
कुष्ठ शोथारुचिहरो बल वर्णाग्नि वर्द्धनः ॥१॥

वंग, गद, चरक, वृन्द

अभयारिष्ट—यह अर्श (बवासीर) संग्रहणी, पाण्डु प्लीहा, गुल्म, सूजन, अफरा उदर रोगके लिये बहुत ही उत्तम है जिन रोगियों को अर्श के कारण, मल, मूत्र साफ नहीं आता वायु बिगड़ी रहती है अग्नि सुस्त रहती है उनके लिये विशेष उपयोगी है अनेक लोगों को थोड़ादस्त उतर कर पीछे हाजत बनी रहती है चित्तप्रसन्न नहीं होता उनको उत्तम है क्योंकि इसमें हरड़ ही प्रधान है यह दस्त साफ लाती है। इसके साथ चन्द्रप्रभा वटी सेवन करने से प्रमेह और अर्श में विशेष लाभ होता है। मात्रा तोला से २ तोला पर्य्यन्त। यदि चन्द्रप्रभा वटी लेनी हो तब प्रथम वटी सेवन कर ऊपर से अभयारिष्ट १ खुराक पानी मिलाकर देना उत्तम है।

देवदार्व्यारिष्टः

वातरोगग्रहण्यर्शो मूत्रकृच्छ्राणि नाशयेत् ।
देवदार्व्यादिकोऽरिष्टो कण्डूकुष्ठ विनाशनः ॥१॥

शार्ङ्ग, भैषज्य, बृहन्नि० गद ।

देवदार्व्यारिष्ट—प्रमेह रोगकी २ प्रकार की औषधियां होती हैं । एक वीर्य्य को रोकने वाली दूसरी वीर्य्य को शोधने वाली । वीर्य्य को रोकने वाली औषधियां प्रायः मल रोधक होती हैं और न वीर्य्य शुद्ध हुए बिना उनका फल ही स्थाई होता है । हाँ औषधि सेवन करते ही रोगी का वीर्य्य रुकने से आराम होने का विश्वास होता है परन्तु औषधि बन्द करने पर कुछ दिन बाद ही पूर्ववत अवस्था हो जाती है । वीर्य्य शोधने वाली औषधियों में यह बात नहीं उनका फल कुछ विलम्बसे होता है किन्तु होता है चिरकालिक । देवदार्व्यारिष्ट दूसरे प्रकार की शोधने वाली औषधियों में से है मात्रा १ तोले से २ तोले पर्यन्त ।

आयुर्वेदीय खालसा

रक्तशोधक-खदरारिष्ट

देहस्य रुधिरं मूलंच रुधिरे नैवावधार्य्यते ।
तस्माद्यत्नेन कर्तव्यं रक्तरुधिरस्यैव विशोधनम् ।
एष वै खदिरारिष्टः सर्व कुष्ट निवारणः ॥

शार्ङ्ग बृहन्नि, गद, भैषज्य, निघंटु, योग ।

खदरारिष्ट—आजकल विलायत के बने हुए सालसों का अधिक प्रचार है लेकिन स्वदेशी के जमाने में आयुर्वेदीय प्रभावशाली औषधियाँ मिलने पर भी जो लोग विदेशी औषधियाँ खरीद अपने देश का धन नष्ट करते हैं यह उनकी भूल है यह खदरारिष्ट (आयुर्वेदीय सालसा) विलायती सालसों से बढ़कर है । इसकी परीक्षा अनेक विद्वानों ने की है और इसका आविष्कार त्रिकालदर्शी ऋषि महर्षियों ने किया है यह जितना रक्त शोधन करता है उतना विलायती सालसा कदापि नहीं कर सकता । यह अरिष्ट रक्त शोधक ही नहीं किंतु रक्त वर्धक भी है । इसके सेवन से सब प्रकार के त्वचा रोग और रक्त विकारके समस्त रोग जैसे फोड़ा, फुंसी, खुजली, चकते, वातरक्त विस्फोटिक, उपदंश, ब्रह्म कुष्ठ श्लीपद रक्तदोष से होने वाली गठिया (बात व्याधि) प्रभृति रोग नष्ट होते हैं । कुछ दिन के उपयोग से संचित दूषित रक्त शुद्ध होकर नवीनरक्त बढ़ता है जिससे शरीर हृष्ट पुष्ट हो कान्तिजनक हो जाता है । सेवन विधि—दो २ तोला अरिष्ट आधी २ छटाँक पानी में मिला कर प्रातः और सायंकाल पीना चाहिए । इसके सेवन से पहिले विरेचन (जुल्लाब) ले लेना उत्तम है पित्त प्रकृति वाले को गुलाब मोदक और वात तथा कफ प्रकृति वालों को इन्द्रवारुणादि क्वाथ से विरेचन लेना उत्तम है । एक रत्ती तालकेश्वर रस शहद में घटा ऊपर से १ खुराक खदरारिष्ट पानी मिलाकर पिलाने से बड़ी जल्दी लाभ होता है । हमने इस प्रकार दोनों औषधियों से अनेक कष्ट साध्य रोगी रोगमुक्त किये हैं । परीक्षा प्रार्थनीय है ।

अश्वगन्धारिष्ट :

मूर्च्छामापस्मृतिं शोष मुन्माद मपिदारुणम् ।
अश्वगन्धाद्यरिष्टोऽयं पीतो हन्यादसंशयम् ॥१॥

भैषज्यरत्नावली ।

अश्वगन्धारिष्ट—यह मूर्च्छा, अपस्मार, उन्माद अश मन्दाग्नि प्रमेह और स्त्रियोंके प्रसूत रोग तथा हिस्टेरिया के लिये अति उत्तम है। यह उपरोक्तरोग नष्टकर शरीर को बलवान बनाता है मात्रा १ से २॥ तोला पर्य्यन्त ।

मृत संजीवनी अर्क

देहदार्ढ्यं करं पुष्टि बल वर्णाग्नि वर्द्धनम् ।
सन्निपात ज्वरे घोरे विसूच्यां च मुहुर्मुहुः ॥१॥

भैषज्य रत्नावली ।

मृत संजीवनी अर्क-ज्वर सन्निपात, विशूचिका को नष्ट करता है और बल वर्ण अग्नि को बढ़ाता है शरीर को पुष्ट करता है। अनेक प्रयोगों में डाला जाता है। शास्त्रोंमें सुराके नामसे भी व्यवहार किया है। **सेवनविधि**-प्रातः और सायं काल दो दो तोला पीना चाहिये। विशेष में-सिद्धमकरध्वज रत्ती १ में १ तोला यह अर्क मिलाकर पिलाने से विशेष लाभ होता है विशूचिका में जब नाड़ी शिथिल होगई हो शरीर ठण्डा पड़ गया हो तब १ गोली विशूचिकाविध्वंस की तोलेभर इस अर्क में मिलाकर पिलाने से

तत्काल लाभ होता है। मृगमदासव जब त्रिदोष में व्यवहार किया जाता है तब इसही अर्क में मिलाकर देते है।

वल्लभारिष्ट

वातरक्तं तथा कण्डुं पामानं रक्त मण्डलम्।
दद्रु वीसर्पविस्फोटं पानाभ्यासेन नाशयेत्॥

—धन्वन्तरि का प्रयोगांक।

वल्लभारिष्ट-इस प्रयोग को हमने धन्वन्तरि में प्रकाशित किया था अतः प्रयोग (नुकसा) उसमें देखना चाहिये यह अब शास्त्रीय औषधियों में ही गिना जाने लगा है अतः इसके भी गुण और सेवन विधान यहाँ ही लिखते हैं।

इस अरिष्ट से हज़ारो निराश रोगी रोग मुक्त हुए हैं प्रयोगाङ्क में देख अनेक वैद्यों ने बना कर इसके जो गुण देख कर लिखे हैं उन्हें लिखें तो आप असम्भवही समझेंगे वास्तव में यह-किसी ही कारण से भी रक्त दोष क्यों न उत्पन्न हुआ हो अवश्य आराम करता है।

खाज, खुजली, चकते, फोड़ा फुन्सी सबको दूर कर देता है कुष्ठ, गलित कुष्ट तक इससे अच्छे हुऐ हैं पर कुष्ठ गलित में इसके साथ हरिताल भस्म भी सेवन करानी चाहिये। इसकी खुराक (मात्रा) २ तोले की है। पानी मिला कर पिलाया जाता है इसके सेवन के पूर्व भी इन्द्र वारुणादि क्वाथ से विरेचन (जुल्लाब) ले लेना चाहिये।

द्राक्षासव

वीर्याभिवृद्धिः प्रभवेन्नराणां रामासुवश्याभवतीह लोके ।
न एव धन्यामनुजानरेन्द्रा द्राक्षासवंये किलसेवयति ॥
योग चिन्तामणि ।

द्राक्षासव—एक आयुर्वेदीय प्रसिद्ध औषधि है। इसके चमत्कारिक गुण वैद्य डाक्टर ही नहीं सर्व साधारण भी जानते हैं। सेवन करते ही चित्त प्रसन्न होजाता है निर्बलता दूर होकर शरीर सतेज और फुर्तीला होजाता है क्षय, जुकाम, खाँसी, कफ, और वीर्य विकार दूर होते हैं। शरीर पुष्ट और कांतिमय होजाता है स्मरण-शक्ति बढ़ जाती है। इसे भोजन के बाद पीना चाहिये। मात्रा इस की मात्रा २ तोले की है।

क्वाथ (काढा)

प्राचीन समय में क्वाथों का अधिक प्रचार था और यह लाभ भी विशेष करते थे पर इनके औटाने छानने और बनाने का झंझट आज कल के लोगों को पसन्द नहीं है फिर भी बिना क्वाथ के किसी वैद्य का काम नहीं चलता अतः हम थोड़े से क्वाथों के गुण और मात्रा लिखते हैं। सेवन विधि सबकी एक ही प्रकार हैं जैसे १ मात्रा क्वाथ की दवा ली और उसे पावभर पानी में औटाया जब छटांक पानी शेष रहा तब छान कर गो

अरुप हो वह डाल कर पिलाना। यदि प्रक्षेप न हो तब वैसे ही पिला देना चाहिये। क्वाथ प्रातः और सायं २ समय पिलावें हां जो अधिक दस्त लाते हैं जैसे इन्द्रवारुणादि क्वाथ उन्हें प्रातः काल ही सेवन करावें।

वृहत्मंजिष्ठादि क्वाथ

नाशं गच्छति वातरक्त मखिला नश्यंति रक्तामया।
वीसर्पस्त्वचि शून्यतानयनजारोगा प्रशाम्यंति च॥
भाव, मणि, शार्ङ्ग, वृहन्नि.

वृहत् मंजिष्ठादि क्वाथ-वातरक्त, रक्तपित्त, कुष्ट विस्फोटक उपदंश श्लीपद, आदि राग तथा इस से होने वाले उपद्रव को नष्ट करता है यह क्वाथ रक्त शुद्ध करने वाली प्रधान औषधि है रक्त विकार और चमड़े के विकार को नष्ट कर शरीर को पुष्ट और कान्तिवान बनाता है। विलायती सारसा परेला से अधिक गुण वाला है। इसके सेवन से फोड़ा फुन्सी सदैव को नष्ट हो जाती हैं।
सेवन विधि प्रातः सायं एक २ मात्रा मधु डाल कर पीना चाहिये उपदंश की उस अवस्था में जब कि शरीर में अथवा संधियों में दर्द हो तब किशोर गूगल के साथ सेवन करना उत्तम है।

महा रास्नादि क्वाथः

सर्वाङ्कम्पे कुब्जत्वे पक्षाघाते ऽववाहुके।
गृध्रस्याम वाते च श्लीपदे चाप तानके ॥ १

निघन्टु, शार्ङ्ग, भाव, बङ्ग, वृहन्नि०

महारास्नादि क्वाथ-यह आमवात के लिये प्रसिद्ध क्वाथ है इसके सेवन से सर्वाङ्ग वात (सम्पूर्ण शरीर का दर्द) पक्षाघात (आधेशरीर का रहजाना) श्लीपद अपतानक, वात व्याधि रोग को नष्ट करने के लिये प्रसिद्ध है। इसके साथ "महा योगराज गूगल" सेवन करने से कैसा ही शरीर का दर्द (शूल) हो गांठों पर सूजन हो अवश्य नष्ट हो जाता है।

सेवनविधि-एक २ मात्रा प्रातः सायं औटे हुए दूधके साथ पीना चाहिये यदि गूगल सेवन करनाहो तब एक वटी सेवन कर ऊपरसे क्वाथ पीना चाहिये। यदि मलावरोध भी साथ हो तब क्वाथ में करण्डी का तैल शुद्ध(काष्ट्र आयल) तोले १ मिला कर पीना चाहिये।

दशमूल क्वाथः

सन्निपात ज्वरं हन्ति सूतिका दोष नाशनः।
हृत्कण्ठग्रह पार्श्वर्त्ति तन्द्रामस्तक शूलहृत् ॥१॥

मणि, शार्ङ्ग, भाव, योग, भैषज्य, निघन्टु

दशमूल काथ—यह ज्वर, प्रसूतिज्वर, सन्निपात, तन्द्रा तथा वायुविकार मस्तिष्कशूल के लिये विशेष उपकारी है। यह काथ प्रसूता स्त्री को देने से सर्व विकारों का नाश होता है गर्भ स्थान के हर एक दर्द के लिये और ज्वर विरेचन शूल खांसी पर यह काथ आशीर्वाद स्वरूप है। प्रसूत के साथ होने वाला शरीर का दर्द इस से शीघ्र ही मिटता है। **सेवनविधि**-एक एक मात्रा प्रातः और सायङ्काल पीना चाहिये (इस क्वाथ में अनेक वैद्य पीपल का चूर्ण रत्ती ४ प्रक्षेप में डालते हैं)।

दार्व्यादि काथः

अन्तः स्थञ्च बहिः स्थञ्च धातुस्थञ्च विशेषतः।
सर्वज्वरं निहन्त्याशु तथाच दैर्ध्य रात्रिकम् ॥१॥

भैषज्य, योग, मणि, निघण्टु।

दार्व्यादि क्वाथ—यह प्राकृतज्वर (मैलेरिया) ज्वर, विषमज्वर तथा सन्निपात के लिये विशेष उत्तम है ज्वर के साथ होने वाली खांसी कफ शरीर का दर्द भी इसके सेवन से नष्ट हो जाता है **सेवनविधि**-एक एक मात्रा प्रातः और सायं काल मधु मिलाकर देना चाहिये।

बलादि क्वाथः

पित्त कासापहं पेयं शर्करा मधु योजितम् ।

गद, बृहन्नि ।

बलादि क्वाथ–यह ज्वर क्षय रक्तपित्त, कास, कफ,के लिये प्रसिद्ध क्वाथ है । कफ के साथ आने वाली रक्त की लालमा इस के सेवन से बन्द होजाती है । **सेवनविधि**—प्रातः और सायं काल एक मात्रा शहत और मिश्री डाल कर पीना चाहिये ।

देवदार्व्यादि क्वाथः

शूल कास ज्वर श्वास मूर्च्छा कम्प शिरोर्तिभिः ।
युक्तं प्रलाप तृड् दाह तन्द्रातीसार वान्तिभिः ॥ १॥

योग, शार्ङ्ग, भाव, बृहन्नि० तरंगिणी ।

देवदार्व्यादिक्वाथ–यह स्त्रियों के प्रसूत के समय के समस्त रोग जैसे ज्वर खांसी शूल शरीर का दर्द आदि के लिये परम उपयोगी है इस के साथ प्रताप लंकेश्वर का सेवन विशेष उपयोगी है । **सेवनविधि** प्रातः और सायङ्काल एक एक मात्रा सेंधा निमक रत्ती ४ हींग भुनी रत्ती १ डालकर पीना चाहिये ।

त्रिफलादि क्वाथः

क्वाथः क्षौद्रयुतो हन्यात् पाण्डु रोगं सकामलम् ॥

चक्र, वङ्ग, वृन्द, गद, तरंगिणी, योग ।

त्रिफलादि क्वाथ—पाँडु, कामला, हलीमक, ज्वर के लिये प्रसिद्ध क्वाथ है। ज्वर (प्राकृत ज्वर) के अन्त में होने वाला पाँडु तिल्ली यकृत विकार इसके सेवन से नष्ट हो जाता है। इसके साथ " नवायस लोह का सेवन विशेष उपयोगी है।

सेवनविधि—एक एक मात्रा प्रातः और सायंकाल मधु डाल कर पीना चाहिये। यदि नवायसलोह भी सेवन करना हो तब १ मात्रा नवायसलोह मधु में मिला चाटे ऊपर से क्वाथ मधु डाल कर पीवें।

द्राक्षादि क्वाथः (अष्टादशांग)

जीर्ण ज्वरारुचि श्वास कास श्वयथु नाशनम्।
एषः सर्वज्वरं हंति दशाष्टाङ्ग मिति स्मृतम् ॥१॥

वंग, भाव, वृद्धत्रि० ।

द्राक्षादि क्वाथ—यह ज्वर विषम ज्वर जीर्ण ज्वर के लिये प्रसिद्ध है। इस का अर्क भी भवका में खींच कर बनाया जाता है हमने अपने पुराने ज्वर वाले रोगी इससे आरोग्य किये हैं। यदि इसके साथ मालती वसंत सितोपलादि चूर्ण का सेवन

सो किया जाय तब कैसाही पुराना ज्वर हो और साथ में खांसी आदि उपद्रव हों अवश्य नष्ट हो जाते हैं बल बढ़ जाता है॥

सेवनविधि—प्रातः सायं एक २ मात्रा पीनी चाहिये यदि मालतीबसत सितोपलादि चूर्ण व्यवहार करना हो तब १ मात्रा बसंतको १ मात्रा सितोपलादि चूर्ण में मिला मधु के साथ चाट ऊपर से क्वाथ पीना चाहिये॥

इन्द्रवारुणादि क्वाथ

कुष्टोपदंशनामान अणवातादि संयुतम्।
कामदेव प्रतीकाशश्चिर जीवीभवेन्नरः॥

धन्वन्तरि।

इन्द्रवारुणादि क्वाथ—उपदंश (आतशक) और उस से होनेवाला रक्त विकार तथा वातरक्त, कुष्ट, व्रण, प्रभृतिरोग दूर हो जाते हैं। यह पेट मे एंठन कर आँव को निकालता है जिस से आम वात भी नष्ट हो जाता है। **सेवन विधि**-- २ तोला क्वाथ को आध सेर पानी मे औटावें जब आधपाव रहे तब छान कर पीले। यह क्वाथ प्रातः काल ही पीना चाहिये। यदि दस्त कम हों तब प्रतिदिन पीते रहें यदि दस्त अधिक हों और सहन न होसकते हों तब १ दिन बीच में छोड़ अर्थात् तीसरे दिन पीते रहें। यदि दस्त न हों तब २ तोले के स्थान में ३ तोले की मात्रा कर देनी चाहिये।

अर्क
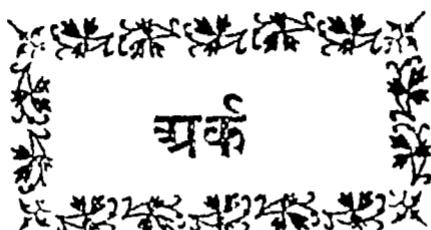
जो सुकुमार स्त्री पुरुष क्वाथ, कड़वे चूर्ण नहीं सेवन कर सकते उनके लिये भवका में क्वाथ, चूर्ण को अष्टगुण जल मिश्रित कर खींच लेते हैं। यह खिचा हुआ अर्क देखने में स्वच्छ जल के समान होता है तथा पीने में भी कड़वा नहीं होता, चाहे कड़वी ही औषधियों का अर्क क्यों न खींचा गया हो। किन्तु लाभ क्वाथ की अपेक्षा कुछ विलम्ब से होता है।

महामंजिष्ठादि अर्क

अष्टादशेषु कुष्ठेषु वातरक्तार्दिते तथा।
उपदंशे श्लीपदेच प्रसुप्तौ पक्ष घातके॥

धन्वन्तरि।

महामंजिष्ठादि अर्क—यह मजिष्ठादि क्वाथ का भवका मे खिचा हुआ अर्क है। जो सुकुमार स्त्री पुरुष क्वाथ नहीं पी सकते हैं उन्हें यह विशेष उत्तम है। यह कुष्ट वातरक्त उपदंश श्लीपद पक्षाघात प्रभृति रक्त विकार के लिये अति उत्तम है।

सेवनविधि—एक एक औंस (अर्थात् ढाई २ तोला) अर्क प्रातः साय मधु मिला कर पीना चाहिये।

द्राक्षादि अर्क

धातुस्थमस्थि मज्जास्थं ज्वरं सर्व्व भवं तथा।
कामलं ग्रहणीं चैव अतिसारं हलीमकम् ॥

धन्वन्तरि।

द्राक्षादि अर्क— यह द्राक्षादि क्वाथ का भवका में खिंचा हुआ अर्क है। इस के सेवन से ज्वर, विषमज्वर, जीर्ण ज्वर, कामला संग्रहणी तथा अतिसार के साथ आने वाला ज्वर अवश्य नष्ट होजाता है। **सेवनविधि**-ढाई २ तोला अर्क प्रातः और साय काल सेवन करना चाहिये। अधिक निर्बल रोगी एवं बालकों को एक २ तोला अर्क देना चाहिये।

महारास्नादि अर्क

अन्त्रवृद्धौ तथाध्माने जंघा जानुगतेऽर्दिते।
शुक्रामये मेढ्ररोगे वन्ध्या योन्यामयेषुच ॥

धन्वन्तरि।

महारास्नादि अर्क—यह अर्क आमवात तथा वात व्याधि के लिये विशेष उपयोगी है। इसके साथ महा योगराजगुग्गुल प्रभृति वात नाशक रस सेवन करने से विशेष लाभ होता है। **सेवनविधि**—ढाई २ तोला अर्क प्रातः और सायं काल अथवा आवश्यक समय पर देना चाहिये यदि महा योगराज गुग्गुल भी देना हो तब गोली १ निगल ऊपर से पीना चाहिये।

दशमूल का अर्क

अविपाकेऽति तन्द्रायाँ
पार्श्वरुक् श्वास कासके॥
धन्वन्तरि।

दशमूल का अर्क—सुकुमार तथा निर्बल स्त्री की प्रसूत के समय विशेष उपयोगी है। त्रिदोष में भी व्यवहार किया जाता है। त्रिदोष के समय श्वास, कफ़ की अधिकता हो तब यह विशेष उपकारी है। **सेवनविधि**-मात्रा १ तोला से २॥ तोला पर्य्यन्त। समय—प्रातः सायकाल या आवश्यक समय पर।

सुदर्शन अर्क

शीतज्वरे काहिकादीन् मोहं तन्द्राँ भ्रमं तृषाम्।
श्वासं कासं च पाण्डुं च हृद्रोगं हन्ति कामलाम्॥
धन्वन्तरि।

सुदर्शन अर्क—आज कल के वैद्य सुदर्शन चूर्ण की जगह सुदर्शन अर्क का विशेष व्यवहार करने लगे हैं। यह अर्क विषम ज्वर और जीर्ण ज्वर के लिये अति प्रसिद्ध है। इसके साथ विषम ज्वरान्तक लोह सेवन करने से अति शीघ्र लाभ होता है

सेवनविधि—मात्रा १ से २॥ तोला प्रातः और सायंकाल। यदि विषम ज्वरान्तक लोह सेवन करना हो तब एक वटी निगल कर ऊपर से अर्क पीना चाहिये।

चूर्ण

चूर्ण नवीन और बारीक कुटे हुए होने चाहिये जिस से वह आसानी से फांके जासकें। चूर्ण वर्षा के बाद गुणहीन हो जाते हैं अतः वर्षा बाद फेंक देने चाहियें। हमने जो गुण लिखे हैं वह ऐसे ही चूर्ण के हैं जो नवीन और बारीक कुटे हुए है तथा जिन में काष्ट औषधि भी नवीन डाली गई हैं। गुणहीन गली सड़ी नकली काष्ठ औषधि डालकर बनाये हुये चूर्ण व्यवहार में नहीं लाने चाहिये।

महा सुदर्शन चूर्ण

सुदर्शनं यथा चक्रं दानवानाँ विनाशकम्।
तथा ज्वराणां सर्वेषामिदं चूर्णं प्रशस्यते॥

शार्ङ्ग, मणि, भाव, तरंगिणी, बृहन्नि, निघन्टु।

महा सुदर्शन चूर्ण—यह ज्वर विषमज्वर प्राकृत ज्वर(मैलेरिया फीवर) जीर्ण ज्वर की प्रसिद्ध और चमत्कारिक औषधि है। इस चूर्ण का उपयोग सम्पूर्ण भारतवर्ष में होता है। वह यकृत प्लीहा युक्त ज्वर और धातुओं में टिकी हुई ज्वर की उष्मा को निकालता है अनुपान—गरम पानी के साथ फाँकना चाहिये

अथवा १ मात्रा चूर्ण को आधपाव पानी में पीस छान गरम कर पिलाना चाहिये अथवा आधपाव गरम पानी कर उस में १ मात्रा चूर्ण डालकर ढकदें ढका होने पर छान लेना चाहिये जिस प्रकार कि चाय बनाई जाती है। समय-प्रातः सायंकाल अथवा आवश्यक समय पर। मात्रा—१॥ माशे से ३ माशे पर्य्यन्त **सेवनविधि**—चढे हुये ज्वर उतारने के लिये इसकी चाय बनाकर और उस में सज्जी खार रत्ती ४ डालकर पिलाने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है। ज्वर के वेग से १ घंटे पूर्व फंका देने से ज्वर नहीं बढ़ता। विषम ज्वर में — विषमज्वरान्तक लोह १ गोली खिला ऊपर से पिलाने पर विशेष लाभ होता है।

ज्वर भैरव चूर्ण

प्रथग दोषाँश्च विविधान् समस्तान् विषमज्वरान्।
द्वन्दजान् सन्निपातोत्थान् मानसानपि नाशयेत् ॥१॥

भैषज्य रत्नावली।

ज्वर भैरव चूर्ण—यह चूर्ण महा सुदर्शन चूर्ण के ही समान सब प्रकार के ज्वरों के लिये उत्तम औषधि है। इसमें अभ्रक-भस्म, लोह-भस्म आदि बल बर्द्धक और अनेक रोग नाशक रसायन औषधियाँ भी पड़ती हैं अतः यह और भी उत्तम तथा शीघ्रही लाभ करने वाला है।

सेवनविधि—महा सुदर्शन चूर्ण केही समान है।

निम्बादि चूर्ण

चातुर्थिकं महा घोरं सततं संततं दिवा ।
धातुस्थंच त्रिदोषोत्थं ज्वरं हंति न संशयः ॥१॥

भाव प्रकाशः ।

निम्बादि चूर्ण—यह चूर्ण पित्तप्रकृति वालों को उत्तम है। प्राकृतज्वर (मैलेरियाफीवर) विषमज्वर, जीर्ण ज्वर के लिए लाभदायक है। तथा मन्दाग्नि, पेटकाफूलना, भूक न लगना, आदि उपद्रव भी नष्ट हो जाते हैं **सेवनविधि**-प्रातः और सायं काल तीन तीन माशे चूर्ण गरम जल के साथ फांकना चाहिये।

वृहत गंगाधर चूर्ण

ज्वरमष्ट विधं हन्याद तीसारं सुदुस्तरम् ।
ग्रहणीं विविधाञ्चैव कोष्ठ व्याधिहरं परम् ॥

भैषज्य, भाव, शार्ङ्ग, वृहन्नि, मणि, गद।

बृहत् गंगाधर चूर्ण—अतीसार, रक्तातिसार आमातिसार संग्रहणी, रक्तसंग्रहणी, के लिए प्रसिद्ध औषधि है। प्रातः सायंकाल। जल के साथ अथवा साठी चावल के पानी के साथ फाँकना चाहिये।

गंगाधर चूर्ण

ज्वरञ्च विविधं हन्ति तृष्णां कासञ्च दुर्जयम् ।
अरुचिं पाण्डुरोगञ्च हन्यादेव न संशयः ॥

भैषज्य—रत्नावली

गंगाधर चूर्ण—मध्यम—यह वृहत् गंगाधर चूर्ण के समान ही गुणवाला है। तथा तृष्णा, पांडु रोग के लिये भी उत्तम है। पित्त प्रकृति वालों के लिए यह विशेष उत्तम है। **सेवनविधि** वृहत् गंगाधर चूर्ण के समान ही है।

कुमकुमादि चूर्ण

अजीर्ण नाशयत्याशु नष्टाग्नेश्चाग्नि दीपनम् ।
सर्व रोग विनाशाय चरकेण प्रभाषितम् ॥१॥

—मणि, रस ।

कुमकुमादि चूर्ण—मन्दाग्नि, अतीसार, संग्रहणी और इन के साथ रहने वाले ज्वर, खाँसी, कफ को नष्ट करने के लिये अति उत्तम प्रयोग है। इस में कस्तूरी, केसर आदि मूल्यवान औषधियाँ डाली जाती हैं। **सेवनविधि**—प्रातः और सायं-काल एक एक माशे दुग्ध के साथ फाँकना अथवा मधु के साथ चाटना चाहिये।

नोट—गौ का दुध धारोष्ण अथवा गरम किया हुआ मिश्री डाल कर लेना चाहिये ।

जातीफलादि चूर्ण

अस्य प्रभावद् ग्रहणी कासश्वास रूचि क्षयाः ।
वातश्लैष्म प्रतिश्यायाःप्रशमं यान्ति वेगतः ॥१॥

तरंगिणी, भाव, योग, शार्ङ्ग, वृहन्नि ।

जातीफलादि चूर्ण—यह मन्दाग्नि, संग्रहणी, क्षय, ज्वर, कास, कफ नाशक है । यह जीर्णज्वर और क्षय की उस अवस्था में जब कि दस्त पतला हो अथवा १—२ अधिक हो जाते हों तब यह विशेष लाभ देता है ।

सेवन विधि—प्रातः और सायंकाल अथवा भोजनोपरान्त एक अथवा १॥ माशे चूर्ण मधु माशे ६ में मिला कर चाटना चाहिये ।

लवण भास्कर चूर्ण

श्लेष्मवातं वात गुल्मं शूल मन्दाग्न्यरोचकान् ।
अन्यानपि निहन्त्याशु रोगाँल्लवण भास्करः ॥१॥

तरंगिणी, भाव, निघन्टु, रत्न, चक्र, वंग,
भैषज्य, गद, मणि वृन्द योग ।

लवणभास्कर चूर्ण—यह अजीर्ण, मन्दाग्नि, संग्रहणी, तथा उदर विकार की प्रसिद्ध औषधि है । अजीर्ण और संग्रहणी

में होने वाले दस्त तथा क्षुधा (भूक) की कमी इससे नष्ट हो जाती है। शूल, गुल्म अमलपित्त के लिये भी उत्तम है। **सेवनविधि**—जिनको अजीर्ण, संग्रहणी, आदि में दस्त हों उन्हें चूर्ण फाँक ऊपर से तक्र (मठा) (तक्र गौ का हो) तथा उस में काली मिर्च जीराभुना, सेंधा निमक यह डालकर पीना चाहिये। प्रातः और सायङ्काल। दस्त न होते हों तथा मलावरोध हो तब गरम जल के साथ भोजनोपरान्त सेवन करना चाहिये। मात्रा १॥ माशे से ३ माशे पर्य्यन्त।

कपित्थाष्टक चूर्ण

चूर्णोऽतिसार ग्रहणी क्षय गुल्म गलामयान्।
कासं श्वासारुचिं हिक्कां कपित्थाष्टकमिदं जयेत् ॥१॥

चक्र, शार्ङ्ग, भाव, मणि, योग, वाग्भट्ट बङ्ग।

गद, निघन्टु वृहग्नि।

कापित्थाष्टक चूर्ण—पित्त की संग्रहणी अतिसार, के लिये उत्तम है जिनको क्षय, गुल्म कास, श्वास, हिक्का दस्त होते हों उनके लिये भी उत्तम है। **सेवन विधि**—प्रातः और सायं काल तीन तान माशे जल के साथ अथवा साठी चावल के पानी के साथ फाँकना चाहिये।

चन्दनादि चूर्ण

अतिसारं तथा छर्दिं स्त्रीणाँ चापि रजोग्रहे ।
प्रच्युतानाँ च गर्भाणाँ स्थापनं परमिष्यते ॥१॥

भैषज्य, गद, रत्न, योग, तरंगिणी,
वङ्ग, बृहन्नि, निघन्टु ।

चन्दनादि चूर्ण—यह स्त्रियों के लाल और श्वेतप्रदर की प्रसिद्ध औषधि है। प्रदर के साथ होने वाले रोग, दर्द, दाह, दस्त, रक्तपित्त, रक्तार्श, आदि रोग इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं पित्त प्रकृति वाली स्त्रियों के लिये विशेष उपकारी है। गर्भ की अवस्था में होने वाले दस्त और प्रदर इस से नष्ट हो जाते हैं और गर्भ को भी कुछ हानि नहीं पहुंचती **व्यवहार** तीन तीन माशे प्रातः और सायंकाल, साठी चावल के पानी में मधु मिला कर उस के साथ फाँकना चाहिये ।

तालीसादि चूर्ण

कासश्वास ज्वर हरं छर्द्यतीसार नाशनम् ।
शोषाध्मानहरं प्लीहा ग्रहणी पाण्डु रोगजित् ॥१॥

भैषज्य, शार्ङ्ग, योग, तरंगिणी, गद, वंग, वृन्द,
चरक, चक्र, भाव, रत्न, वाग्भट्ट, निघन्टु ।

तालीसादि चूर्ण—यह प्रसिद्ध औषधि, ज्वर, कफ, खाँसी श्वास, अरुचि, आदि, रोग नाशक, और बल वर्द्धक है। **व्यवहार**—प्रातः सायं डेढ़ २ माशे मधु के साथ चाटनी चाहिये।

सितोपलादि चूर्ण

सुप्तजिह्वा रोचकिनं मन्दाग्नि पार्श्वशूलिनम्।
हस्त पादांश दाहेषु ज्वरे रक्ते तथोर्ध्वगे॥ १॥

योग, तरंगिणी, गद, वंग, वृन्द, चरक,
भैषज्य, चक्र, मणि, भाव, योग, रत्न
बृहन्नि, शाग, निघन्टु, वाग्भट्ट।

सितोपलादि चूर्ण—यह जीर्ण ज्वर, विषमज्वर, दाह युक्त-ज्वर, क्षय, कास, रक्तपित्त, आदि रोग नाशक है। मन्दाग्नि पार्श्वशूल, हाथ पावों की दाह के लिये भी उत्तम है। वैद्य अनेक औषधियों के अनुपान में भी इसका व्यवहार करते हैं। मालती बसन्त के साथ प्रायः इसका व्यवहार करते देखा गया है। और लाभ भी अधिक होता है। **सेवनविधि**—मात्रा १ माशे से ३ माशे पर्यन्त समय—प्रातः और सायंकाल। अनुपान—मधु घृत (घृत के स्थान पर मक्खन भी व्यवहार होता है) अथवा मधु ही के साथ भी चटाया जाता है।

कामदेव चूर्ण

न जरा बाधते देहं वच शुक्रक्षयो भवेत् ।
कामदेवाख्य चूर्णांहि सम्पूर्णं कुरुते तनुम् ॥

रसचिन्तामणि

कामदेव चूर्ण—पानी के समान पतले और मलिन धातु को श्वेत और गाढ़ा करदेता है। दस्त या पेशाब के साथ, पहले या पीछे धातु का जाना बन्द हो जाता है। धातु पात, धातुस्राव, धातुक्षीण, प्रमेह कमजोरी को नष्ट कर बल शुक्र की वृद्धि कर शरीर को कामदेव के समान कान्तिवाला बना देता है। **व्यवहार**—प्रातः और रात्रि को सोते समय छः छः माशे गौ के दूध के साथ फाँकना चाहिये। दूध गरमकर, ठण्डा कर मिश्री मिला जितना पचे उतना पीना चाहिये।

नोट—जिन को मलावरोध की शिकायत हो तथा मन्दाग्नि हो उन्हें नहीं सेवन करना चाहिये।

सामुद्रादि चूर्ण

वातोदरं गुल्ममजीर्णं भुक्त वातास्त्र कोपं ग्रहणीं प्रदुष्टाम् ।
अर्शांसि दुष्टानि च पाण्डुरोगं भगन्दरं चापि निहन्ति सद्यः

भैषज्य, वृन्द, वङ्ग, चक्र, रत्न, योग,
वृहन्नि, निघन्टु, गद, मणि ।

सामुद्रादि चूर्ण—यह अजीर्ण, शूल, मन्दाग्नि, अफरा, उदर रोग की प्रसिद्ध औषधि है। वातोदर, गुल्म, ग्रहणी मलावरोध तथा वातार्श के साथ होने वाला मलावरोध इस से नष्ट हो जाता है। **सेवनविधि**-मात्रा ३ माशे से ६ माशे पर्य्यन्त। **अनुपान** -घृत भोजन के पूर्व सेवन करना चाहिये अथवा भोजन के समय थोड़ी सी दाल में चूर्ण और घृत मिला ५-४ ग्रासों में खाकर पश्चात् भोजन करना चाहिये। उदर रोग में पथ्य ७ दिन थूहर के दूध की भावना चावलों में देकर और यूष बनाकर सेवन करें।

नोट—इस पथ्य के सेवन से दस्त और कभी कभी वमन भी हो जाया करती है तथा पेट में एंठन हो कर आंव भी निकलती है चिन्ता न करे।

बृहल्लवणादि चूर्ण

प्रमेह कासारुचि यक्ष्म पीनस क्षयास्त्र दाघ ग्रहणी त्रिदोषनुत।
हिक्कातिसारं प्रदरं गलग्रहं निहन्ति पाण्डु स्वरभंगमश्मरोम्॥१॥

योग चिन्तामणि।

बृहल्लवंगादि चूर्ण-यह ज्वर अरुचि, क्षय, प्रमेह, मन्दाग्नि, संग्रहणी, को नष्टकर बल वीर्य्य को बढ़ाता है। **व्यवहार**—प्रातः और सायं। एक एक माशे मधु के साथ चाटना चाहिये।

लवंगादि चूर्ण

यक्ष्माणं तमकं श्वासमतीसारमुरः क्षतम।
प्रमेहाऽरुचि गुल्मादीन् ग्रहणीमपि नाशयेत्॥ १ ॥
शार्ङ्ग, भाव, वङ्ग, गद, चक्र, मणि, रत्न।

लवंगादि चूर्ण—यह यक्ष्मा, श्वास, अतीसार, उरक्षत प्रमेह अरुचि गुल्म संग्रहणी नाशक और बल बर्धक है। **व्यवहार**—प्रातः और सायङ्काल एक २ माशे मधु के साथ चाटना चाहिये।

दशन संस्कार चूर्ण

वातहृन्न कृमि कर्ण शूल दहनं सर्वामयध्वंसनं।
दौर्गन्ध्यादि समस्त दोषहरणं दन्तस्य रोगाशानिः॥
धन्वन्तरि।

दशन संस्कार चूर्ण—मसूड़ों का फूलना, खूनका बहना, दांतों का हिलना इत्यादि दाँतों के रोगों को दूर करता है। नित्य प्रति मलने वाले दन्त रोग से पीड़ित नहीं होते; दाँत उज्वलहो जाते हैं। मुख सुगंधित रहता है। दाँत मजबूत रहते हैं।

व्यवहार--साधारणतः दाँतों से मलकर कुल्ला कर लेना चाहिये यदि दांतों में दर्द हो। तब सरसों के तेल के साथ मालिश कर गरम जल से कुल्ला करना चाहिये।

मसूड़े फूले हों, मुखमें छाले हों, तब गरम पानी में डाल कर कुल्ला करने चाहिये।

नारायण चूर्ण

तक्रणोदरिभिः पेयो गुल्मिभिर्वदराम्बुना।
आनद्धवाते सुरपा वातरोगे प्रसन्नपा॥ १॥

तरंगिणी, भाव, वृन्द, शार्ङ्ग जीवन।

नारायण चूर्ण—उदर रोग की प्रसिद्ध औषधि है। इस के सेवन से गुल्म, अफरा आदि रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

सेवनविधि-यदि इस चूर्ण में थूहर के दूध की १ भावना देदी जाय तब तीक्ष्ण रेचन हो जाता है। भावना देने पर मात्रा ४ रत्ती से १॥ माशे पर्यन्त। विना भावना के चूर्ण की मात्रा १॥ माशे से ६ माशे पर्यन्त। प्रातः तथा सायंकाल। उदर रोग में तक्र के साथ। गुल्म में वेर की छाल के क्वाथ के साथ। वायु के रुकाव में सुरा के साथ।

पुष्यानुग चूर्ण

योनिदोषं रजोदोषं श्वेतं नीलं सपीतकम् ।
स्त्रीणाँ श्यावारुणं यच्च त त्प्रसह्य निवर्त्तयेत् ॥१॥

भैषज्य, वृन्द्र, रत्न, बृहन्नि ।

पुष्यानुग चूर्ण—यह चूर्ण रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर कुक्षिशूल योनिशूल के लिये विशेष उपयोगी है । **व्यवहार**-प्रातः और सायंकाल तीन २ माशे साठी चावल के पानी के साथ फाँकना चाहिये ।

अविपत्तिकर चूर्ण

अम्ल पित्तं निहन्त्याशु विवन्धे मल मूत्रयोः ।
अग्निमान्द्य भवान् रोगान् नाशये दविकल्पतः ॥१॥

भैषज्य, भाव, बृहन्नि, निघन्टु ।

अविपत्तिकर चूर्ण–यह अम्लपित्त और मन्दाग्नि की प्रसिद्ध औषधि है दस्त और मूत्र को साफ लाने वाली है । मात्रा माशे **सेवनविधि**-२ से ६ तक अनुपान जल । समय भोजन के प्रथम तथा मध्य में अथवा प्रातः सायं सेवन करना चाहिये ।

तैलों को शुद्ध और साफ़ करके बनाने चाहियें। जहां शास्त्रों में सरसों, अंडी, तिल आदि का तैल लिखा होता है वहां वैसाही तैल डालना चाहिये। गुण हीन होने पर तैल रद्दी कर देने चाहिये। खुशबूदार तैल तिल पर बनाने चाहियें।

सेवनविधि—तैल प्रायः मर्दन ही किये जाते हैं खुशबूदार तैल प्रायः शिर में ही डाले जाते हैं और शरीर से मालिश भी किये जाते हैं। यह स्नान से १५ मिनट पूर्व ही व्यवहार करने चाहियें। दर्द नाशक तैल—दर्द के स्थान पर और वात व्याधि में सम्पूर्ण शरीर में भी मले जाते हैं। यदि दर्द के स्थान में मले जायं तब मलने के पश्चात् अंडी, धतूरे, आक, इन में प्राप्त हों उस के पत्ते बांध देने चाहियें।

दर्द नाशक तेलों के लगाने के पश्चात् स्नान नहीं करना चाहिये ज्वर क्षय, ग्रहणी आदि के तेलों को सम्पूर्ण शरीर से मलने चाहियें। ज्वर में तेल लगाने के पश्चात् स्नान नहीं करना चाहिये ग्रहणी आदि जिन में ज्वर न हो उन रोगों में तेल की मालिश के आध घन्टे बाद स्नान करना चाहिये।

नोट—जिन रोगों में तेल लगाकर स्नान न किया जाय उन में दूसरे दिन अथवा ५—७ घन्टे बाद गरम जल में कपड़ा भिगोकर और निचोड़ कर शरीर साफ़ करलेना चाहिये।

नारायण तैल

यथा नारायणो देवो दुष्ट दैत्य विनाशनः।
तथेदं वात रोगाणं तैलं नारायणं स्मृतम्॥

मणि, वृन्द; तरंगिणी, भाव, रत्न,
निघन्टु, शार्ङ्ग, गद, चक्र।

नारायण तैल—वायु के विकारों के लिये प्रसिद्ध तैल है सन्धियों का दर्द अथवा शरीर के किसी अवयव का दर्द शरीर का जकड़ जाना लकवा पक्षाघात आदि सब प्रकार की वात व्याधि और वातरोग में विशेष लाभप्रद है। यह तेल लकवा वारे को कान, नाक, में भी डालना चाहिये। और दुग्ध के साथ माशे छः छः खिला भी सकते हैं अर्थात यह तेल खाने और लगाने दोनों के काम में आता है।

महा विषगर्भ तैल

भृग्नोरु कोटि जंघानाँ सन्धानं श्रेष्ठ मेवच।
गृध्रसी च महावातान् सर्वाङ्ग ग्रहणं तथा॥१॥

भाव. योग, वृहन्नि, निघन्टु।

महाविषगर्भ तैल—यह तैल कान का दर्द, कान की सूजन उरःस्थम्भ, संधिवायु आदि वात जन्य रोगों के लिए प्रसिद्ध हैं। यह सूजन सहित सब दर्द को शान्ति कर देता है। यह तैल कान के दर्द के लिये कान में डालना चाहिये। और वायु विकारों में शरीर से मलना चाहिये।

विषगर्भ तैल

सर्वेषु वात रोगेषु सदाभ्यङ्गो विधीयते।
सन्धिवाते सन्निपाते त्रिक पृष्ठे कटिग्रहे ॥ १ ॥

योगचिन्तामणि।

विषगर्भ तैल—यह भी वात व्याधि के लिये प्रसिद्ध है वायु दोष से शरीर के किसी स्थान में दर्द हो इसके मलने से तत्काल शान्ति हो जाता है। कुक्षिशूल और पसुली शूल के लिये भी उत्तम है। जिस जगह दर्द के चसके चलते हों उस जगह मलने से बहुत ही जल्द बन्द होजाते हैं।

मोंम का तैल

मधुच्छिष्टोद्भवंतैलं हेतिवातानेनकथात्।
मर्द नेनास्य तैलेन कोजोवोन सुखंलमेन ॥ १ ॥

धन्वन्तरि

मोम का तैल—यह मोम का खालिस तैल है। वात व्याधि पर मशहूर दवा है। मलते २ नसों में बहुत जल्द प्रवेश करजाता है हाथ पैर पीठ कमर पसली जङ्घाआदि किसी स्थान में दर्द हो इसके मलते२ दूर हो जाता है पक्षाघात (लकवा) उरःस्तम्भ आदि वात रोगों में विशेष गुण करता है इसके साथ २ यदि महा योगराजगूगल भी सेवन किया जाय तब विशेष प्रभाव दिखाता है।

हिमसागर तैल

शोषिणाँ लम्ब जिह्वानाँ तथा मिन्मिन भाषिणाम्।
अत्यन्त दाह युक्तानाँ क्षीणानां वात रोगिणाम् ॥१॥

भैषज्य, भाव।

हिमसागर तैल—इसकी मालिश करने से चोट का दर्द पंगुता (लगड़ापन) हनुमन्यादि विकृति निर्बलता शरीर की दाह वात जन्य और पित्तजन्य शरीर का दर्द नष्ट होता है। पागलपन में शिर से मलने से विशेष लाभ होता है। प्रलापक सन्निपात में भी शिर में मलना हितकारक है।

चन्दनादि तैल

अपस्मारं ज्वरोन्मादं कृत्या लक्ष्मी विनाशनम्।
आयुः पुष्टिकरञ्चैव वशीकरण मुत्तमम् ॥ १ ॥

चक्र, भैषज्य, वृन्द, रत्न, योग, बङ्ग, निघन्टु।

चन्दनादि तैल—यह तैल पुराना ज्वर, खाँसी, क्षय, रक्तपित्त उरःक्षत, आदि रोगों को नष्ट कर शरीर को वलवान कान्तिवान बनाता है। निरोग्य अवस्था में यह तैल प्रतिदिन मालिश करते रहने से उपरोक्त रोगों का भय नहीं रहता शरीर पुष्ट होजाता है। इसमें मन्द २ खुशबू भी आती है।

लाक्षादि तैल

अस्याभ्यङ्गात्प्रशाम्यन्ति सर्वेऽपि विषमज्वराः ॥
कण्डूं शूलं च दौर्गन्ध्यं गात्राणां स्फुरणं जयेत् ॥ १॥

शार्ङ्ग, गद, वृन्द, तरंगिणी, भाव, वङ्ग।

लाक्षादितैल—इस तैल के मलने से पुराना ज्वर विषमज्वर क्षय नष्ट होजाता है, ज्वर की टिकी हुई उष्मा वाहर निकल कर नष्ट होजाती है। कंडू शूल शरीर की दुर्गन्ध नष्ट होजाती है शरीर में वल और फुर्ती आती है।

किराताादि तैल

लोहानं पाण्डु श्वयथुं नाशयेन्नात्र संशयः।
नास्ति तैल वरञ्चास्मात् ज्वरोदर्य कुलान्तकृत् ॥१॥

भैषज्य, रत्नावली।

किरातादि तैल— यह धातुगत ज्वर, कामलौ संग्रहणी युक्त ज्वर, श्वास, प्लीहा पाँडुरोग में मालिश कियाजाता है।

कुमारी तैल

शमये दर्दितं गाढं मन्यास्तम्भ शिरो गदान् ।
तालु नासादि पातं तु शोष मूर्च्छा हलीमकम् ॥ १ ॥
भाव प्रकाश ।

कुमारी तैल—यह शिर शूल के लिये विशेष चमत्कारिक औषधि है। शिर और मस्तिष्क दर्द तो मलते२ दूर हो जाता है। मन्यास्तम्भ तालु रोग में मलने से लाभ करता है पुराने शिर दर्द में शिरोवस्ति में इसे व्यवहार करना चाहिये।

षट्बिन्दु तैल

षड्विन्दवो नासिकयोप युक्ताः सर्वांश्चिहन्युः शिरसोविकारान्
च्युतांश्च केशान् स्खलितांश्चदन्ता नुद्धद्ध मूलांश्च दृढीकरोत ॥
मणि, चक्र, रत्न, भैषज्य, योग,
भाव, वङ्ग, तरंगिणी; गद, निघन्टु ।

षटबिन्दु तैल- इस तैल की तीन तीन बूंद दोनों नथुनों में डालने से सब प्रकार का पुराना शिर शूल आधाशीशी नष्ट हो जाती है केश काले रहते हैं तथा असमय मे नही पकते दांतों की जड़ मज़बूत हो जाती है।

कन्दर्प सार तैल

अष्टादश विधं कुष्ठं ग्रन्थि मज्जा गतं तथा ।
हस्तपादाङ्गुलौ सन्धि गलितं सर्व्व सन्धिषु ॥ १ ॥

भैषज्य, रत्नावली ।

कन्दर्पसार तैल—यह तैल १८ प्रकार के कुष्ठों में लाभ दायक है ग्रन्थि और मज्जागत कुष्ठ, हाथ पैर की अंगुलियों का गलजाना, किसी स्थान में मांस अधिक बढ़ जाना, नाक और कान की विकलता, त्वचा का खराब होजाना, फोड़ा, घाव, विष्फोटक, कंठ माला, भगन्दर, आदि सब ही प्रकार के रक्त के विकार और त्वचा के विकार इसके लगाने से दूर हो जातेहैं । **व्यवहार**—इस की मालिश की जाती है तथा रुई का फोहा बना तैल में भिगोकर बाँधा जाता है ।

वृहत् काशीसादि तैल

क्षारवत्पातय त्येतदर्शांस्यभ्यङ्गतो भृशम् ।
वलोर्न दूषयत्येतत् क्षार कर्म्म करं स्मृतम् ॥१॥

शार्ङ्ग, भाव, गद, वृहन्नि,

वृहत् काशीसादि तैल—जिस प्रकार क्षार कर्म से अर्श अर्थात् बवासीर के मस्से गिरआते हैं । उसी प्रकार इसके

लगाने से मस्से गिरजाते हैं। इस को शौच के पश्चात रुई के फोहा में लगाकर गुदा में रख लेना चाहिये। अथवा गुदा में इसकी पिचकारी देनी चाहिये।

माष तैल

पक्षाघातेऽर्दितेवाते कर्ण शूले च दारुणे।
मन्दश्रुतौचाश्रवणे तिमिरेच त्रिदोषजे ॥ १ ॥

भैषज्य, निघन्टु, वृहन्नि,

माष तैल—यह तैल पक्षाघात, कर्णशूल, हाथ शिरका काँपना आदि वात जन्य रोग में मालिश करना चाहिये कर्ण शूल में सोते समय कान में डालना उत्तम है।

दार्व्यादि तैल

कर्ण शूलं कर्ण नादं वाधिर्य्यं पूति कर्ण कम्।
कर्ण क्ष्वेडं जंतुकर्णं कर्णयाकञ्च दारुणम् ॥ १ ॥

भैषज्य रत्नावली।

दार्व्यादितैल—यह तैल सोते समय कान में डालने से कान का दर्द, कान की आवाज वहरापन आदि कान के समस्त रोग नष्ट होजाते हैं। कान में डाल आध घन्टे लेटा रहना परम आवश्यक है।

कट्फलादि तैल

अर्दित मामवाँतच तथैवार्द्धाव भेदकम्

तैलमेतत् प्रयोक्तव्यं सर्वव्याधि निवारणम् ।

रसायन सार ।

कट्फलादि तैल—इसके मलने से और बृहत् योगराज के सेवन से उर:स्तम्भ नष्ट होजाता है तथा और भी वात जन्य रोगों में लाभ देता है। उर:स्तम्भ में हमारा विशेष अनुभूत है इसकी मालिश कर भेड़ के दुध का खोवा बनाकर उससे सेक करना चाहिये।

वृहत् शुष्क मूलादि तैल

नानाशोथविनश्यन्ति वातपित्त कफोद्भवा: ।

अवश्यंनिर्जरा देहा भविष्यन्ति न संशय: ॥ १ ॥

बृहत् शुष्कमूलादि तैल—यह सब प्रकार की सूजन के लिये विशेष उपयोगी है। शोथ रोग का तो प्रसिद्ध और चमत्कारिक तैल माना जाता है। शोथ (सूजन) के स्थान में मलने से सूजन जाती रहती है यदि इसके साथ ही खाने को पुर्ननवादि क्वाथ और पुर्ननवादि मांडूर भी दिया जाय तब शीघ्र लाभ होता है।

ग्रहणी मिहिर तैल

हन्ति सर्व्वा नतीसारान् ग्रहणी सर्वरूपिणीम् ।
ज्वरं तृष्णां तथा कासं हिक्कां श्वासं वमि भ्रमिम् ॥१॥

भैषज्य रत्नावली

ग्रहणी मिहिर तैल-इसकी मालिश से सर्वप्रकार का पुराना अतीसार, ग्रहणी, ज्वर, तृष्णा, कास, हिक्का, श्वास, वमन, और भ्रम रोग नष्ट होजाता है। खाने की औषधि के साथ इसकी मालिश विशेष लाभ प्रद रहती है।

वृहत् मरिचादि तैल

पामा विचर्चिका कन्डु दद्रु विस्फोटकानिच ।
वलितं थलितं छापानीली व्यङ्गत्व मेवच ॥ १ ॥

मणि, चक्र, भैषज्य, रत्न, निघन्टु
भाव, मणि, वंग, वृन्द ।

वृहत् मरिचादि तैल—इसकी मालिश करने से पामा कन्डु हाथ पैर तथा शरीर के फोडा फुन्सी खाज खुजली आदि चर्म विकार तथा वातरक्त कुष्ट आदि रोग नष्ट होजाते हैं।

पानीनाशक तिला

अनेनैव विधानेन शिश्न नाड़ी भवं जलम् ।
नश्यति नात्र संदेहो योगोयं परमोत्तमः ॥ १ ॥

नपुंसकामृतार्णव ।

पानी नाशक तिला—इन्द्री की नसों में पानी बढ़जाने से जिन रोगियों को नपुंसकता हो उनको इसे लगाना चाहिये। इस से दूषित पानी निकलकर नपुंसकता नष्ट हो जाती है और नसें मज़बूत होजाती हैं। **सेवनविधि**—सुपारी (इन्द्री का अग्र भाग)और सीवन छोड़ शेष स्थान पर इसे धीरे२ मलना चाहिये और ऊपर से बंगला अथवा जैसा मिले पान को चमेली के तैल से चुपड़ कर सेककर बाँधना चाहिए। इससे उपाड़ होगा छाले पड़ जायंगे जलन होगी पर चिन्ता की बात नहीं तिला लगाते ही रहना चाहिये यदि कष्ट सहन न हो तब तिला बन्द कर कपूर घृत में मिला कर लगाना इससे पीड़ा शान्ति होजायगी जब पीड़ा शान्ति होजावे तब पुनः तिलालगाना प्रारम्भ करदेना चाहिये इस प्रकार १ मास अथवा २१ दिन लगाने से अवश्य लाभ होगा साथ ही वीर्य्य वर्द्धक उत्तेजक नपुंसकता नाशक औषधि भी सेवन करते रहना चाहिये।

पिप्पल्यादि तैल

कट्यूरु पृष्ठ दौर्ब्बल्य मानाहं वंक्षणे रुजम् ।
पिच्छास्त्रावं गुदे शोथं वात वर्चो विनिग्रहम् ॥१॥

निघन्टु, भैषज्य, चक्र ।

पिप्पल्यादि तैल—यह अर्श (बवासीर) की प्रसिद्ध औषधि है। इसकी अनुवासन वस्ति देने से गुदा के और गुदामार्ग के सब रोग जैसे शूल, शोथ, मस्से, जलन आदि नष्ट हो जाते हैं इसकी गुदा में पिचकारी देनी चाहिये अथवा शौच के बाद रुई का फोहा तेल में भिगोकर गुदामार्ग में रक्खे।

इरिमेदादि तैल

क्रिमि दन्त दरण चलित प्रहृष्ट मांसावशीर्णेषु ।
मुख दौर्गन्ध्येषु च कार्य्यं प्रागुक्तेष्वाभयेषु तैल मिदम् ॥

भैषज्य, शार्ङ्गधर ।

इरिमेदादि तैल—यह सब प्रकार के दाँत रोगों के लिये आयुर्वेदीय प्रसिद्ध तैल है। दांत का दर्द, मसूड़ों की सूजन, मसूड़ों से पीय बहना खून निकलना जिसे डाक्टरी में पायरिया कहते हैं उसके लिये अनमोल है। **व्यवहार**—दांतों में मल कर गरम पानी से कुल्ला करना चाहिये।

सेवन योग्य तैल

यह तैल खाने और लगाने दोनों के काम में आते हैं दुग्ध के साथ या क्वाथ के साथ अथवा मिश्री के साथ सेवन किये जाते थे और दर्द के स्थान में मालिश किये जाते हैं ।

बेरोजा का तैल

अश्मरी मूत्रकृच्छ्घ्न वस्ति मेहन शूलनुत् ।
शोधनंरोपणं चैव मेढ्पा के प्रयोजयेत् ॥१॥

धन्वन्तरि ।

बेरोजा का तैल–इसके सेवन से सुजाक, मूत्रनली का घाव, मूत्र की जलन, मूत्रकृच्छ्र आदि विकार नष्ट होजाते है । यह तैल फोड़ा घाव के लिये भी उत्तम है । **व्यवहार विधि**–५ बूंद से २५ बूंद तक मिश्री के साथ खाना चाहिये । घाव को नीम के साबुन अथवा नीम के क्वाथ से साफ कर तैल का फोआ लगाना चाहिए ।

नारायण तैल—यह तैल भी सेवन किया जाता है। रास्नादि क्वाथ में मिलाकर अथवा दुग्ध में मिलाकर पीना चाहिये विशेष विवरण पूर्व लिखा जा चुका है।

गूगल का तैल

पक्षाघाते तथार्द्धाङ्गे गात्रकम्पेति दारुणे।
सर्वेषु वातरोगेषु सदाभ्यङ्गो विधीयते ॥१॥

धन्वन्तरि।

गूगल का तैल—यह खालिस गूगल से निकाला गया है। और वात व्याधि के लिये गूगल कितनी प्रसिद्ध औषधि है उससे निकाला तैल (अर्थात् सार भाग) वात व्याधि की कितनी उत्तम औषधि होगी यह कहने को आवश्यकता नही इस के खाने और लगाने से पक्षाघात उरः स्तम्भ लकवा सन्धि वात आदि आदि वात विकार नष्ट हो जाते हैं। इसकी मालिश दर्द स्थान पर होनी चाहिये। और ऊपर से अडी के पत्ता गरम कर बाँधने चाहिये। खाने में इस की मात्रा ५ से १५ बूंद तक है थोड़े से दूध में मिलाकर पीना और ऊपर से बिना तैल मिला दूध पीना तथा पान खाना चाहिये।

राल का तैल

सर्ज तेलंतु विस्फोट कुष्ठ दद्रु विनाशकम् ।
क्रमोन्कफंच वातं च माश ये दिति कोनित्तम् ।

धन्वन्तरि ।

राल का तैल—विस्फोटक कुष्ठ दद्रु (दाद) कृमि कफ और वात विकार को नष्ट करता है। आम वात के दर्द और सूजन इससे नष्ट हो जाती है **व्यवहार विधि**—गूगल के तेल के मुआफिक है दाद कुष्ठ आदि में इस को मलना चाहियं ऊपर से पत्ता वगैरह नहीं बांधना चाहियं।

गन्धक का तैल

तैल गन्धक सम्भवं च कफजे कासे तथे पीन से ।

धन्वन्तरि. ।

गन्धक का तैल-यह तैल कफ, खाँसी, श्वास में विशेष लाभ-दायक है। इस की मात्रा १ बूंद से ५ बूंद तक है। पान में कत्था चूना सुपारी आदि रख उसमें ही बूंद डालकर खाना चाहिये। खुशकी मालूम होने पर दुग्ध पीना चाहिये।

घृत प्राय: मिश्री के साथ अथवा दुग्ध के साथ सेवन किये जाते हैं। अग्नि घृत दाल के साथ भी सेवन किया जा सकता है और ब्राह्मी की शिर से मालिश भी की जा सकती है दुग्ध—औटा कर ठण्डा कर मिश्री मिला कर लेना चाहिए।

महा त्रिफलादि घृत

> गृध्रदृष्टिकरं सद्यो वल वर्णाग्नि वर्धनम्।
> सर्व नेत्रामयं हन्यात् त्रिफलाद्यं महद्धृतम्॥

भाव, योग, भैषज्य, वृन्द, चक्र
रत्न, गद, बृहन्नि निघण्टु, वंग।

महात्रिफलादि घृत—इस के सेवन से नेत्रों के समस्त रोग जैसे फुली जाला नजला रतौंधी परवाल नाखून सुर्खी पानी बहना नज़र की कमजोरी जल्दी २ आंख दुखना आदि नेत्र विकार दूर होते हैं और जिनको पास की वस्तु दूर दीखे धुन्धला दीखे अथवा सूक्ष्म वस्तु न दीखे या पढ़ने से आंखों के सामने अंधेरा होजाय पानी आजाय तारे दीखना एक दीपक के अनेक दीपक दीखना आदि आदि शिकायतें हों उनको अति

लाभदायक है इसके निरन्तर सेवन करने से गृद्ध के समान तेज दृष्टि होजाती है। इसके साथही साथ चन्द्रोदय बर्ती लगाना उत्तम है **सेवन विधि**-मात्रा ६ माशे से २ तोला पर्य्यन्त। मिश्री के साथ ऊपर से दुग्ध।

पञ्चतिक्तघृत

पञ्चतिक्त मिदं ख्यातं सर्पिः कुष्ठ विनाशनम्।
दुष्ट व्रणक्रमीनर्शः पञ्च कासांश्च नाशयेत्॥

भैषज्य, वृन्द, वृहन्नि, योग रत्न, निघंटु।

पंचतिक्तघृत—यह कुष्ठ, रक्त विकार और वायु दोष अर्थात् बात व्याधि के लिये उत्तम औषधि है। जिन रोगियों का रक्त दूषित होने से शरीर में दर्द हो उनको विशेष लाभ देता है। तथा उपदंश से होने वाली गठिया इस से दूर होजाती है। **सेवनविधि**—एक एक तोला गुनगुने पानी के साथ मिला कर पीवें ऊपर से पान अथवा २०, २५ भुने चना खावें।

फल घृत

प्रद्यन्ते तु सा स्थानं गर्भं गृह्णन्ति चासकृत्।
एतत् फलघृतं नाम योनिदोष हरं परम्॥

वङ्ग, भैषज्य, भाव।

फलघृत—यह प्रदर योनिरोग, गर्भाशय के समस्त रोग नष्ट कर संतान उत्पन्न कराने वाला है शास्त्रों में इस के गुण विशेष रीति से वर्णन किये गये हैं पर हमारे अनुभव में उपरोक्त गुण ही आये हैं। मात्रा १ तोला से ४ तोले पर्य्यन्त दुग्ध के साथ।

विन्दु घृत

कुष्ठगुल्ममुदावर्त्तं श्वयथुं सभगन्दरम्।
शमयत्युदराण्यष्टौ वृत्त मिन्द्राशनिर्यथा॥

भैषज्य, रत्न, वृन्द, भाव, योग।

विन्दु घृत—उदर, प्लीहोदर, शीफोदर, को उत्तम है मलावरोध नाशक है। रेचन हैं। दुग्ध में डालकर पीने से दस्त होते हैं। शास्त्रों में विन्दु मात्र सेवन का विधान है पर नहीं माशे ३ से तोले २ तक सेवन किया जासकता है किन्तु क्रमशः बढ़ाना चाहिये।

दूर्वादि घृत

मेढ्रे पायुगते वापि सर्वत्रैव प्रयोजयेत्।
प्रवृत्तं रोम कूपेभ्यो ह्यभ्यङ्गेन जयेद् ध्रुवम्॥

तरंगिणी, वङ्ग, गद।

दूर्वादि घृत—यह रक्त पित्त, क्षय, अर्श, आदि किसी रोग से रक्त आता हो इसके सेवन से वन्द होजाते हैं। जिन स्त्री पुरुषों के नाक में से प्राय: खून आता रहता है (जिसको नक्की छूटना कहते हैं) उनको इसके सेवन से और नस्य लेने से वडा लाभ होता है। मात्रा ३ माशे से १ तोला पर्य्यन्त अनुपान दुग्ध अथवा मिश्री मिलाकर सेवन करें।

सारस्वत घृत

हन्त्यष्टादश कुष्टानि अर्शांसि विविधानिच ।
घृतं सारस्वतं नाम बलवर्णाग्नि बर्द्धनम् ॥
चक्र, वंग भाव, भैषज्य, गद ।

सारस्वत घृत—इस घृतको ब्राह्मी घृत भी कहते हैं। यह बुद्धि और स्मर्ण शक्ति को बढ़ाने के लिये सर्व प्रधान औषधि है। मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने को, कंठ साफ करने को वाणी शुद्ध करने को भी उत्तम है। सेवनविधि—मात्रा ६ माशे से २ तोला तक अनुपान—दुग्ध के साथ अथवा मिश्री मिलाकर चटावें।

वृहत्धात्री घृत

सोमरोगं निहन्त्याशु तृष्णां दाहमरोचकम् ।
मूत्रकृच्छ्रञ्च कृच्छ्रञ्च बहुमूत्रं बिनाशयेत् ॥
रत्न, भैषज्य ।

वृहत् धात्री घृत—इसके सेवन से सोमरोग और श्वेत रक्त प्रदर कुक्षशूल योनि शूल नष्ट होते हैं। मूत्र कृच्छ्र, बहुमूत्र, तृष्णा दाह को भी उपयोगी है। **सेवन विधि** प्रातः सायंकाल एक एक तोला दुग्ध के साथ सेवन करावें।

अग्नि घृत

शोथं पाण्ड्वामयं कासं ग्रहणीं श्वासमेवच।
एतान् विनाशयत्याशु तमः सूर्य्य इवोदित ॥१॥

चरक, वङ्ग, गद, वृन्द, वृहन्नि, निघन्टु

अग्नि घृत—शोथ पान्डु, कास, मन्दाग्नि, संग्रहणी, श्वास, उदर, प्लीहा, गुल्म नाशक और अग्निवर्धक है जिनको मन्दाग्नि के कारण मलावरोध रहता हो उन्हें इसका सेवन विशेष लाभप्रद है। **सेवन विधि**—मात्रा ६ माशे से २ तोला पर्य्यन्त दाल के साथ या मिश्री के साथ सेवन करना चाहिये।

ब्राह्मी घृत

पुराणं मेध्यमुन्मादं ग्रहापस्मार नुद्धृतम् ।

वाग्भट्ट, गद

ब्राह्मीघृत—यह उन्माद और अस्पमार की प्रसिद्ध और चमत्कारी औषधि है । उन्माद में मस्तक में भी इसकी मालिश की जाती है । मात्रा ६ माशे से १ तोळा पर्य्यन्त दुग्ध के साथ ।

अशोक घृत

कुक्षिशूलं कटीशूलं योनिशूलञ्च सर्व्वजम् ।
नन्दाग्निमरुचिं पाण्डुं कृशतांश्वास कामलाम् ॥

भैषज्य, रत्नावली ।

अशोक घृत—यह सब प्रकार के प्रदर के लिये प्रसिद्ध और स्थाई लाभ देने वाला है । योनिशूल कुक्षिशूल, कटीशूल, मन्दाग्नि पान्डु, श्वास के लिये भी उत्तम है । **सेवनविधि**—दो दो तोला मिश्री मिलाकर चाटें ऊपर से दूध पीवें ।

अवलेह

अवलेह बनाते समय शुद्धता स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिये साथही खांड़ देशी और घी उत्तम व्यवहार करना चाहिये : विदेशी खांड़ घी कदापि अवलेह में नहीं डालना चाहिये। वर्षा में रक्खे अवलेह* गुणहीन हो जाते हैं। उन्हें फेंकदेने चाहिये।

च्यवनप्राश्य अवलेह

रसायनस्यास्य नरः प्रयोगात् लभेत् जीर्णोऽपि कुटी प्रवेशम्।
जरा कृतं रूपमपास्य सर्वं बिभर्ति रूपं नवयौवनस्य ॥ १ ॥

चरक, भाव, भैषज्य, बङ्ग; चक्र, गद, रत्न,
वृन्द, वाग्भट्ट, हारीत, योग, निघन्टु,
तरंगिणी, वृहन्नि, शार्ग।

च्यवन प्राश्य—कास श्वास, स्वरभंग रक्तपित्त क्षयरोग उरःक्षत अम्लपित्त संग्रहणी प्रमेह मूत्रकृच्छ आदि रोग में एक

*धन्वन्तरि औषधालय विजयगढ़ के बने अवलेह उत्तम होते हैं और उसके बनाने में उपरोक्त सबही बातों का ध्यान रक्खा जाता है। लेखक

चमत्कारिक औषधि है यह सौम्य औषधि होने पर भी अति शक्तिशाली है। इसके सेवन से ही वृद्ध च्यवनऋषि तरुणता-को प्राप्त हुए थे महर्षि अश्वनीकुमार ने महात्मा च्यवन के लिये ही प्रथम इसकी रचना की थी इससे ही इसका शुभनाम च्यवनप्राश्य हुआ यह रसायन है इसके सेवन से जो अपूर्व बल और क्रान्ति आती है यह भारत के सबही महोदय जानते हैं। ग्रीष्म ऋतु में स्वादिष्ट और ठण्डी खुराक है जिन लोगों के गरमी के दिनों में नाक से या मुख से या दूसरे रास्ते से खून (रक्त) जाता है। उनके लिये अमूल्य महौषधि है। इसके साथ स्वर्णपर्पटी का सेवन करने और पथ्य में केवल दुग्धपान करने से संग्रहणी अम्लपित्त नाश को प्राप्त होते है हमने देखा है कि कमज़ोर रोगी भी इसका सेवन कर ५-७ सेर दुग्ध पान करलेता है। स्त्रियों का वन्ध्या दोष इसके निरन्तर सेवन से नष्ट होता देखा गया है किसी भी प्रकार की निर्बलता इसके सेवन से नहीं रह सकती। मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने में अद्वितीय पदार्थ है। क्षय (तपेदिक) जैसे भयंकर रोग में धातुओं का क्षय रोककर बल यही देता है। जिन रोगियों के अस्थिमात्र शेष रहगये थे वह इसके सेवन से हृष्ट पुष्ट देखे गये हैं। शरीर को मोटा ताज़ा बनाने में इसके समान कोई भी औषधि यूनानी मिश्रानी डाक्टरों में नहीं आ-विष्कृत हुई है। इसकी प्रसंसा आज नहीं सहस्र वर्ष से ऋषि महर्षि गाते चले आते हैं आज भी भारत का ऐसा कोई वैद्य नहीं होगा जो इसके गुणों पर लुब्ध न हो।

वांसावलेह—यह कास श्वास की प्रसिद्ध औषधि है। गुल्म, प्रमेह, पांडु आदि रोगों में भी जब कि उनके साथ खाँसी हो उत्तम है। **सेवनविधि**-प्रातः और सायंकाल एक एक तोला चटाना चाहिये।

कंटकार्यवलेह

वातजं पित्तजं कासं द्वंदजं चिरकालजम्।
निर्हंतिनात्र संदेहो भास्करस्तिमिरंयथा ॥ १ ॥

शार्ङ्ग, निघन्टु, बंग, भाव, वृहन्नि।

कंटकार्यवलेह—यह भी वाँसावलेह के समान कास श्वास के लिये प्रसिद्ध है। कफाधिक कास में विशेष उपयोगी है। मात्रा ६ माशे से २ तोला पर्य्यन्त प्रातः सायंकाल चाटना चाहिये।

आर्द्रक खंड

इदमार्द्रक खण्डोऽयं प्रातर्भुक्तंव्यपोहति।
शीत पित्त मुदर्दश्च कोठ मुत्कोठमेवच ॥

भावप्रकाश।

आर्द्रकखंड—यह शीत, पित्त, उदर्द, कास, श्वास, कफ के लिये प्रसिद्ध है। अग्नि वर्द्धक और बल कारक भी हैं। मात्रा—६ माशे से २ तोला पर्य्यन्त। प्रातः सायं चाटना चाहिये।

क्षार

क्षार प्रायः शार्ङ्गधर संहिता के आधार और अपने अनुभव से बनाये जाते हैं इनको बनाते समय सफाई का विशेष ध्यान रक्खा जाता है जिससे रङ्ग में श्वेत बनते हैं। **सेवनविधि-** इन सब की सेवन विधि एक समान है अतः प्रथक २ नहीं लिखी जाकर यहाँ लिखते है। **मात्रा**—२ रत्ती से १ माशे पर्य्यन्त **अनुपान**—मिश्री, मधु, अथवा जल। प्रातः सायं या आवश्यक समय पर दे सकते हैं।

वज्रक्षार

गुल्मे शूले तथा जीर्णे शोथे शर्वोदरेषुच।
मन्दे वन्हौ उदावर्त्ते प्लीह्नि चापि परं हितम्॥

रसेन्द्र, वृहन्नि, सुन्दर, योग, निघन्टु
मणि, भाव, समुच्चय।

वज्रक्षार चूर्ण—इसके सेवन से उदर रोग, गुल्म, अजीर्ण १, शूल; मन्दाग्नि प्लीहा रोग नष्ट हो जाता है यह दीपन

सेवनविधि-भोजन के ३ घन्टे पूर्व अर्थात् प्रातः और ३ बजे सायंकाल के ६ माशे अथवा १ तोले की मात्रा से चटाना चाहिये ऊपर से दुग्ध गाय का या बकरी का औटा कर ठन्डा कर मिश्री मिलाकर पिलावें। यदि इसके साथ स्वर्णपर्पटी भी देनी हो तब एक एक रत्ती स्वर्णपर्पटी में १ खुराक च्यवनप्राश्य को मिलाकर चटावे ऊपर से दूध पिलावें। जहाँ अन्न पानी बन्द कर दुग्ध ही देना हो वहाँ चटाने के बाद ही दूध नहीं पिलावे जब भूक लगे तब पिलाना चाहिये।

कुशावलेह

प्रमेहान् विंशति हन्ति मूत्राघातांस्तथाश्मरीः।
हन्त्यरोचक मत्युग्रं बल पुष्टिकरं परम् ॥ १ ॥

भैषज्य, भाव, चक्र।

कुशावलेह—यह वीर्य्य विकार के लिये उत्तम है इस के सेवन से प्रमेह, सुजाक, मूत्रकृच्छ्, आदि रोग नष्ट होते हैं। पित्तप्रकृति वालों को विशेष लाभप्रद है। वीर्य्य में गरमी पहुँचने से जब वीर्य्य पेशाव के साथ जाने लगता है अथवा शीघ्र पतन होने लगता है तब इसके सेवन से वीर्य्य की उष्मा शान्ति हो वीर्य्यस्राव रुक जाता है। यदि इसके साथही साथ चन्दनासव भी सेवन किया जाय तब विशेष और शीघ्र लाभ होता है।

सेवनविधि-प्रातः सायं एक एक तोला अथवा दो दो तोला अवलेह चाटना चाहिये (यदि चन्दनासव भी सेवन करना हो तब) ऊपर से चन्दनासव तोले २ पानी तोले २ मिलाकर पीना चाहिये ।

कुष्माण्डावलेह

रक्तपित्तं ज्वरं कासं कामलां तमकं भ्रमम् ।
छर्दि तृष्णा ज्वरश्वास पाण्डुरोग क्षत क्षयम् ॥१॥

मणि, भाव, तरंगिणी, रत्न, निघन्टु,
वङ्ग. चक्र, शार्ङ्ग, वृन्द, भैषज्य,
गद योग, वृहन्नि ।

कुष्माण्डावलेह—यह अवलेह रक्त पित्त, क्षय, कास, अम्लपित्त, आदि रोग नाशक और बल बर्धक है। गरमियों में बलवर्धक और ठंडी खुराक है **सेवनविधि**-मात्रा १ तोले से ४ तोले पर्य्यन्त। दुग्ध के साथ प्रातः और सायं काल। दुग्ध बल के लिये ही अधिक व्यवहार करते हैं। रोग अवस्था में केवल अवलेह ही चटाते हैं।

बांसावलेह

पञ्चगुल्मन् प्रमेहांश्च पाण्डुरोगं हलीमकम् ।
जयंदर्शांसि सर्वाणि तथा सर्वोदराणिच ॥२॥

योग, मणि, भैषज्य, चक्र,
तरंगिणो, गद, वृहन्नि ।

और पाचन हैं। **सेवनविधि**-मात्रा १॥ माशे से ६ माशे पर्य्यन्त। वाताधिक में गरम जल के साथ, पित्ताधिक में घृत के साथ कफाधिक में गौ मूत्र के साथ। जिनमें तीनों दोष हों उस रोग में कांजी के साथ देना चाहिये। नोट—वाताधिक आदिसे ज्वर नहीं लेना उपरोक्त रोग में वात पित्त कफ कौनसा दोष अधिक दूषित है यह विचार करना चाहिये।

यवक्षार

यवक्षारो हिमः श्रेष्ठ शर्कराश्मरि कृच्छ्र जित्।
निहन्ति शूल वाताम पुस्त्वं गुलमादि जन्तुजित्॥

शालिग्राम, निघन्टु, भूषण।

यवक्षार—इसको सर्व सधारण में जवाखार कहते हैं। यह शीतल (ठंडा) है, मूत्र के साथ शर्करा जाना अश्मरी, पथरी रोग शूल, वात, आम, गुल्म, कृमि, आदि रोग को नष्ट करता है

सज्जीक्षार

स्वर्जिक्षार-कटुश्चोष्ण स्तीक्ष्णो गुलम विनाशकः।
शूले वार्त कफे चैव कृमी नाध्मान वातकम्॥

निघन्टु, रत्नाकर।

सज्जीक्षार—चरपरा, गरम, तीक्ष्ण गुलम नाशक तथा शूल; वात, कफ, के रोग कृमि, अफरा, वायु, उदर, को दूर करने वाला है। कान के दर्द में १ रत्ती क्षार कान में डाल ऊपर से ३—४ बूंद नीबू के रस की डालने से प्रथम थोड़ा दर्द होकर तत्काल शान्ति होजाता है। कान के अन्दर होने वाली फुन्सी

को फोड़ने के लिये भी उत्तम है। सज्जी से यह क्षार निकाला जाता है। अतः बाजारू क्षारों से विशेष गुण प्रद होता है।

अपामार्गक्षार—यह कफ को पतलाकर निकालने वाला है

बांसे का क्षार—यह कफ को निकालता है। खाँसी को नष्ट करता है।

कटेरी का क्षार—कफ प्रधान कास में हितकारी है।

तमाखू का क्षार—श्वास कास उदर रोग नाशक है।

कदली का क्षार—अमल पित्त उदर रोग नाशक है।

इमली का क्षार—अग्नि वर्धक शूल गुल्म नाशक है।

तिल का क्षार—पेशाव रुकने पर सलाई के मुआफिक काम देने वाला है पेशाव साफ होता है।

ढाक (पलास) क्षार-गुल्म शूल नाशक मूत्र प्रवर्त्तक है

आकका क्षार—उदर, गुल्म, प्लीहा, नाशक है।

केतकी क्षार—गुल्म यकृत कास नाशक है।

नोट—अपामार्गक्षार, बांसे का क्षार, कटेरी का क्षार, तमाखू का क्षार, चारों समान भाग मिलाकर श्वास-रोगी को देने से विशेष लाभ होता है यह कफ को जलाकर निकाल देते हैं। और श्वास का वेग शान्ति कर देते हैं।

मिश्रित औषधियां

नयनामृत सुरमा

तिमिरं पलटं काचं शुक्र मर्मार्जु नानिच।
क्रमात्पथ्याशिनो हन्ति तथाऽन्यानपिदृग्गदान् ॥

निघन्टु, योग, मणि, तरंगिणी, वृहन्नि।

नयनामृत सुरमा—यह नेत्र संबन्धी सब विकारों को नष्ट कर नेत्र की ज्योति को बढ़ाता है। तिमर पटल आदि के लिये विशेष उपयोगी है सलाई से दो समय लगाना चाहिये। बच्चों के भी लगाया जा सकता है।

भीमसेनी कपूर

भीमसेनी कपूर—योगरत्नाकर। यह नेत्र रोग के लिये प्रसिद्ध और लाभदायक है। मकरध्वज के अनुपान में जहाँ कपूर लिखा है वहाँ यही डालना चाहिये। आज कल बाज़ार में जो बरास कपूर आता है उस को ही वैद्य भीमसेनी कपूर समझ व्यवहार करते हैं यह उनकी ग़लती है। उन्हें चाहिये कि योगरत्नाकर ग्रंथ के अनुसार बना या विश्वासनीय फ़ार्मेसी से मँगाकर व्यवहार करें।

संखद्राव

द्रावयदखिलान्धातू न्वराटाँश्च न संशयः ।
शंखद्राव रसोनाम गुलमो दर हरः परः ॥

वृहन्नि, योग, निघन्टु ।

संखद्राव—यह संखद्राव गुलम रोग उदर शूल प्लीहा यकृत के रोगों को शीघ्र ही नष्ट करता है **सेवनविधि** — मात्रा ५ बूंद से १५ बूंद तक प्रातः सायंकाल अथवा भोजनोपरान्त अनुपान—ग्वार पाठे का रस अथवा गरम जल **सावधान** दाँत से न लगने पावे दाँत को हानि प्रद है ।

अनुभूत औषधियां

हमारे चिकित्सा काल में तथा माननीय पूज्य नारायण दास जी राधा वल्लभ जी वैद्य राज के जीवन भर में जो २ औषधियाँ विशेष रीति से निर्माण की गई थीं और जो हज़ारों हज़ारों रोगियों के रोग मुक्त करचुकी हैं तथा हमें यश धन दिला चुकी हैं उन्हीं अद्भुत अव्यर्थ सिद्ध औषधियों का यहाँ

वर्णन करते हैं साथ ही पाठकों से अनुरोध और प्रार्थना करते हैं कि वह इन्हें अपने रोगियों को दें उन्हें रोग मुक्त होने का अवसर दें और स्वयं यश धन उपार्जन करें।

मकरध्वज वटी

अर्थात्

निराश-बन्धु

रोगा क्रान्ताः निराशाः ये निर्बला वीर्य्य दोषिकाः।
तेषां निराश बन्धुर्हि बन्धु स्तुल्यो गदा पहः॥

धन्वन्तरि।

मकरध्वज वटी—आयुर्वेदीय चिकित्सा। सब से प्रसिद्ध और मूल्यवान औषधि मकरध्वज अर्थात् चन्द्रोदय है। यह गोलियाँ इस ही अनुपम रसायन द्वारा बनाई जाती हैं। इसके सेवन से बीसों प्रकार के प्रमेह, वीर्य का पतलापन, मूत्र के साथ, या स्वप्न के साथ वीर्य का जाना, दुर्बलता, नपुन्सकता स्तम्भन शक्ति का नाश, आँखों के सामने अन्धेरा होना, शिरशूल दस्त का साफ न होना, किसी काम में चित्त न लगना, नसों की कमज़ोरी, स्त्रियों का प्रदर, मूत्रकृच्छ, सोज़ाक़, मूत्र नली का दर्द, पेशाब का बार बार आना, आदि वीर्य–विकार दूर होते हैं। जो लोग चन्द्रोदय के गुणों को जानते हैं वे इन गोलियों के प्रभाव में सन्देह नहीं कर सकते। अनुपान भेदों

से यह अनेक रोगों को दूर कर सकती है। प्रमेह के साथ होने वाली खाँसी, जुकाम, सर्दी, कमर का दर्द, मन्दाग्नि, स्मरण शक्ति का नाश, आदि व्याधियां भी दूर होती हैं। क्षुधा बढ़ती है, शरीर हृष्ट पुष्ट होता है। जो लोग अनेक औषधियाँ खाकर हताश होगये हैं, जिनका विश्वास औषधियों से उठ गया है, उन निराश पुरुषों को यह औषधी बन्धु तुल्य सुख देती है।

सेवनविधि—प्रातः और रात्रि को सोते समय एक एक गोली निगल उपर से गौका दूध औंटाकर ठन्डा कर मिश्री मिला कर पीना चाहिये। ५, ७ दिन के बाद एक एक गोली की जगह दो दो गोली कर देनी चाहिये उसके ५, ७ दिन बाद फिर तीन तीन गोली कर देनी चाहिये। दूध गायका न मिले तब बकरी का और गाय बकरी दोनों का न मिले तब भैंस का लेना चाहिये।

कामदीपक तिला

हस्तामि घात संभूत मयोनि मैथुनोद्भवम्।
शैथल्यं नाशयत्याशु गोपनीयः प्रयत्नतः॥

धन्वन्तरि।

कामदीपक तिला—जिन रोगियों को हस्त मैथुन, बहु मैथुन आदि निन्दनीय कर्मों से नसों में कमज़ोरी निर्बलता लिंगेन्द्रिय का पतलापन टेढ़ापन शिथिलता आदि विकार हों उन्हे यह कामदीपक तिला अवश्य लगाना चाहिये इससे उपरोक्त सब

विकार दूर होकर काम शक्ति प्रज्वलित होती है। इसके साथ २ सिद्ध मकरध्वज और कनक सुन्दरासव अथवा मकरध्वज वटी का सेवन करना बहुत ही लाभदायक है।

व्यवहार विधि—सुपारी और सीवन छोड़ बाक़ी सब इन्द्री पर रुई की फुरफुती से लगा कर उंगली से धीरे २ पन्द्रह मिनट मलता रहे और उसके बाद बंगला अथवा जैसा मिले पान ले उसे गरम कर इन्द्री पर बाँध दें। पानी इन्द्री पर न पड़े यह ध्यान रहे यदि स्नान करना हो तब गरम पानी से स्नान करें। यह उपाड तो करता नहीं पर किसी किसी को करभी देता है यदि उपाड हो तब चिन्ता न करे यदि जलन वगैरह उपाड की सहन न हो तब तिला लगाना बन्द कर घृत में कपूर मिलाकर लगा देने से शान्ति हो जायगा जब उपाड़ जाता रहे तब पुनः तिला लगाना आरम्भ कर देना चाहिये।

क्लीवत्वहर पोटली

शैथिल्यं न भवेत्तस्य दशवारानियाद्यदि।
हस्त गुद संभवं क्लैव्यं नाशनं परमंतम्॥

इन पोटलियों के दश दिन सेक करने से हस्तमैथुन, गुदमैथुन, बहुमैथुन, आदि के द्वारा उत्पन्न नपुंसकता दूर हो जाती है रग पट्ठे मज़बूत हो जाते हैं इन्द्री सहज ही शिथिल नहीं होती, एक बार परीक्षा कीजिये।

व्यवहार विधि इसे तिला लगाने के पहले व्यवहार करना चाहिये । अर्थात् इस से इन्द्री को सेक कर उसके बाद तिला लगावें। एक कटोरी (बर्तन) को अग्नि पर रख उस में पोटली १ रख इतना चमेली का तैल डाले कि पोटली डूब जाय जब वह तैल और पोटली गरम होजाय तब पोटली निकाल उससे इन्द्री और उसके आस पास के रग पट्ठे सेकें जब पोटली ठन्डी होजाय तब इसी तरह पुनः गरम करले यह सेक आध घन्टे तक होना चाहिये उसके बाद यदि तिला लगाना हो तब तिला लगावें अन्यथा पोंछ कर कपड़ा लपेट दें ।

सूचना—मकरध्वज वटी, कामदीपक तिला, क्लीवत्वहर पोटली, इन तीनों को एक साथ व्यवहार करने से कैसा ही नपुंसक हो मर्द हो जाता है। जो रोगी निराश होगये थे आत्मघात करने को तैयार थे, घर गृहस्थी के कुछ भी काम के न थे वह इनकी बदौलत आज कई बाल बच्चों के पिता बने, बड़े आनन्द पूर्वक गृहस्थ का सुख भोग रहे हैं एक बार परीक्षा करने से ही हमारी सत्यता का पता चल सकता है ।

सुजाक हर केप शूल

उष्णवात प्रमेहाश्च मूत्र कृच्छ्र हलीमकम्।
अश्मरी कामलाँ पाँडु मूत्रघात मरोचकम् ॥

यह सुजाक की प्रधान और चमत्कारिक औषधि है नया या पुराना किस ही प्रकार की सुजाक हो इसके सेवन से अवश्य जाती रहेगी । मूत्र का पीला होना या मूत्र करते समय दर्द होना, मूत्र थोड़ा २ तथा रुक २ कर होना, मवाद आना, अथवा मवाद से धोती हर समय ख़राब होती रहना, चीस होना आदि सब शिकायत इसके सेवन से दूर हो जाती हैं, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हलीमक, अश्मरी, कामला, मूत्रघात, अरुचि इसके सेवन से नष्ट हो जाती है । हमने इससे सैकड़ों रोगी आरोग्य किये हैं एक बार आप भी इस प्रभावशाली औषधि का व्यवहार कर हमारे परिश्रम को सफल करें ।

सेवनविधि-यह केपशूल बिना कुछ खाये खाली पेट नहीं खाने चाहिये । दिनभर में ५ केपशूल तक निगले जा सकते हैं । एक केपशूल गले में डाल ऊपर से पानी पी लेना चाहिये । सोडावाटर वर्फ डालकर पानी की जगह पी सकते हैं कम से कम प्रतिदिन तीन केपशूल अवश्य खाने चाहिये ।

सुजाक की पिचकारी की दवा

इसके लगाने से सुजाक में होने वाली चीस, मूत्र का रुकर कर आना, मूत्र नली से मवाद आना, धोती में धब्बा लगना आदि सुजाक के सब उपद्रव शान्ति हो जाते हैं यह नये सुजाक में ही व्यवहार करनी चाहिये। **व्यवहारविधि**-एक तोले दवाको पावभर पानी में डाल गरम करे जब उबाल आजाय तब उतार कर कपडा में छान ले और उकड़ू बैठकर तथा पिचकारी में दवा भर कर इन्द्री की जड़ को हाथ से दबाकर दूसरे हाथ से पिचकारी का मुख इन्द्री में लगाकर पिचकारी लगावे इस तरह ५-७ पिचकारी लगानी चाहिये।

नोट—सुजाक हर केप शूल, चन्दनासव, पिचकारी की दवा इन तीनों को एक साथ व्यवहार करने से सुजाक में बड़ा लाभ होता है हमने इन तीनों का सेवन करा सैकड़ों सुजाक रोगी आरोग्य किये हैं इससे प्रति शत ९९ रोगी आरोग्य होते देखे गये हैं। चन्दनासव का वर्णन शास्त्रीय औषधियों में किया गया है।

उष्णवातघ्न वटी

उष्णवातं प्रमेहांश्चा मूत्रकृच्छ्र हलीमकम्।
अश्मरी कामलाँ पाँडुमूत्राघात मरोचकम्।

धन्वन्तरि।

उष्णवातघ्नवटी—यह सुजाक (उशावा) की प्रधान और परीक्षित औषधि है। मूत्र के साथ पीय आना, मूत्र करते समय दर्द होना। मूत्र थोड़ा २ होना आदि उपद्रव सहित सुजाक को नष्ट करती है। तथा प्रमेह अश्मरी कामला पाँडु मूत्रकृच्छ्र रोग के लिये भी उत्तम है। **सेवनविधि**—एक एक वटी दिन में ३-४ वार जलके साथ अथवा चन्दनासव क साथ सेवन करनी चाहिये। सुजाकहरि कैप शूल से कुछही हीन गुण वाली है पर उससे मूल्य वहुत ही कम होने से गरीब रोगियों के लिये उत्तम है।

उपदंश हर कैप शूल

उपदंश जिसे गरमी, आतशक कहते हैं वड़ा दुष्ट रोग है। इस के होने में मनुष्य को वड़ी तकलीफ होती है और जब इस की योग्य चिकित्सा नहीं की जाती तव वह बड़ा उपद्रव उत्पन्न करता है इन्द्री को गला देता है रक्त को दूषित कर देता है जिससे तमाम शरीर में चकते पड़ जाते हैं शरीर कान्तिहीन और निस्तेज हो जाता है, वल (ताकत) तो इसके होते ही कम होने लगता है यदि किसी मामूली दवा से रोग दव भी गया तव भी उसका शेषाँश रक्त को पुष्ट करही देता है और वह वीर्य पर ऐसा प्रभाव जमा लेता है जिससे सन्तान को भी उसकी तकलीफ उठानी पड़ती है।

आज कल इसकी चिकित्सा जो अनाड़ी हैं, पढ़े लिखे नहीं हैं जो इसके मर्म को नही जानते, कही से उन्हें कोई प्रयोग

मिला कि वह इसके चिकित्सक वन बैठते हैं कोई २ तो इसमें रस कपूर खिला रोगी को महान कष्ट देते हैं, उसके प्रभाव से उनका मुख सूज जाता है। खाना नहीं खाया जाता और जब कोई कच्चा पारद खिला देते हैं तब तो शरीर तक फूट निकलता है। हमने यह सब बातें विचार और इस रोग सम्बन्धी अनेक पुस्तकें पढ़ तथा अनुभव कर यह अनमोल औषधि आविष्कार की है और अनेक रोगियों पर परीक्षा कर देखली है तब आपके सामने लाये हैं। अब आपको चाहिये कि इसे व्यवहार में ला इसके चमत्कारिक गुण देखें।

इसके सेवन से किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होती और उपदंश शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। घाव सूख जाता है इन्द्री पूर्ववत् हो जाती है शरीर बलवान और कान्तिवान् होजाता है।

सेवनविधि—इसके सेवन कराने से १ दिन पूर्व बिरेचन अर्थात दस्त करा देने चाहिये। दस्त कराने के लिये इन्द्र-बारुणादि क्वाथ उत्तम है यदि वह न हो तब १ तोले इन्द्रायन की जड़ को पावभर पानी में औटावे जब छटाँक भर रहे तब छान कर पिलावे। इससे दस्त होंगे तथा पेटमें पैंठा होकर आँव निकलेगी। उसके दूसरे दिन से १ केपशूल सुवह और १ केपशूल सायंकाल गुनगुने पानी के साथ निगलवाना चाहिये।

उपदंश हरी मरहम—उपदंश हर केपशूल सेवन के समय इन्द्री को नीम के पानी से धोकर यह मरहम चुपड़ देनी चाहिये जिस से घाव शीघ्र ही भर जायंगे।

कनक सुन्दरासव

सेवनेन प्रहृष्यन्ति निर्बला धातुक्षीणकाः ।
बल पुष्टि कराणां हि श्रेष्ठः कनक सुन्दरः ॥

धनवन्तरि

कनक सुन्दरासव—निर्बलों के लिये जीवन स्वरूप है, कैसा ही कमजोर क्यों न हो थोड़े दिन के सेवन से ताक़तवर हो जाता है। पीने के थोड़े ही देर बाद शरीर में फुर्ती आ निकलती है। जो लोग निर्बल, धातुक्षीण, आलसी हों। वे इसे अवश्य ही सेवन कर लाभ उठावें। स्वप्नप्रमेह' नपुंसकता, बहुमूत्र, खाँसी जुकाम शीघ्र ही आराम होते हैं दिमागी ताक़त बढ़ानेके लिये अद्वितीय है। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये छात्रों को सेवन करना चाहिये। यह द्राक्षासव, वृहत् द्राक्षासव से उत्तम और प्रभावशाली है हमारा अनेक बार का परीक्षित है वैद्यों को द्राक्षासव के स्थान में इसका व्यवहार कर इसके अपूर्व गुणों की परीक्षा करनी चाहिये

सेवनविधि—इसकी ख़ुराक (मात्रा) २ तोले की है भोजनोपरांत थोड़ा पानी मिलाकर पिलाना चाहिये। यदि प्रातःसायं देना हो तब इसके सेवन के १ घन्टे बाद थोड़ा दूध या फल देने चाहिये।

स्त्री सुधा

श्वेतं नीलं तथा कृष्णं प्रदरं हन्ति दुस्तरम् ।
कुक्षि शूलं कटीशूलं योनिशूलंच सर्वजम् ॥

हमने इस दवा के बनाने में बड़ा परिश्रम किया है। हम देखते है कि प्रायः भारतीय स्त्रियाँ अशिक्षित होने से साधारण बीमारी की तो कुछ पर्वाह नहीं करती हैं जब धीरे धीरे रोग शरीर में जम जाता है वे लाचार होकर चारपाई पर पड़ जाती हैं तब कहती हैं। बीमारी की बढ़ी हुई अवस्था में अगर कोई अनुभवी चिकित्सक मिलगया तो आराम होजाता है वरना काल के गाल में जाना पड़ता है। प्रत्येक वैद्य डाक्टर स्त्रियों का इलाज कर ही नहीं सकता क्योंकि इसमें बड़े तजुर्बे की आवश्यकता है। हमने बड़े परिश्रम और धन व्यय कर इसको बनाया है और फिर हजारों स्त्रियों पर अनुभवकर लिया है तब इसे सर्वसाधारण पर प्रगट किया है।

जब स्त्री के संतान नहीं होती तब वह ऐसे घृणित काम कर बैठती है जिनसे उसका सतीत्व भी नष्ट हो जाता है और न वह उस समय भक्ष्याभक्ष्य की ही पर्वाह करती है। तथा रुपयों को तो वह पानी की तरह खर्च कर डालती है फिर भी जब उन्हें सन्तान नहीं होती तब आत्मघात करने को तैयार होजाती हैं। उन्हें यह कभी ध्यान भी नहीं होता कि सन्तान न होने का कारण क्या है। गर्भाशय में क्या दोष है हमने स्त्रियों की हर बात का ध्यान रख यह औषधि बनाई है।

इसके सेवन से सब प्रकार का प्रदर, योनिशूल, कुक्षिशूल, योनिदाह, मासिकधर्म (माहवारी) की खराबी जैसे अधिक दिनमें होना अथवा समय से पूर्व ही होजाना या मासिक धर्म के समय दर्द होना आदि गर्भाशय के विकार, जैसे गर्भ का रहना और बीच में ही गिर जाना अथवा सन्तान होकर मर जाना या कन्या ही कन्या होना अथवा सन्तान का न होना आदि २ सब शिकायतें

दूर होजाती हैं। गर्भाशय ठीक और पुष्ट होजाता है जिससे गर्भ स्थिर होजाता है शरीर कांतिवान और बलवान होजाता है।

इसके साथ ही साथ मधुकाद्यावलेह (जिसका वर्णन परिशिष्ट में आया है) का भी सेवन किया जाय तब शीघ्र और स्थाई लाभ होता है।

सेवनविधि—मधुकाद्यावलेह १ तोले चाट ऊपर से स्त्री सुधा २ तोले में २ तोले पानी मिलाकर पीवें। इस तरह प्रातः और सायंकाल दो समय सेवन करना चाहिये यदि मधुकाद्यावलेह सेवन न करना हो तब सिर्फ स्त्री सुधा पानी मिलाकर पीवें।

सूचना—हमने एक नहीं सैकड़ों रोगियों को इन दो औषधियों से आरोग्य किया है. आशा है कि आप भी इन दोनो का व्यवहार कर और अपनी रोगिणियों को रोग मुक्त कर यश धन उपार्जन करेंगे। इन दोनों से कैसा ही कठिन प्रदर हो अवश्य नष्ट हो जाता है तथा रोगिणी बलवान कान्तिवान हो जाती हैं।

रज प्रवर्त्तक वटी

रजोरोधं कष्ट रजो वेदनाश्च तदुद्भवाः।
रजः प्रवर्तिनीनाम रजोदोष विनाशयेत्॥ धन्वन्तरि

जिन स्त्रियों को मासिक धर्म नहीं होता अथवा थोड़ा २ होता है अर्थात साफ़ नहीं होता या मासिक धर्म के समय दर्द होता है उन के लिये ही यह बनाई गई है। इस से अनेक स्त्रियों को हम के द्वारा आरोग्य कर लाभ उठाया है।

सेवनविधि—दिन रात्रि में ३ गोली १ प्रातः १ सायं और १ रात्रि को सोते समय गुनगुने पानी के साथ निगलनी चाहिये। यदि इसके ऊपर पानी की जगह कुमारी आसव एक एक तोले गुनगुने पानी में मिला कर पिया जाय तब विशेष लाभ होता है।

कामनी रक्षक

(गर्भ रक्षक)

मास प्रथम मारभ्य नव मासान्त मेव च।
गर्भणी रोग नाशार्थ कामनी रक्षक स्मृतः॥

आजकल के समय में प्रायः नव युवक वीर्य्य सम्बन्धी रोगों में ग्रसित रहते हैं जिसमें उन्हें सन्तान सुख मिलना ही कठिन होता है फिर भी यदि गर्भ रह भी गया तब उसका टिकना कठिन होता है। किसी को गर्भश्राव और किसी को गर्भपात हो ही जाता है और जहां २-४ बार ऐसा हुआ कि फिर आदतसी पड़ जाती है यह "कामनी रक्षक" गर्भ की रक्षा करने के लिये सर्वोत्तम अनुभूत औषधि है। इसको प्रथम मास से नव मास पर्यन्त सेवन करने से कभी गर्भश्राव और गर्भपात हो ही नहीं सकता।

व्यवहारविधि—तीन २ माशे प्रातः और सायंकाल साठी चावल के पानी के साथ फंकाना चाहिये।

(साठी चावल के पानी बनाने की विधि ९१ पृष्ठ में देखें)

प्रदरान्तक चूर्ण

रक्तं श्वेतं तथा पीतं नीलं प्रदर दुस्तरम् ।
ज्वरं तृष्णां रुचिं श्वासं शोथं हन्ति न संशयः ॥१॥

धन्वन्तरि ।

प्रदरान्तक चूर्ण—रक्त, श्वेत, पीत, नीला आदि सब प्रकार का प्रदर और ज्वर प्यास, अरुचि आदि उपद्रव इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं । यह पित्त प्रकृति वाली स्त्री के लिये उत्तम है । जो स्त्रियाँ मूल्यवान औषधियाँ नहीं सेवन कर सकतीं उन के लिये विशेष लाभदायक है । व्यवहार तीन माशे से, छः माशे तक साठी चावल के पानी के साथ प्रातः और सायंकाल फकाना चाहिये ।

प्रदरारि चूर्ण

योनि दोषं रजो दोषं श्वेतनीलं सपीतकम् ।
श्यता त्प्रशमयेदेतत् योषितां वातिकं रुजः ॥१॥

धन्वन्तरिः ।

प्रदरारि चूर्ण—यह भी सब प्रकार के प्रदर के लिये उत्तम है वात प्रकृति वाली स्त्री के लिये विशेष लाभ प्रद है । साथ ही साधारण लागत की दवा होने से गरीब स्त्रियों के लिये सेवन

योग्य है। **व्यवहार**-- प्रातः और रात्रि को सोते समय छः छः माशे दुग्ध के साथ फकाना चाहिये।

कुमार कल्याण घुटी

कुमाराणां ज्वरं श्वासं वमनं पारिगर्भिकम्।
ग्रहदोषांश्च निखिलानि स्तन्यस्याग्रहणं तथा॥

बालकों को घुटी देने का रिवाज आज का नहीं बहुत पुराना है और यह रिवाज भी आवश्यक है पर आजकल जो घुटी बाजार में बिकती है अथवा जो प्रायः दी जाती है वह समयानुकूल नहीं क्योंकि तरुण पुरुष को जुल्लाब देने मे बड़ी सावधानी रक्खी जाती है और बहुत आवश्यक होने पर दिया जाता है, तब जो बच्चा सुकुमार है उसे बाजारू घुटी जो कि वास्तव में जुल्लाब है और जिसमें सनाय, अमलतास, हरड़, कुटकी आदि दस्त लाने वाली अनेक औषधियां पड़ती है। वह बिना आगा पीछे सोचे दे दिया जाता है जिसका परिणाम बुरा होता है और बच्चा अकाल से ही चला जाता है जिन्होने सरकारी रिपोर्ट देखी है उनसे बच्चों की मृत्यु संख्या छिपी नहीं है उसे देख हृदय में जो दुख और खेद होता है वह वर्णन नही किया जाता। हमने वर्त्तमान बालकों की हालत देख बड़े परिश्रम से आयुर्वेद में वर्णित और बालकों की रक्षा करने वाली दिव्य औषधियों से यह घुटी तैयार की है इसके सेवन करने वाले निरोग बालक कभी बीमार नहीं होते किंतु पुष्ट होजाते हैं। यह बालकों को बलवान बनाने की बड़ी उत्तम

औषधि है। रोगी बालक के लिये तो संजीवन है। इसके सेवन से बालक के समस्त रोग जैसे ज्वर, हरे पीले दस्त, अजीर्ण, पेट का दर्द, अफरा, दस्त में कीड़ा पड़ जाना, दस्त साफ न होना, सर्दी, कफ, खांसी, पसली चलना, दूध पलटना, सोते में चौंक पड़ना, दांत निकलने के समय के रोग, सब दूर होजाते हैं। शरीर मोटा, ताजा और बलवान होजाता है। पीने में मीठी होने से बच्चे बड़ी आसानी से सेवन करते हैं।

सेवनविधि—जो बालक माता का दूध पीता है उसे ५ बूंद से १० बूंद तक माता के दूध में मिलाकर प्रातःसायं दोनों समय पिलावें। जो बालक माता का दूध नहीं पीता उन्हें १० बूंद से २० बूंद तक गुनगुने पानी में मिलाकर पिलावें अथवा शर्बत की तरह चटादें। प्रातः और सायं तथा रात्रि को तीनबार दें।

कुमाररक्षक तैल

बालानां सर्व रोगघ्न पुष्टि कृद् बलवर्द्धनम्।
बालानां ज्वर रक्षोघ्नमभ्यङ्गाद्बलवर्ण कृत्॥

कुमार रक्षक तैल—यह तेल हमने बालकों के लिये विशेष विधि से बनाया है। प्रतिदिन मालिस करने से बालक को किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होने देता, शरीर हृष्ट और पुष्ट बना देता है तथा कान्ति ला देता है जिससे बालक सुन्दर और स्वस्थ्य रहते हैं और हरएक स्त्री पुरुष उसे ले अपना मनोरंजन करने के इच्छुक रहते हैं। इसकी मालिश करने से फोड़ा, फुन्सी आदि चर्मरोग होने का डर नहीं रहता।

व्यवहारविधि—स्नान कराने से २ घंटे पहले या रात्रि को सोते समय तमाम शरीर से थोड़ा २ हलके हाथ से मालिश करें।

बाल रोगान्तकारिष्ट

शिशो ज्वरातिसारघ्नं कासश्वास वमीहरम्।
कासंच विविधंचैव सर्व रोग निहन्ति च॥

धन्वन्तरि।

बालरोगान्तकारिष्ट—यह अरिष्ट भी आजकल की बाजारू घुट्टियों से उत्तम है तथा यह सौम्य औषधियों से बालकों के हर एक रोगों को नाश करने वाली औषधियों से बनाया है साथ ही बलवर्द्धक औषधियों का भी समावेश रहता है इससे यह बालकों के सर्व रोग नाश कर बल भी देता है। जिस समय बालकों को कठिन रोग होजाता है उस समय इसके साथ कुमारकल्याण रस देना विशेष लाभदायक होता है।

सेवनविधि—जो बालक माताका दूध पीतेहैं उन्हें ३ माशे थोड़ा पानी मिलाकर पिलावे और जो माता का दूध नहीं पीते उन्हें ६ माशे थोड़ा पानी मिलाकर पिलावे। प्रातः सायं दो समय देना चाहिये। यदि कुमार कल्याणरस भी देना हो तब १ मात्रा में १ गोली मिलाकर पिलावें।

श्वेत कुष्टारि अवलेह

विवर्च्चिका, दद्रुपामा कुष्ठरोग प्रशान्तये।
लोकानामुपकारायश्चित्र कुष्टादि रोगिणाम् ॥

धन्वन्तरि।

श्वेतकुष्टारि अवलेह—यह हमने बड़े परिश्रम से श्वेतकुष्ट के रोगियों के हित के लिये बनाया है इसके सेवन से और श्वेतकुष्टारि घृत तथा श्वेतकुष्टारिवटी के लगाने से कैसाही पुराना श्वेतकुष्ट हो अवश्य नष्ट होजाता है एकबार परीक्षा अवश्य कीजिये।

व्यवहार--एक तोला प्रातः और १ तोला सायंकाल चाटना चाहिये। चाटने के पश्चात् मुख का जायका ठीक करने के लिये पान चबा लेना चाहिये या थोड़े भुने चने खा लेने चाहिये।

श्वेतकुष्टारि वटी—इसको गोमूत्र या पानी में पीस जिस जगह श्वेतकुष्ट हो उस जगह इसका लेप करना और जब खुश्क हो जाय तब गरम पानी से धोकर और कपड़ा से पोंछले।

श्वेतकुष्टारि घृत—श्वेतकुष्टारि वटी के लेप को धोने के बाद इसको मलना चाहिये। इस प्रकार वटी का लेप और घृत को मालिश दिन में तीन चार बार करनी चाहिये।

योषापस्मारहरिवटी

अर्थात

हिस्टेरियाहरिवटी

जरायुदोषं निखिलं प्रति कुर्य्याद् यथा विधि।
योषापस्मारणं सान्त्वैः प्रियदानाश्च शाम्यति॥

धन्वन्तरि।

योषापस्मारहरिवटी अर्थात् हिस्टेरियाहरि वटी—आजकल स्त्रियों मे यह रोग बड़ी अधिकता से फैल रहा है और जिस स्त्री को यह रोग हुआ कि उसका जीवन दुर्लभ होजाता है घर वाले सब परेशान होजाते हैं अनेक गृहस्थ भूतबाधा मान सियाने मंत्र-शास्त्री, ओझा आदि के चक्कर में पड़ अपनी मर्यादा और धन दोनों ही नष्ट कर देते हैं हमने बड़ी कठिनता से इसकी योग अन-मोल औषधियां बनाई हैं इसके सेवन से हिस्टेरिया अवश्य नष्ट होजाती है हमने इसे अनेक स्त्रियों को दे और परीक्षा कर अब वैद्यसमाज और सर्व साधारण में प्रकट की है हमें आशा है कि वैद्य अपनी रोगिणियों को दे इसके प्रभाव को देखेंगे और धन यश उपार्जन करेंगे और गृहस्थ अपनी कुल वधुओं को दे उनके और अपने कष्ट से रक्षा कर आयुर्वेद का यश गान करेंगे।

सेवनविधि--प्रातः और सायंकाल एक एक गोली निगल ऊपर से योषापस्मारहरि आसव (हिस्टेरियाहरिआसव) दो दो

तोला पानी दो दो तोला मिलाकर पिलावें और भोजनोपरान्त—
योशापस्मारहरि हार (हिस्टेरियाहरिहार) चार चार रत्ती
गुनगुने जल के साथ फकावें।

गुदभ्रंश हरि रस

गुदभ्रंशाभिधोव्याधिः प्रणश्यति न संशयः।

धन्वन्तरि

गुद भ्रंशहरिरस—यह कांच निकलने का रोग बड़ा कष्ट और
कष्ट देने वाला है बालकों को प्राय दुख देता है पर कभी २ बड़ों को
भी तकलीफ देने से नहीं चूकता हमने इसके लिये रस, चूर्ण, लेप
यह तीन वस्तु तैयार की हैं इनके व्यवहार से पुराने से पुराना
गुदभ्रंश रोग भी नष्ट होजाता है।

यह औषधियां स्त्रियों के योनकंद रोग में भी बड़ा लाभ करती
हैं तथा जिन स्त्रियों की इन्द्री बाहर की तरफ निकल आती है
उन्हें भी बड़ा लाभ होता है परीक्षा प्रार्थनीय है।

व्यवहार विधि—गुदाभ्रंशहरि रस दो दो रत्ती प्रातः और
सायंकाल शहद में मिलाकर चाटें। गुदभ्रंशहरि चूर्ण—६ माशे
चूर्ण ६० तोले जल में गरम करें जब ५० तोले जल शेष रहे उसे
रखदे जब ठंडा होजाय तब उससे गुदा और काँच को धोवे उसके
बाद साधारण घी चुपड़कर गुदा को भीतर कर ऊपर से गुदभ्रंश
हरि लेप—एक कपड़ा पर लगा गुदा से लगा दे और ऊपर से
लंगोट बांध दे। इस प्रकार दिन में २ बार धोवें और लगावें।

खुशबूदार--केशकिशोर तैल

(ब्राह्मी तैल)

निहन्ति सर्वान्शिर सो विकारांश्च्युतांश्च केशान् सुदृढी करोति
वातामये चातिरुजे प्रशस्तम् सम्मर्दना देवहितैलमेतत्

धन्वन्तरि ।

केशकिशोर तैल—अब दिमागी तरावट और बाल को सुन्दर रखने के लिये मिट्टी के तैल पर बनाए हुये बाजारू तेलों का इस्तै-माल करने का झंझट मिटगया। हमने निहायत बढ़िया खुशबूदार दिल और दिमाग को तरावट व ताकत देने वाला केश किशोर तैल शुद्ध तिली के तैल पर बनाया है। यह वकील विद्यार्थी और हाकिम, वैद्य स्त्री पुरुषों को निःसंकोच व्यवहार करना चाहिये। साथ ही यह शिर के समस्त रोग नष्ट करने वाला बालों को काला और पुष्ट करके तथा बल और कान्ति को देने वाला है।

व्यवहार—इसकी शिर से मालिश करनी चाहिये। शिर के और केशों के व्यवहार के लिये ही यह तैल है।

खुशबूदार कर्पूरादि तैल

अर्दिते कर्ण शूलेच ऊरुस्तम्भे कटिग्रहे।
सूर्य्यावर्त शिरःशूले नाशयत्यवशेषतः॥

धन्वन्तरि।

कर्पूरादि तैल—यह शिरमें लगानेका सुगन्धित तैल है। इसके लगाने से शिरका दर्द, शिर का घूमना, शिरका भारीपन बालों का असमय पकना और गिरना, पढ़तेर शिरमें चक्कर आजाना तथा और सब प्रकार की दिमाग़ी कमजोरी चित्त की घबड़ाहट के लिये उत्तम है। शरीरके किसी भागमें दर्दहो इसके लगाने से शांति होजाता है।

व्यवहार--जहाँ दर्द हो वहां मालिश करनी चाहिये। शिर दर्द को शिर से मले और नाक से सूंघे भी। कान के दर्द में दो तीन बूँद कान में डाले।

अग्निवल्लभ चार

सारमेतच्चिकित्सायाः परमग्नेश्च पालनम्।
तस्माद्यत्नेन कर्तव्यं वन्हेस्तु प्रतिपालनम्॥

अस्तुदोष शतं क्रुद्धं सन्तु व्याधि शतानिच।
कायाग्निमेव मतिमान् रक्षन्रक्षति जीवितम्॥

धन्वन्तरि।

अग्निवल्लभ चार—सम्पूर्ण चिकित्सा का सार यह ही है कि जठराग्नि की रक्षा कीजाय चाहे सैकड़ों दोष कुपित क्यों न हों हजारों रोग शरीरमें क्योंन भरे पड़ेहों परन्तु उनकी परवा न करके एक जठराग्नि की रक्षा करता हुआ मनुष्य अपने जीवन की रक्षा करे। जब जठराग्नि द्वारा आहार पचजाता है तबही रस-रक्तादि शारीरिक धातु बनाकर शरीर को बलवान् करते हैं। लेकिन आज जिधर देखिये उधर

यही शिकायत सुनने में आती है कि हमारी अग्नि कमजोर है खाना हजम नहीं होता दस्त साफ नहीं उतरता भूक नहीं लगती इत्यादि२ अग्निवल्लभक्षार सचा अग्निका प्यारा है। अग्निवल्लभक्षार के सेवन से अग्नि प्रज्वलित होती है खाना खाया हुआ हजम होताहै भूक न लगना दस्त साफ न होना, खट्टी२ डकारों का आना, पेट में दर्द तथा भारीपन होना, तबियत बिगड़ना, अपान वायु का बिगड़ना इत्यादि सामयिक शिकायतें दूर होती हैं। परदेश में रहकर सेवन करने वालों को जलदोष नहीं सताता गृहस्थों के लिये संग्रह करने योग्य महौषधि है। क्योंकि जब किसी तरह की शिकायत देखी चट अग्निवल्लभक्षार सेवन करनेसे उसी समय तबियत साफ होजाती है।

सेवनविधि-मात्रा १ माशे से १॥ माशे पर्य्यन्त अनुपान गरम जल समय प्रातः सायं अथवा भोजनोपरान्त। पेटके दर्द के समय गरम जल के साथ। मलावरोध में गरम जल में घोलकर पीना चाहिये।

उदर भास्कर चूर्ण

शूलं विष्टम्भ मानाहं मन्दाग्ने र्दीपनं परम्
उदरं प्रदरं चैव नाशये न्नात्र संशयः॥ १॥

धन्वन्तरिः

उदर भास्कर चूर्ण—यह शूल, मलावरोध, अफरा, मन्दाग्नि उदर अरुचि मन्दाग्नि के लिये उत्तम है। जिनको प्रायः मलावरोध रहता है वह इसका निरंतर सेवन करने से आरोग्य होजाते

हैं। भूक को बढ़ाने वाला स्वादिष्ट चूर्ण है। प्रमेह और प्रदर के साथ होने वाला मलावरोध भी इसके सेवन से नष्ट होजाता है।

व्यवहारविधि—प्रातः और सायं अथवा भोजनोपरान्त और मलावरोध में रात्रि को सोते समय गरम जल के साथ मात्रा १॥ माशे से ६ माशे पर्यन्त।

अजीर्णाद्दन पानक चूर्ण

(नमक सुलेमानी)

अग्निश्च कुरुते दीप्ति बड़वानलं सन्निभम्।
अरोचक मजीर्णञ्च ग्रहणी मपि दारुणाम्॥

धन्वन्तरिः

अजीर्णाघ्नपानकचूर्ण—इसके सेवन से पेट का दर्द, खट्टी खट्टी डकारें, अरुचि, अफरा, नष्ट होजाता है अग्नि बढ़ती है भूक अच्छी लगती है मन्दाग्नि में जब मलावरोध हो तब इसको गरम पानी में मिलाकर पीने से दस्त साफ होता है।

सेवनविधि—मात्रा १ माशे से ३ माशे पर्य्यन्त अनुपान गरमजल—समय भोजनोपरान्त अथवा शूल के समय इसको अनेक पुरुष नमक सुलेमानी भी कहते हैं। यह जल में घोलकर थोड़ा २ स्वाद से पीना चाहिये।

स्वादिष्ट चटनी

जिह्वाविशोधनं ह्रद्यं तच्चेह भक्तरोचनम्।
हृत्पीड़ा पार्श्वशूलघ्नं विबन्धानाहनाशनम्॥

धन्वन्तरि।

यह बड़ी ही जायकेदार और पाचक चटनी है। भोजन के बाद थोड़ी चाटने से मुख का जायका बड़ा अच्छा होजाता है तथा किया हुआ भोजन भी पच जाता है। अरुचि के लिये तो यह प्रधान औषधि ही है।

व्यवहार—भोजन के बाद ६ माशे चटनी को चाटे और अरुचि में दिनमें ५—७ बार माशे माशेभर चखना चाहिये।

शान्ति वर्द्धक चूर्ण

अत्यग्नि कारकं चूर्णं प्रदीप्ताग्नि समप्रभम्।
अजीर्णं कमथो गुल्मप्लीहा नं गुदजानि च॥

धन्वन्तरि।

यह चूर्ण स्वादिष्ट और पाचन है अग्नि को दीपन करने वाला और गुल्म प्लीहा, अजीर्ण को दूर करने वाला है। विशूचिका के दिनों में सेवन करने से विशूचिका का डर नहीं रहता। अजीर्ण से जब जी मिचला रहा हो, बेचैनी हो, तब

इसको थोड़ा थोड़ा चाटने से बड़ा लाभ होता है।

सेवनविधि—एक एक माशे जल के साथ फांकना या थोड़ा थोड़ा चाटना चाहिये।

अर्शान्तकवटी

श्वयथुं रुधिरस्रावं प्रमेहं चापि वाहुकम्।
अनेनार्शांसि दह्यन्ते यथा तूलं च वह्निना॥

धन्वन्तरि

अर्शान्तक वटी—यह सब प्रकार की बवासीर (अर्श) की प्रसिद्ध और परीक्षित महौषधि है। अर्श से आने वाला रक्त एक दो दिन में ही बन्द होजाता है तथा अर्श के साथ होने वाला मलावरोध भी नष्ट होजाता है तथा प्रमेह को भी लाभदायक है। अग्नि को बढ़ाने वाला है। **सेवनविधि**-एक एक वटी या दो दो वटी प्रात. सायं गरम जल के साथ अथवा अभयारिष्ट के साथ सेवन करनी चाहिये।

अर्शान्तक मरहम—उपरोक्त वटी के सेवन काल में इसको लगाना बड़ा लाभकारी होता है। एक रुई के फाये मे मरहम लगा गुदा के ऊपर रख और एक कपड़ा की गद्दी रख बांध देनी चाहिये। इस तरह दिन में २—३ बार लगावें।

अर्शाहरि चूर्ण

अर्शांसि नाशयेच्छीघ्रं तथाष्टौ उदराणिच।
वचोभूसविबन्धघ्नो वह्नि संदीपयेत् परम्॥

अर्शाहरि चूर्ण—यह चूर्ण वातार्श के लिये प्रधान औषधि है साथही रक्तार्शको भी लाभ करती है जिन्हें अर्शके साथ मन्दाग्नि हो उन्हें यह विशेष लाभ करता है।

सेवनविधि—प्रातःसायं अथवा भोजनोपरान्त तीन माशे से ६ माशे परियन्त जल के साथ फकाना चाहिये।

सूरण पुट पाक

अग्निवल वृद्धि हेतुनं केवलं शूरणो महा वीर्य्यः।
प्रभवति शस्त्र क्षाराग्नि भिर्विनाश्यशि समेषः॥

सूरण पुट पाक—यह वटी अर्श को और विशेष कर वातार्श को लाभकारी है साथही पाचन दीपन भी है जिन्हें अर्श के साथ मन्दाग्नि हो, पाचन शक्ति कम होगई हो उन्हें अर्शाहरि चूर्ण के साथही साथ इसका सेवन कराना विशेष लाभप्रद है।

सेवनविधि—भोजनोपरान्त एक वटी से ३ वटी परियन्त जलके साथ निगलनी चाहिये। और प्रातः सायं अर्शाहरि चूर्ण लेना चाहिये। इन दोनो औषधिओं से वातार्श को विशेष लाभ होता है तथा पाचनशक्ति बढ़ जाती है।

वल्लभ रसायन

वल्लभ-रसायन—किसी ही रोग से किस ही प्रकार का रक्त श्राव होता हो तब यह विशेष लाभ करता है। रक्त को बन्द करने के लिये अन्यर्थ औषधि है। अर्श, रक्तपित्त, रक्त प्रदर, रक्तातिसार, राजयक्ष्मा आदि सब रोगों में इसका उपयोग होता है।

सेवनविधि—एक माशे से ३ माशे परियन्त जलके साथ अथवा साठी चावल के पानी के साथ फकाना चाहिये। अनार शर्वत में मिलाकर भी चटाया जा सकता है।

रक्त वल्लभ रसायन

रक्त वल्लभ रसायन—इससे ज्वर के साथ होने वाला रक्तश्राव बन्द होता है। ज्वर को दूर करने और रक्त को बन्द करने के लिये उत्तम है।

सेवनविधि—एक एक रत्ती रक्तवल्लभ रसायन प्रातः और दोपहर को शर्बत अनार के साथ चटावें।

असली छोटी हरड़

हरीतकी मनुष्याणाँ मातेव हितकारिणी।
कदाचित्कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी॥

हमने इनको शुद्ध कर और अनेक मसाले डालकर बड़ी ही स्वादिष्ट और खुश जायके बना दिया है। इसके सेवन से अजीर्ण अफरा, पेट का दर्द, जी मिचलना, मुंह में वादी का पानी भर आना, दस्त साफ न होना, भोजन का न पचना, आदि शिकायतें दूर हो जाती हैं रात्रि को सोते समय २-४ हरड़ खालेने से प्रातः पचकर और खुलकर दस्त हो जाता है तबियत साफ होजाती है भोजन के बाद खा लेने से अन्न को पचा देती है जायकेदार इतनी है कि मन खाने से हटता ही नहीं एक बार अवश्य मंगाकर और सेवन कर देखें, यह बाजारू नकली हरड़ें नहीं जो चूर्ण बना कर हरड़ के आकार की गोली बना हरड़ कहते हैं, यह हरड़ ही हैं और असली और उत्तम हैं।

सेवनविधि—२ से ६ हरड तक भोजनोपरान्त खिलाना चाहिये। अथवा रात्रि को खिला ऊपर से गुनगुना जल पिलाना चाहिये जिससे प्रातः पचकर और खुलकर दस्त हो जाय।

कब्ज की चमत्कारी दवा

सरल भेदी वटिका

यह रोग तो आजकल इतना फैला हुआ है कि प्रत्येक घर में छोटे बच्चों जवानों, बूढ़ों सभी को शिकायत बनी रहती है कि दस्त साफ नहीं होता, जिसके कारण भूख भी नहीं लगती, तबियत भी उदास रहती है, कब्ज रहते २ फिर अनेक रोग आदमी

को आ घेरते हैं वास्तव में रोगों का घर, पेट नित्य साफ न होना ही है। जिस मनुष्य का नित्य प्रति साफ दस्त हो जाता है तो उसे कोई रोग नहीं होने पाता। हमने यह दवा उन लोगों के लिये बनाई है जिनको नित्य ही क़ब्ज की शिकायत रहती हो और कई २ बार दस्त जाना पड़ता हो, वे लोग इस हमारी दवा का सेवन करें। इसका रात्रि में सेवन करने से नित्य प्रातः साफ दस्त हो जाता है तबियत साफ हो कार्य करने में उत्साह होता है।

सेवनविधि—एक या दो गोली रात्रि को गुनगुने जल के साथ निगलने से प्रातः खुलकर दस्त हो जाता है। और दोपहर को लेने से शाम को दस्त हो जाता है।

गोपाल चूर्ण

गोपाल चूर्ण—जिनकी प्रकृति पित्त की हो उन्हें इसके सेवन से दस्त साफ होता है जिन्हें मलावरोध हो उन्हें इस में से तीन माशे रात को सोते समय गुनगुने जलके साथ फकादेने से सुबह साफ दस्त हो जाता है।

मृदुरेचन चूर्ण

मृदुरेचन चूर्ण—यह मृदुरेचक है किन्तु जिन्हें मलावरोध रहता हो और अनेक औषधियों से न गया हो उन्हें भोजनोपरान्त तीन तीन माशे गुन गुने पानी के साथ फंकावें यदि पेट में खुश्की भी मालूम पड़े तो थोड़ा सोफ चबालें। इसके १ महीने के सेवन से मलावरोध नष्ट हो जाता है।

आम निस्सारक वटी

आम निस्सारक वटी—एक से तीन वटी परियन्त प्रातःकाल गुनगुने जलके साथ सेवन कराने से गुदा के द्वारा आँव निकलने लगती है जिन रोगियों को आँव का विकार हो आम वात से रोग हो उन्हें इसके सेवन से विशेष लाभ होता है। आँव निकालने के लिये यह एक ही वस्तु है। यदि पेट में दर्द ऐंठा करे तब चिन्ता नहीं क्योंकि आँव निकलने का कारण ऐसाकभी २ हो जाता है।

गुलाब मोदक

गुलाब मोदक—रक्त विकार के रोगियों को औषधि सेवन कराने के पूर्व दस्त कराना परम आवश्यक है और यह गुलाब मोदक पित्त प्रकृति वाले रक्त विकार के रोगियों को दस्त कराने के लिये सर्वोत्तम हलका जुल्लाब है।

सेवनविधि—प्रातः एक मोदक १ छटांक पानी में भिगोदे सायंकाल हाथ से मल कपड़ा में छान पोले और सायंकाल १ मोदक १ छटाँक पानी में भिगोदे उसे प्रातःकाल हाथ से मल कपड़ा में छान पिलावे।

आयुर्वेदीय सारसा परेला

हन्त्यष्टादशकुष्ठानि वात शोणितजानि च।
रक्त मंडल मत्युग्रं स्फुटितं गलितं तथा॥

बहुरूपं सवजातं नाशयेद्विकल्पतः ।
दुष्ट व्रणञ्च वीसर्पं त्वग्दोषञ्च विनाशयेत् ॥

आयुर्वेदीय सालसा—वर्त्तमान में विलायत के बने हुए सालसों का अधिक प्रचार देख और देश का धन विदेश जाता देख किस देशहितैषी को खेद और रंज न होगा हमने यही देख तथा रक्त विकार के अनेक रोगियों का कष्ट देख बड़े परिश्रम से आयुर्वेद सिद्धान्त के अनुसार और वर्त्तमान रोगियों की अवस्था के अनुकूल यह "आयुर्वेदीय सारसा परेला" बनाया है। यह सालसा विदेशी सब सालसों से बढ़ चढ़ कर और गुणप्रद है हमने सैंकड़ों रोगियों पर इसका अनुभव कर लिया है और उससे यश और धन प्राप्त किया है जब ऐसा प्रभावशाली विदेशी सालसो को मात करने वाला यह स्वदेशी सालसा तैयार है तब विदेशी सालसा व्यवहार कर या बेच प्रचार कर जो देश का धन विदेश भेज रहे हैं यह उनकी कितनी बड़ी भूल है और उस उनकी भूल के लिये किस देश हितैषी को दुख न होगा। हमारी उनसे, जो विदेशी सालसा का व्यवहार करते हैं प्रार्थना है कि एक बार वह इसे व्यवहार करें जिससे वह इनके अनुपम गुण देख सकें और विदेशी सालसा का प्रचार रोकने को तैयार हो।

हम दावे के साथ कहते हैं कि यह विदेशी सालसों से हर बात में उत्तम और प्रभावशाली है इसके मुकाबले विदेशी सालसा रक्त शुद्ध नहीं कर सकता और न वह उतना गुण ही कर सक्ता है

इसके सेवन से त्वचा के रोग तथा रक्त विकार के समस्त रोग जैसे फोड़ा फुन्सी, खुजली, चकते, खाज, कोढ़, वात रक्त, विस्फोटक के कारण होने वाले उपद्रव और रक्त विकार, श्लीपद आदि सब दूर होजाते हैं। रक्त दोष से होने वाली गठिया भी जाती रहत है।

इसके कुछ दिन उपयोग करने से रक्त शुद्ध कर देता है। तथा नवीन शुद्ध रक्त बढ़ाता है जिससे शरीर हृष्ट पुष्ट हो कान्तिमय हो जाता है। इसके सेवन कराने से पहले रोगी को दस्त करादेने चाहिये और बीच२ में भी दस्त कराते रहना चाहिये इसके साथ हरितालभस्म भी सेवन कराई जाय तब तो कैसाही पुराना और कठिन रोग हो अवश्य चला जाता है यहां तक कि गलित कुष्ट कोभी आराम हो जाता है।

सेवनविधि—दस्त कराने को इन्द्रवारुणादि क्वाथ यदि पित्त प्रकृति हो तब गुलाब मोदक सेवन करावे उसके बाद १ तोला से २॥ तोला तक प्रातः सायं थोड़ा जल मिला कर पिलावे। यदि हरिताल भस्म भी देनी हो तब दोपहर को और रात को हरिताल भस्म भी सेवन करावे अथवा हरिताल भस्म शहद मे चटा ऊपर से सालसा पिलावें प्रात और सायं।

रक्तशोधकक्षार

रक्तशोधक क्षार—यह क्षार विशेषविधि से जिसे आजकल केमीकल पद्धति कहते हैं बनाया जाता है। यह रक्त विकार के

लिये उत्तम है और जिन्हें उपदंश (आतशक) रोग से रक्त विकार हुआ हो तब तो यह सर्वोत्तम ही है। इस को रक्तशोधक आसव, अरिष्ट, अर्क, में मिलाकर देना चाहिये अथवा गुनगुने जल में घोलकर पीना चाहिये। इसकी एक खुराक १ रत्ती से २ रत्ती तक।

व्रणहरि चूर्ण

व्रणहरि चूर्ण—फोड़ा फुन्सी में इसे सरसोंके तेल में मिलाकर लगाते हैं। यह साधारणतः होनेवाले फोड़ा फुन्सी के लिये उत्तम घरेलू दवा है।

निम्बादि मरहम

निम्बादि मरहम—यह रोपण करने वाली मरहम है इसके लगाने से कैसाही कठिन घाव हो अवश्य भरजाता है।

व्यवहारविधि—घाव के बराबर कपड़ा काट उस पर इसका लेपकर घावपर चुपका देना चाहिये। प्रतिदिन दोबार लगाना चाहिये तथा घावको नीमके पानी से साफ करते रहना चाहिये।

व्रणहरि मरहम

व्रणहरि मरहम—यह बत्ती की मरहम है। बम्बई की मरहम कहकर बाजार में बिकने वाली विदेशी और अशुद्ध वस्तु के स्थान में इस स्वदेशी और पवित्र तथा गुण में भी उससे अधिक लाभकारी बत्ती की मरहम स्तेमाल करावें इसका व्यवहार भी बड़ा सरल है। कपड़े का फाया काट उस पर इसको लगा चुपकादें यदि कड़ी हो जाय तो थोड़ी आग से सेक मुलायम करलें।

धन्वन्तरि मरहम

धन्वन्तरि मरहम–यह भी वत्ती की मरहम है इसका रंग हरा है हमने इसे विशेष विधि से तैयार की है यह सब प्रकार के फोड़ों के लिये उत्तम है। इसको कपड़ा के फाये पर लगा कर चुपकादी जाती है एक बार परीक्षा कर देखिये।

दद्रुकुठार मरहम

अस्य प्रलेप मात्रेण पामादद्रुविचर्चिकाः।
कँडूद्रचरकसश्चैव प्रशमं याति वेगतः॥

धन्वन्तरि।

जिन लोगों को दाद खुजाते २ रात्रि को नींद नहीं आती वे हमारे इस दादके दुश्मन को मंगाकर लगावें इसके लगातेही चैन मालूम पड़ेगा किसी तरह की तकलीफ न होगी। दो तीन दिन में ही दाद से पीछा छूट जायगा यह खाज, दाद, विचर्चिका, कंडू, चरकस रोग को भी दूर करने की उत्तम औषधि है।

व्यवहारविधि–दाद को धन्वन्तरि सोप से या नीमके पानी से या गरम पानी से खूब धोकर साफ करले और कपड़ा से पोंछ कर इस मरहम को अच्छी तरह मले। दिनमें २–२ बार लगावे तब १ दिनमे ही खुजली और २-३ दिन में दाद जाता रहता है।

दद्रकुठार चूर्ण—इसको नीबू के रस या मिट्टी का तेल अथवा साधारण घी में मिलाकर लगाने से दाद नष्ट हो जाता है।

दद्रहरि मरहम—दाद को साफ कर इसको मल देने से ही दाद, खुजली जाती रहती है।

नारकेल तैल—यह दाद की तो बात ही क्या छाजन जो बड़ी कठिनता से जाता है इसके लगाने से ५—७ दिनमें ही नष्ट हो जाता है। खुजली तो लगाते ही बन्द हो जाती है। यह रुई की फुरफुरी से चुपड़ा जाता है।

धन्वन्तरि सोप

धन्वन्तरि सोप—यह सोप अर्थात् साबुन सब प्रकार के चर्म रोगों के लिये उत्तम है और कीटाणु नाशक है। डाक्टरों में तो यह प्रथा प्रचलित है कि रोगी की परीक्षा कर हाथ धो लेते है पर वैद्यों में यह प्रथा प्रचलित नहीं है हालांकि आयुर्वेद के आचार्य भी इस सिद्धान्त को मानते हैं हारीत संहिता में लिखा है कि—

> नाड़ी स्पृष्टातु यो वैद्य, हस्तपूतं समाचरेत्।
> रोग शान्ति भवेदेद्यो, गंगास्नान फलं लभेत्॥

रोगीकी नाड़ी देख हाथ धो डालने चाहिये ऐसा करने से रोगी का रोग नष्ट होता है और वैद्य को गंगास्नानका फल प्राप्त होता है

अहा ! देखिये हमारे पूर्वजोंकी कैसी उत्तम पौलसी थी सम्भव है कि कोई वैद्य अदृश्य जीवाणु प्रवेश को न मानकर आचार्य्य के वाक्य की उपेक्षा करने लगे इसलिये ही धर्म्म प्राण भारतवासी वैद्यों के लिये धर्म का लोभ दिया गया था । यह साबुन हमने रासायनिक क्रिया से इसलिये ही बनाया है इसके व्यवहार से कीटाणु प्रवेश का भय नहीं रहता आज कल के कारबोलिक नीम का साबुन आदि सब से उत्तम है एक बार परीक्षा कीजिये और आचार्य के वाक्य का आदर कीजिये ।

कासहरि वटी

कासहरि वटी—सबप्रकार की साधारण खांसी के लिये सर्वोत्तम है बांटने वालों के बड़े काम की वस्तु है ५–७ बार में एक एक गोली मुख में डाल रस चूसने से खांसी बंद हो जाती है ।

कासारि शर्बत

यह शर्बत खांसी, जुकाम, नजला, और श्वास के लिये सर्वोत्तम है । पित्त प्रकृति वाले मनुष्यों के लिये तो रामबाण है इसकी २-४ खुराक से ही रोगी जो खाँसते २ बेचैन होरहे हों उनको शान्ति मिलती है । एक बार अवश्य परीक्षा कीजिये ।

जुकाम और गले की खुजली तथा नजला इससे बात की बात में दूर हो जाता है जो जुकाम से परेशान रहते हैं उनके लिये संजीवनी है ।

सेवनविधि—प्रातः सायं एक एक तोला चाटना चाहिये यदि खांसी अधिक उठे तब छः छः माशे ४-५ बार चटाना चाहिये

श्वासान्तक द्राक्षासव

हन्ति पञ्चविधं कासं श्वासमेव सुदारुणम् ।
रोगानेतान निहन्त्याशु बल पुष्ट्यग्निवर्द्धनम् ॥

श्वासान्तक द्राक्षासव–यह सब प्रकार के पुराने श्वास (दमा) को नष्ट करने वाला है। हमने इसे बड़े परिश्रम से बनाया है। स्वेदन, वमन कर्म कराने के बाद इसका सेवन कराने से कैसाही कठिन श्वास हो अवश्य नष्ट हो जाता है जो लोग कहते हैं कि दमा दम के साथ जाता है वह इसकी अवश्य परीक्षा करें।

सेवनविधि—इसको प्रातः सायं तीन तीन माशे प्रथम दिन पिलावे दूसरे दिन ४ माशे ३ रे दिन ५ माशे इस तरह प्रति दिन एक एक माशा बढ़ाकर १ तोले की मात्रा कर देनी चाहिये। एक तोले की मात्रा होने पर बढ़ाना बंद करदें यदि बीच में ही गरमी मालूम हो तब दो तीन दिन उतनी ही मात्रा दें। बढ़ावें नहीं जब गरमी न मालूम हो तब फिर बढ़ानी चाहिये। यदि गरमी अधिक मालूम हो तब गांजवा का अर्क तोला २ पिलावें। पहले १० दिन भोजन मे दूध घी कम लें, दाल मूगकी रोटी रूखी ले १० दिन बाद घी, दूध खूब ले सकते हैं।

श्वासामृत

अपि वैद्य शतैस्त्यक्तं स्वासं हन्ति सुदारुणम् ।
कासं पञ्चविधं हन्ति त्रिवधोपद्रवान्वितम् ॥

श्वासामृत—श्वास (दमा) के लिये अमृत है इससे कैसा ही दमा उठ खड़ा हुआ हो २—४ खुराक से ही शान्त हो जाता है हमारे वर्षों के अनुभव से यह बात सिद्ध हो गई है कि श्वास को तत्काल शांति करने वाली अव्यर्थ औषधि है श्वास के दौड़ा को (वेगको) रोकने के लिये अव्यर्थ है। एक बार परीक्षा कर देखिये। जो कहते हैं कि दमा दमके साथ जाता है उन्हें हम सिद्ध कर दिखाने को प्रस्तुत हैं कि दमा दमके साथ नहीं किन्तु हमारी आयुर्वेदीय चिकित्सा से नष्ट हो जाता है। श्वास वाले रोगी एक बार हम से अवश्य मिलें या लिखें।

सेवनविधि—एक एक निशान थोड़ा जल मिला कर प्रातः सायं पिलाना चाहिये।

कफगजकेशरी

कफगजकेशरी—जिन्हें कफ का अधिक प्रकोप हो अथवा खांसी के साथ अधिक कफ जाता हो उन्हें रामबाण है। सन्निपात रोग में जब श्वास कफ का वेग हो तब भी यह बड़ा लाभ करता है।

सेवनविधि—४ चार चावल से १ रत्ती परियन्त शहत और अद्रक के रस में अथवा शहत के साथ प्रातः और सायं चटावें या आवश्यक समय पर।

गृहणीरिपु

ग्रहणीं हन्त्यातीसारं मन्दाग्नित्वमरोचकम्।
अजीर्णमाम दोषञ्च विसूचीमपिदारुणम्॥

गृहणीरिपु—हमने इसे बड़े परिश्रम से बनाया है। यह गृहणी रोग के लिये अव्यर्थ है हजारों रोगियों पर परीक्षा कर हमने इसे अब वैद्यों के सामने रक्खा है एकबार परीक्षा कर देखिये पुराने दस्तों के लिये चुनी हुई एकही औषधि है। पाचन शक्ति को बढ़ाने के लिये इसके समान दूसरी औषधि नहीं है।

सेवनविधि—प्रातः सायं चार चार रत्ती तक्र के साथ फकावें तक्र में कालीमिर्च, जीराभुना सेंधानमक मिलावें विशूचिका में मृतसजीवनी सुरा के साथ दें।

धन्वन्तरि-सुधा

अर्थात्

देशी क्लोरोडीन

धन्वन्तरिसुधा—आजकल सर्वरोग नाशक औषधियोंका प्रचार अधिक बढ़ रहा है और अनेक व्योपारी सुधासिन्धु, पीयूष सिन्धु अमृतधारा, पीयूषबिन्दु आदि अनेक नामवाली औषधि वेच रहे हैं विलायतवाले भी घरेलू औषधि कहकर क्लोरोडीन नामक औषधि की विक्री कररहे हैं हमने यही देख आयुर्वेदके सिद्धान्तानुसार यह औषधि बनाई है यह उन सब औषधियों से प्रथक् और देशी औषधियों से निर्माण कीगई है आजकल की तरह यह नहीं कियागया कि वही विलायती औषधियां लेकर और देशी नाम रखकर आविष्कार करने लगे साथही हमें यह कहने मे भी संकोच नहीं कि यह समस्त रोगों को नष्ट करनेवाली नहीं है औरन आजकलकी बिकने वाली अन्य औषधियां है। वह सिर्फ सामयिक रोगों में जो प्रायः तत्काल होजाते हैं लाभकारी होती हैं और यह भी उन समस्त दशाओं में तत्काल लाभकारी है जैसे अजीर्ण, पेटका दर्द, अजीर्ण के दस्त, जी मिचलाना, कै होना, विशूचिका (हैजा) संग्रहणी के दौड़ेके समय कफ. खांसी, श्वास, के वेग के समय, आंव लोहू के दस्त, बालकोंके हरे पीले दस्त, दूधपटकना, शिरदर्द, कमरका दर्द, चोट लगजाने और अग्नि से जलजाने तथा विषैले जानवरों के काटे परभी लाभ करने वाली है **सेवनविधि** ५ से १५ बूंद तक गुनगुने पानी में मिलाकर प्रातः सायं अथवा समय परदें।

ग्रहणीकपाट (लाल गुटिका)

प्रद्याद् ग्रहणी गुल्म क्षय कुष्ठ प्रमेहके।
कपाटो ग्रहणी रोगे रसोऽयं वह्नि दीपनः ॥१॥

धन्वन्तरि

ग्रहणी कपाट (लाल गुटिका)—अतीसार, आमातिसार, रक्त तिसार और सग्रहणी के दस्त रोकने वाली है। साधारणतः बांटने के योग्य औषधि है। अनेक धर्मार्थ औषधालय में इसका उपयोग होता है और रोगी प्रशंसा करते हैं।

सेवन विधि—एक एक वटी दिनमें तीन बार। साधारण दस्त में जल के साथ और आमातिसार, रक्तातिसार में सेंधानमक हींग जीरा थोड़ा २ लेकर पानी में पीस गरम कर गोली के ऊपर पीना चाहिये।

विषमुष्टिका वटी

चतुर्व्विधमजीर्णाश्च वह्निमान्द्यं विशूचिकाम्।
गुल्म शूलादि रोगांश्च नाशयेद विकल्पत ॥

विषमुष्टिका वटी—वात शूल (वायु गोला) अजीर्ण, मन्दाग्नि, विशूचिका, पेटका दर्द, अफरा को नष्ट कर अग्निको बढ़ानेवालीहै

सेवन विधि—भोजनोपरान्त अथवा आवश्यक समय में एक गोली से तीन गोली पर्यन्त गरम पानी के साथ सेवन करावें।

मुखके छालों की दवा

मुख और गले में मन्दाग्नि से या अजीर्ण से अथवा रक्त की गरमी से जब छाले हो जाय और भोजन करना कठिन हो जाय तब यह विशेष लाभ करती है।

व्यवहार विधि—चार रत्ती मुख में डाल अच्छी तरह जीभ से चारों तरफ फेरले फिर नीचे को मुख करदे उस से बादी का पानी लार निकल कर छाले सूख जांयगे।

बाल अपस्मारहरि वटी

बाल अपस्मारहर वटी-बालकों को आजकल यह रोग अधिक देखने में आता है। बालक बेहोश हो जाताहै, हाथ पैर एंठजाते हैं मुख से लार (झाग) गिरने लगता है, दांती बन्द हो जातीहै ऐसी हालत बालक की देख प्रायः स्त्रियां भूत बाधा समझ झाड़ फूंकमें रहतीहैं और बालक का रोग प्रतिदिन बढ़ता जाता है हमने यह देख यह वटी बड़े परिश्रम से बनाई है एक बार वैद्यों से व्यवहार करने का अनुरोध करते हैं

सेवनविधि—एक एक वटी प्रातः सायं माता के दूधके साथ और जो बालक माताका दूध न पीते हों उन्हें पान के अर्क के साथ सेवन करानी चाहिये।

मधुमेहान्तक रस

मधुमेहान्तको नाम रसः परम शोभनः।
मधुमेहं सोमरोगं हन्तिभास्वान् यथातम.॥ धन्वन्तरि

मधुमेहान्तक रस—मधुमेह जिसे डाक्टरीमें डायबिटीज कहते हैं उसकी यह अव्यर्थ महौषधि है। बहुमूत्र, सोमरोग से भी विशेष लाभप्रद है। डाक्टर इस रोग को नष्ट करने में असमर्थ होते हैं वहां आयुर्वेद की यह एकही औषधि रोग नष्ट कर डाक्टर साहेब को चकित कर देती है वैद्यों एवं मधुमेह रोगियो से अनुरोध है किवह इस का व्यवहार कर हमारे श्रम को सफल करें

सेवनविधि—प्रातः और सायं एक एक वटी—गिलोइ के स्वरस के साथ चाटें अथवा केला की पकी फली एकले उसमें मिलाकर चाटें अथवा १ गोली निगल उपरसे गूलर का क्वाथ पीवें।

स्तम्भन वटी

स्तम्भन वटी—यह वटी वीर्य्य को पुष्ट करने वाली और स्तम्भन शक्ति को बढ़ाने वाली है। नित्यप्रति सेवन करने से कुछ हानि नहीं करती किन्तु अपना प्रभाव स्थाई करदेती है।

व्यवहार विधि—स्त्री सेवन के १ घन्टे पूर्व १ से ३ वटी परियन्त दूध के साथ निगलनी चाहिये अथवा प्रातः सायं दूध के साथ निगले तब यह स्वप्न प्रमेह और वीर्य्य श्राव को नष्ट करदेती है।

वृहत् द्राक्षासव

हन्ति कासं स्वराघातं क्षय कासं क्षत क्षयम्।
बल वर्णाग्नि पुष्टीनां साधनो दोष नाशनः॥

धन्वन्तरि

बृहत् द्राक्षासव—आज कल द्राक्षासव का प्रचार अधिक है और हमारे यहाँ भी बनता है पर यह बृहत् द्राक्षासव विजयगढ़ के नामी प्रतिष्ठित विद्वान सिद्धहस्त चिकित्सों के अनुभव का फल है इस में उन्होंने अनेक बल वर्धक पाचन, दीपन औषधियों का समावेश कर दिया है तथा सेब, अनार, सन्तरा अंगूर प्रभृति अनेक फल भी डालने का विधान किया है यह उन्हीं सब औषधियों के द्वारा बनाया जाता है और क्षय, उरःक्षत, कफ, खांसी को नष्ट करने एवं बल बढ़ाने के लिये अति उत्तम औषधि है। २-४ दिनके सेवन से ही बल बढ़जाता है, भूक लगने लगती है, कफ खांसी कम होजाती है कैसा ही निर्बल रोगी हो इस के पीने से अवश्य बलवान हो जाता है।

सेवन विधि—भोजनो परान्त—अथवा प्रातः सायं एक या दो तोला की मात्रासे पिलावें।

अमृतवटिका—प्रमेह, वीर्यस्राव, स्वप्नप्रमेह, सुजाक, मूत्रकृच्छ्र को नष्टकर बल को बढ़ाने वाली है बृहत द्राक्षासव के साथ इस के सेवन से कैसाही प्रमेह हो (असाध्य न हो) अवश्य नष्टहो जाता है

व्यवहार विधि—एक एक गोली प्रातः सायं निगल ऊपर से दूधया बृहत् द्राक्षासव पीना चाहिये।

आमलेका तेल—आजकल मिट्टीके गन्धरहित तैलमें आमले का ऐसेन्स और रंग डाल कर बनाया हुआ आमले का तैल अधिकतर मिलता है यह देख हमने शुद्धतिलो के तैल और हरे आमले डाल तथा खुशबू के लिये बालछड़, मोथा, चन्दन, आदि पदार्थ डाल कर बनाया है इस के मलने से बाल काले रहते हैं मस्तिष्क ठंडा रहता है।

करंजादि वटी

शीतज्वरे महाघोरे यामैकान्नाशयेत्ध्रुवम्
सप्तहात्सन्निपातोत्थं ज्वराजीर्णक संज्ञकम्

धन्वन्तरि ।

करंजादिवटी—यह कुनाईनसे भी शीघ्र मलेरिया (प्राकृतज्वर) के वेग को रोकने वाली है। और कुनाईन के मुआफिक गरम भी नहीं है। ज्वर, जूड़ी, (विषमज्वर) के लिये प्रसिद्ध औषधि है।

व्यवहार विधि—समय—प्रातः सायं और वेग के १ घन्टे पूर्व २ घन्टे पूर्व ३ घन्टे पूर्व गरम जल के साथ देनी चाहिये। मात्रा—१ वटी से २ वटी पर्य्यन्त।

ज्वर, जूड़ी, यकृत, प्लीहा के लिये—

वल्लभ मिक्सचर

यह मैलेरिया (विषमज्वर) की राम बाण औषधि है। इसके सेवन से एकतरा तिजारी चौथैया ज्वर, जूड़ी दो चार मात्रा में ही जाती रहती है। जिनको मैलेरिया के कारण तिल्ली, जिगर, बढ़ गया हो शरीर पीला पड़ गया हो भूक जाती रहती हो शरीर में हड़क न रहती हो उन्हें बड़ा लाभ दायक है।

सेवन विधि—इसकी मात्रा १ तोले की है २ तोले पानी मिला कर सेवन कराया जाता है एक मात्रा प्रातः और १ मात्रा ज्वर के वेग से १ घन्टे पूर्व पिलानी चाहिये।

पंचतिक्तासव—यह मैलेरिया ज्वर की प्रधान औषधि है साथ ही तिल्ली, जिगर, पांडु के लिये भी उत्तम है। दस्तभी लाता है पर तकलीफ नहीं होती।

सेवनविधि—प्रातः और ज्वर के वेग के १ घण्टे पूर्व दो दो तोले पिलाना चाहिये।

टङ्कणवटी—गुल्म; तिल्ली, यकृत, शूल रोग के लिये उत्तम है

सेवन विधि—प्रातः सायं एक २ या दो दो वटी ग्वार पाठे के रस या गौ मूत्रके साथ सेवन करावें।

कर्णामृत तैल

वाधिर्य्यं कर्णनादश्च पूयस्रावश्चदारुण।
पूरणादस्य तैलस्य क्रिमयः कर्ण संश्रिताः॥

धन्वन्तरि।

कर्णामृत तैल—कानके समस्त रोगोको नष्ट करने वाला तैल है। बहरापन में भी लाभ दायक है। कान में जो शब्द होता है अथवा पीव आती है तब विशेष लाभ करता है।

व्यवहार विधि—रात्रि को और दुपहर को पांच २ बूंद डाल लेटे रहना चाहिये कानको तैल डालने के पूर्व साफ करलेना चाहिये।

कर्णमूलहर लेप—कन्नमूल (कर्णमूल) कान की जड़ में होताहै उसके लिये यह बड़े महत्व की औषधि है कैसाही उग्र रूप धारण किये हुये हो इसको कपड़ा पर लेप कर चुपका दीजिये और देखिये लाभ कितना होता है।

नेत्रबिन्दु

नेत्रबिन्दु—आँख दुखने आई और मनुष्य बेचैन हुआ पानी निकलना, लाल होना, किरकिराना, सूजन होना आदि बातें होजाती है। इसकी दो दो बूंद दिनमें २-३ बार डालेंगे एकही दिनमे लाभ होता है २-३ दिन में आंख पूर्ववत् (स्वच्छ) होजाती है। घरेलू औषधि है। धनाढ्य बांट कर पुण्य संचय करते हैं।

नेत्रसुधारस—इसके आंख में लगाने मात्र से रोहे नष्ट होजाते है यह रोहे के लिये ही बनाई गई है कारण आजकल यह रोग अधिकता से होने लगा है और डाक्टर इसकी चिकित्सा से घबड़ाते हैं यह देख बड़े परिश्रम द्वारा तैयार कीगई है।

व्यवहार विधि—काजल की तरह प्रातःसायं लगाना चाहिये। यदि गाढ़ा होजाय तब थोड़ा नीबू का रस डाल पतला करलें।

मुक्तादि अंजन—आंखकी ज्योति बढ़ाने के लिये सर्वोत्तम है साथही पानीका बहना, कीचड़ आना लाली रहना, परवाल होना आदि आंखों के रोगों में अपूर्व है सलाई से प्रात सायं लगाना चाहिये।

नेत्ररक्षक सुरमा—यहभी आंखकीज्योति बढ़ाने और साधारण रोगों में लाभदायक है यह भी सलाई से प्रातः सायं लगाया जाता है।

छात्र बन्धु

आयु वीर्य्यं धृति मेधां बलं कान्ति त्रिवर्द्धयेत ।
वाग् विशुद्धि करोऽहृद्यो रसायन वरः स्मृतः ॥

छात्रबन्धु—हमने यह गरीब विद्यार्थियों के लिये बनाया है जो विद्यार्थी सारस्वतारिष्ट जैसी मूल्यवान औषधि न सेवन कर सकें वह इस को सेवन कर अपनी याददास्त (स्मरण शक्ति) बढ़ा सकते हैं और कंठ वाणी शुद्ध कर सकते हैं ।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक तोला पानी एक एक तोला मिलाकर पीवें ।

वातारि वटिका

अग्निञ्च कुरुते दीप्तं तेजोवृद्धिं बलं तथा ।
वातरोगान् जयत्येष सन्धि मज्जा गतानपि ॥

वातारि वटिका—वात रोग अनेक प्रकार का होता है । किसी के सम्पूर्ण शरीर को पकड़ लेता है और नस २ में दर्द पैदा कर देता है । किसी के जोड़ो में ही दर्द होता है जिसे लोग गठिया कहतेहैं । किसीके कमर में अथवा बांह पोंहुचा पैर मे ही दर्द करता है, किसी का आधा शरीर ही जकड़ देता है जिसे पक्षाघात अर्थात् अर्धांग बात कहते हैं । किसी का हाथ पैर ही कांपने लगता है । किसी का हाथ पैर सुखा ही देता है । किसीका मुख ही टेढ़ा कर देता है आदि अनेक प्रकार की तकलीफ हो जाती हैं,

इन तकलीफों के अनुसार ही इसको अनेक नामों से बोलते हैं जैसे लकवा, गठिया, आमवात, ऊरुस्तम्भ, अपतानक, अपतन्त्रक कंपवायु, आदि आदि।

हमने यह वातारि वटिका बड़े परिश्रम और विचार के साथ बनाई है इसके सेवन से सब प्रकार की वात व्याधि (वातरोग) नष्ट हो जाती है दर्द तो बात की बात में दूर होकर रोगी को चैन पड़ता है शरीर स्वस्थ्य हो जाता है। सन्धि और मज्जागत वायु को निकाल कर बाहर कर देतीहै अग्नि को बढ़ा देती है तेज और बलकी वृद्धि करती है। जो रोगी अनेक औषधि सेवन कर निराश होगये हैं, वह एक बार इसका सेवन अवश्य करें।

सेवन विधि—प्रातः और सायं एक एक अथवा दो दो वटी निगल ऊपर से गरम दूध ६ माशे एरंड तेल डाल कर पीवे।

नोट—जो तैल डाल कर दूध न पी सके वह वैसाही मिश्री मिला दूध पी सकते हैं।

धन्वन्तरि वाम—यह सब प्रकार के दर्द, को मलते २ ही बन्द कर देता है। शिर दर्द मस्तिष्क दर्द, के लिये प्रधान औषधि है गरमी के दिनों में मस्तिष्क के दर्द को बन्दकर मस्तिष्क को शीतल कर देता है।

व्यवहार विधि-जहां दर्दहो वहां थोड़ासा वाम मलदेना चाहिये

शिरो विरेचनीय नश्य—बिगड़ा हुआ जुकाम और पीनस

तथा पुराने शिरदर्द में मस्तिष्क (शिर) से बलगम निकालने के लिये सर्वोत्तम है।

व्यवहार विधि—एक एक रत्ती नाक के दोनों नथुनों में सूंघ लेना चाहिये।

मूर्छान्तकनस्य—मूर्छित (बेहोश) के नाक में दो दो चावल यह नस्य किसी नली या कागज की नली बना उसमें भरकर फूंकदे, फूंकते ही छींक आकर रोगी चैतन्यता (होश मे) लाभ करता है।

वृद्धिहर लेप—यह अंड वृद्धि (अंडकोष का बढ़ जाना) तथा सुजाक की गांठ को नष्ट करने के लिये उत्तम है।

व्यवहार विधि—कपड़े पर लेप कर चुपका दे और रुई का नामा या ऊनी कपड़ा से सेक करदे।

हस्तिदन्तादि चूर्ण—यह गंज की दवाहै साथही जिनके बाल झड़ते हों उनके लिये भी उत्तम है।

व्यवहार विधि—इस चूर्ण को बकरीके दूध में अथवा नारियल के पानी में मिलाकर दिनमें २-३ बार लेप करना चाहिये।

परिशिष्ट (शास्त्रीय औषधियां)

पहिले हम निम्न लिखित औषधियों की सेवन विधि नहीं लिख सके थे यह औषधियां सब शास्त्रीय हैं और प्रभावशाली हैं अतः वैद्य इनका भी व्यवहार कर लाभ उठा सकेंगे इस लिये इनकी व्यवहार विधि अब लिखी जाती है।

वृद्धिवाधिका वटिका

अन्त्रवृद्धि रसाध्यापि तथ्यं नश्यति सत्वरम्।
अन्त्रेऽन्ये बहवो रोगा जायन्ते बहुदुःखदाः ॥

भैषज्य।

वृद्धिवाधिका वटिका—आंत उतरना जिसे सर्व साधारण में कहते हैं उसेही वैद्यक में अन्त्र वृद्धि और अं वृद्धि दोनों के लिये विशेष उपयोगी है।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक १ अथवा दो दो वटी जलके साथ निगलनी चाहिये। इसके साथही साथ अंड वृद्धिमें लेप भी लगाना चाहिये। तथा लंगोट भी बांधना चाहिये।

पानीय भक्त वटिका

हन्त्यम्लपित्तमरुचिं गृहणीमसाध्याँ-
दुर्नाम कामलभगंदरशोथगुल्मान्।
शूलञ्च पाकजनितं सततान्गिमान्द्यं,
सद्य करोत्युपचितिंचिदि नष्टवन्हे ॥

भैषज्य रत्नावली।

पानीयभक्त वटिका—यह अमलपित्त के लिये प्रधान औषधि है। अरुचि, गृहणी, कामला, भगन्दर, शोथ, गुल्म, शूल मन्दाग्नि के लिये भी उत्तम है।

सेवन विधि–प्रातः सायं एक एक वटी आमले के रसके साथ अथवा त्रिफला के क्वाथ के साथ सेवन करावें। गुल्म, शूल में कुमारी आसव के साथ सेवन करावें। अरुचि में मधु के साथ चटावें।

रसराज

धनुस्तम्भेऽपतानेच बाधिर्य्यें मस्तकभ्रमे।
सर्व्व वात विकारेषु रसराजः प्रकीर्तितः॥
भैषज्यरत्नावली।

रसराज—यह वातव्याधि की प्रधान औषधि है। पक्ष घात (अर्द्धाङ्ग लकवा) आर्दित, हनुस्तम्भ अपतन्त्र, धनुस्तम्भ, अपतानक, बहरापन, मस्तकभ्रम आदि सब प्रकार के वातरोग में लाभदायक है साथही बल, वीर्य्य को बढ़ाने वाला वाजीकरण भी है। अस्थि (हड्डी) के रोगों में विशेष लाभ करता है।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक रत्तोसे ४ रत्ती परियन्त मक्खन में मिलाकर चटावें अथवा फंका ऊपर से मिश्री मिला दूध पिलावें

बृ० काम चूड़ामणि रस

वीर्य हीनोभवेद्यस्तु योवा स्यात्पलितध्वजः।
सोऽशोति वार्षिको भूत्वा युवैव रमतेऽङ्गना॥
भैषज्य रत्नावली

बृहत् काम चूड़ामणि रस—गुण नाम से ही प्रकट है। यह प्रयोग काम शक्तिको बढ़ाने वाला और स्तम्भक है। नपुंसकता के लिये तो रामबाण है। प्रमेह वीर्य्यश्राव को रोकने वाला है वीर्य्य और बलको बढ़ाने के लिये अद्वितीय है। इसके जो गुण शास्त्रकारों ने लिखे हैं उन्हें पढ़ आश्चर्य्य करेंगे हम वैद्योंसे एवं निर्बल निस्तेज नपुंसक और प्रमेह रोगियो से भो अनुरोध करते हैं कि एक बार इस का व्यवहार अवश्य करें।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती परियन्त पर एक साथ ४ रत्ती न दें क्रमशः बढ़ा कर ४ रत्तीतक कर सकते हैं।

अनुपान—दूधकी मलाई या मक्खन में मिलाकर चाटें ऊपर से मिश्री मिला दूध औटाकर ठन्डा कर पोना चाहिये।

श्वासचिन्तामणि रस

गुञ्जाचतुष्टयञ्चास्य विभीतकसमान्वितम्।
भक्षयेत् श्वास कासार्तो राजयक्ष्मानिपीड़ितेः॥

भैषज्यरत्नावली

श्वासचिन्तामणि रस—यह श्वासके लिये प्रसिद्ध औषधि है। राजयक्ष्मा रोगी को यदि खांसी, कफ, अधिक हो या श्वास उत्पन्न होगई हो तब विशेष लाभ होता है। इस के साथ श्रृंगीगुड़घृत सेवन किया जाय और यह दोनों अधिक दिन निरन्तर सेवन कीजाय तो पुराना श्वास भी नष्ट हो जाता है।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्तीसे चार रत्ती परियन्त। मक्खन या शहद में प्रात.सायं चाटें और दुपहर को तथा रातको शृंगीगुड़ घृत सेवन करें।

शृंगीगुड़ घृत

श्रृङ्गीगुड़ घृतंनाम सर्व्वरोगहरं परम्।
अपि वैद्य शतैस्त्यक्तं श्वासं हन्ति सुदारुणम्॥

भैषज्य रत्नावली

शृङ्गीगुड़घृत-सर्व प्रकारके कास, श्वास, की परमोत्कृष्ट औषधि है जिसको सैकड़ों वैद्योंने त्याग दिया हो ऐसो दारुण श्वास के लिये और सब प्रकार के खांसी के लिये सर्वोत्तम औषधि है। क्षय, रक्तपित्त, स्वरभंग, अरुचि के लिये लाभप्रद है।

सेवन विधि-मात्रा १ माशे से ६ माशे परियन्त (ग्रन्थकारने १ तो० मात्रा लिखी है वह अधिक है) अनुपान-काठ विलाई का चूर्ण १ तोला, कालीमिर्च का चूर्ण ४ तोला दोनों को जलके साथ खरल कर एक १ माशे की गोली बनावें (ग्रन्थ कार ने चार माशे की लिखी है वह अधिक है) और प्रथम शृंगीगुड़घृत सेवन कर ऊपर छे गोली खा गरम जल पीवें। अथवा दो दो माशे प्रातः सायं या दुपहेर को और रात को गुनगुने पानी के साथ सेवन करें।

नष्ट पुष्यान्तक रस

नष्टपुष्ये नष्ट शुक्रे योनिशूले च शस्यते।
ऋतुशूले क्लेद्योन्याँ विशेषे चाममारुते॥

भैषज्यरत्नावली

नष्टपुष्यान्तक रस—इसके सेवन से नष्ट हुआ आर्तव पुनः उत्पन्न होने लगता है और फिर वह नियमित रूपसे होने लगता साथही योनिशूल कोभी नष्ट करता है जिन स्त्रियों को मासिक धर्मके समय कष्ट (पीड़ा) होती है उनके लिये तो यह रामबाण ही है। पुरुषों के नष्ट हुऐ शुक्र (वीर्य) को भी उत्पन्न करता है।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक वटी दूध के साथ सेवन करावें कष्टार्तव मे कुमारी आसव के साथ सेवन करावें अथवा मधु में मिलाकर चाटें।

आरोग्य वर्द्धनी गुटिका

आरोग्यवर्द्धनी नाम्ना गुटिकेयं प्रकीर्तिता।
सर्वरोग प्रशमनी श्री नागर्जुन योगिना॥

रस रत्न समुच्चय

आरोग्यवर्द्धनी गुटिका—गुजराती वैद्य इसका विशेष उपयोग करते हैं वह ज्वर शोथ कुष्टमे इसका व्यवहार करते हैं। ज्वर आने के ५ दिन बाद यह दी जाती है सब प्रकार के ज्वर के लिये उत्तम

है। कुष्ट और मंडल कुष्ट में लाभ दायक हैं। शोथ रोग में भी विशेष उपयोगी है। यह पाचन, दीपन है तथा मेद नाशक और मल शोधक है क्षुधा को बढ़ाने वाली है।

सेवन विधि—मात्रा १ वटी से ४ वटी परियन्त। शोथ में पुनर्नवादि क्वाथके साथ प्रातः सायं दें। ज्वर में शहतके साथ या गिलोइ के क्वाथ के साथ दें। कुष्ट में खदरारिष्ट या खैरसार के क्वाथ के साथ दें।

मूत्र कृच्छ्रान्तक रस

मूत्रकृच्छ्रान्तकरस—भैषज्यरत्नावली के पाठानुसार बन हुआ यह रस थोड़ा २ और दर्द के साथ होने वाले मूत्र के लिये प्रधान औषधि है। सुजाक में भी लाभदायक है।

सेवनविधि—प्रातः सायं एक २ वटी शहत माशे छ—छ के साथ चटावें अथवा कच्चे विनागरम कियेहुये दूध के साथ निगलवादें

कांकायन गुटिका

क्षाराग्नि शस्त्रपतनैरपियेनसिद्धाः
सिध्यन्त्यनेन वटकेन गुदामयास्ते

योगरत्नाकर

काङ्कायनगुटिका—इनके सेवन से क्षार, शस्त्र अग्नि, आदिसे भी आराम न हो सकने वाली अत्यन्त दुस्साध्य ववासीर नष्ट हो जाती है। अर्शरोग की यह दवा है अधिक दिन सेवन से यथेष्ट लाभ होता है।

सेवनविधि—एक-एक अथवा दो दो वटी प्रात सायं जलके साथ या अभयारिष्ट के साथ सेवन करनी चाहिये । भोजनोपरान्त भी सेवन कराई जा सकती है ।

समीर पन्नग रस

महावाताञ्जयत्याशु नासाऽमातः सुसंज्ञकृत् ।
योगरत्नाकर, भावप्रकाश ।

समीरपन्नगरस—यह वात व्याधिकी प्रसिद्ध औषधि है । इसके सेवन से शरीर का दर्द गठिया का दर्द दूर होता है ।

सेवनविधि—मात्रा १वटी से २ वटी पर्यन्त अनुपान—गुनगुना जल या पान का रस । अद्रक का रस अथवा खांड और त्रिकुटा चूर्ण मिला कर फांके ।

त्रिविक्रम रस

बीजपूरस्यमूलं तु सजलंचानुपाययेत् ।
रसास्त्रिविक्रमोनाम्ना सिकतां चाश्मरीजयेत् ॥
योगरत्नाकर ।

त्रिविक्रमरस—यह अश्मरी रोग की राम-बाण औषधि है । मूत्रेन्द्रियमें जब पथरी पड़ जाती है तब यही औषधि काम देती है ।

सेवनविधि—प्रातः सायं एक एक अथवा दोदो रत्ती शहद में चटा। ऊपर से विजोरे की जड़ का क्वाथ अथवा वृन्त्रहणादि क्वाथ पिलावें।

त्रिकट्वादि लोह

त्रिकट्वादि लौह—यह भैषज्यरत्नावली के पाठानुसार बनाया जाता है। शोथ रोग के लिये विशेष उपयोगी है। यकृतविकार के लियेभी लाभदायक है। सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक बटी निगल ऊपर से पुनर्नवासव या गोमूत्र पीना चाहिये।

क्षुधावती गुटिका

अम्ल पित्तञ्च शूलञ्च परिणाम कृतञ्च यत्।
तत्सर्वं शमयत्याशु भास्करस्तिमिरंयथा॥

भैषज्यरत्नावली।

क्षुधावतीगुटिका—यह अमलपित्त की प्रधान औषधि है अजीर्ण, शूल, परिणाम शूल को भो नष्ट करने वाली है भूक को लगाने वाली मन्दाग्नि संग्रहणी को नष्ट करने वाली है। सेवनविधि—१ गुटिका प्रातः काल कांजी के जल के साथ सेवनकरें। अथवा आमले के क्वाथ के साथ प्रातः सायं सेवन करें।

कनक सुन्दर रस

भक्षणाद् गृहणी हन्ति रसो कनकसुन्दरः
अग्निमान्द्य ज्वरं तीव्रमतीसारञ्च नाशयेत्॥

भैषज्यरत्नावली।

कनकसुन्दररस—यह ज्वरातिसार की मुख्य औषधि है गृहणी, मन्दाग्नि को भी लाभदायक है। गृहणी रोग में जब कि ज्वर भी रहता हो तब यह विशेष लाभ करता है ।

सेवन विधि—एक एक वटी प्रातः सायं खिला ऊपर से गौ का दही या तक्र (छाछ) सेवन करावें ।

चन्द्रांशु रस

जरायुदोषानखिलान् योनि-शूलं सुदारुणम् ।
योनि कण्डु स्मरोन्मादं योनि विक्षेपणं तथा ॥

भैषज्य रत्नावली ।

चन्द्रांशु रस—यह योनि रोग की प्रसिद्ध औषधि है जरायु से उत्पन्नरोग, योनिशूल, योनि में होने वाली खुजली के लिये विशेष उपयोगी है। हिस्टेरिया रोग में भी लाभदायक है ।

सेवन विधि—एक अथवा दो गोली निगल उपर से जीरे का क्वाथ पिलावें ।

शोथोदरारि लोह

हन्ति सर्व्वोदरं शीघ्रं नात्र कार्य्या विचारणा ।
ये च शोथाः मुहुर्वाराञ्चिर कालानुबन्धितः ॥

भैषज्य रत्नावली ।

शोथोदरारि लोह—शोथ के साथ उदर रोग हो या उदर के साथ शोथ रोग हो तब यह विशेष लाभप्रद होता है ।

शोथ, पान्डु, कामला, प्रदर, यकृत, प्लीहा, गुल्म रोग में भी लाभदायक है साथ ही दस्त को लानेवाला विरेचक भी है।

सेवन विधि—प्रातः सायं एक एक वटी गौ मूत्र के साथ दें।

रक्तपित्तान्तक रस

माषमात्रं निहन्त्याशु रक्तपित्तं सुदारुणम्।
ज्वरं दाहं क्षत क्षीणंतृष्णा शोषम् रोचकम्॥

रसेन्द्रसारसंग्रह।

रक्तपित्तान्तक रस—रक्तपित्त के लिये प्रधान औषधि है और जिस ज्वर, क्षत क्षीण, क्षय शोष में रक्त जाता हो उसमें भी लाभदायक है। दाह तृष्णा को शान्ति करने वाला है।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती पारयन्त। १ रत्तीसे क्रमशः ४ रत्ती तक बढ़ावें। शहद मिश्री मिलाके अनुपान से सेवन करावें।

नव कार्षिक गुटिका

त्रिफला क्षौद्र संयुक्तां खादेच्च नवकार्षिकम्।
गुटिका शीतपित्तार्शो भगंदरवतां हिता॥

भाव प्रकाश।

नवकार्षिक गुटिका—यह शीत-पित्त वं दर्द की प्रसिद्ध औषधि है। इसके सेवन से शीतपित्त अर्श, भगन्दर, रोग दूर होते हैं।

सेवनविधि—एक एक अथवा दो दो वटी प्रातः सायं निगल ऊपर से त्रिफला का क्वाथ शहद डाल पीवें।

आनन्दोदय रस

वातश्लेष्म भवान्रोगान्मन्दाग्नि गृहणीज्वरान् ।
अरुचि पांडुताञ्चैव जयेद्चिर सेवनात् ॥
भैषज्यरत्नावली ।

आनन्दोदयरस—यह पांडु, कामला, हलीमक की प्रधान औषधि है साथही ज्वर, मन्दाग्नि, अरुचि, गृहणी, आदि रोग में भी लाभदायक है । सेवनविधि—सायंकाल एक अथवा २ वटी पान में रख कर सेवन करनी चाहिये अथवा गुनगुने जलके साथ निगल पश्चात पान चबाना चाहिये ।

सर्वांग सुन्दर रस

सर्वाङ्ग सुन्दरोह्येष राजयक्ष्मा निकृन्दनः ।
वात पित्त ज्वरे घोरे, सन्निपाते सु दारुणे ॥
रसेन्द्रसारसंग्रह ।

सर्वाङ्ग सुन्दर रस—राजयक्ष्मा की उस अवस्था में जबकि ज्वर अधिक हो और कफ अधिक निकलता हो विशेष लाभ करता । घोर वात पित्त ज्वर और दारुण सन्निपात में इस का प्रयोग विशेष लाभ प्रद रहता है । कफ विकार में विशेष लाभ करता है । सेवनविधि—मात्रा एक रत्ती से २ रत्ती पर्यन्त । अनुपान पीपल छोटी और शहद अथवा पीपल छोटी शहद और घृत के साथ या पान, मिश्री, अदरक का रस इनके साथ सेवन करना चाहिये ।

पुर्ननवादि लेह

लेहः पौनर्नवोनाम शोथ शूल-निसूदनः ।
कास श्वासाऽरुचिहरौ बलवर्णाग्नि वर्द्धनम्ः ॥

भैषज्यरत्नावली ।

पुर्ननवादि लेह—शोथ (सूजन) जब तमाम शरीर पर हो जाता है साथही उपद्रवरूप से कफ खांसी भी हो जाती है ऐसी कठिन अवस्था में यह लेह बड़ा चमत्कारिक प्रभाव करता है। गर्भावस्था में जिन स्त्रियों को सूजन हो आती है उनके लिये भी लाभदायक है। व्यवहारविधि —एक १ तोला प्रातः सायं चाटना चाहिये यदि यदि पांडु से शोथ हुआ हो तब इस में लोह भस्म एक १ रत्ती मिलाकर चाटना चाहिये।

रोहितकारिष्ट

प्लीहगुल्मोदराष्ठीला गृहण्यर्शांसि कामलाम् ।
कुष्ठ शोफारुचिहन्ते रोहितकारिष्ट संज्ञिक ॥

भैषज्यरत्नावली ।

रोहितकारिष्ट—यह प्लीहा अर्थात तिल्ली के लिये प्रसिद्ध अरिष्ट है साथही गुल्म, उदर, अष्ठीला, गृहणी, अर्श, कामला, शोथ, के लिये भी लाभदायक है। देखा गया है कि जिन्हें ज्वर के

बाद प्लीहा बढ़गई है या पांडु, कामला रोग उत्पन्न होगया है उन को यह जादू के समान लाभ करता है। गुल्म, यकृत रोग मे भी विशेष लाभ करता है। सेवनविधि—मात्रा १ तोले से २ तोले तक। अनुपान जल समय प्रातः सायं। ज्वर के साथ जिन्हें यकृत विकार हो उन्हें विषय ज्वरान्तक लौह एक एक गोली निगलवा ऊपर से इसे पिलाने से बड़ा लाभ होता है।

पुर्ननवासव

पुनर्नवासवो ह्येष शोथोदर विनाशनः।
प्लीहानमम्ल-पित्तञ्च यकृद् गुल्म ज्वरादिकान्॥

भैषज्यरत्नावली।

पुनर्नवासव—यह शोथ रोग को प्रसिद्ध आसव है साथही उदर गुल्म अमलपित्त यकृत, प्लीहा ज्वर में भी लाभ दायक है।
सेवनविधि—मात्रा १ तोले से २ तोला तक। अनुपान जल। समय प्रातः सायं।

रक्तशोधिकाऽरिष्ट

वातरक्तञ्च कुष्टञ्च दुन्दुविस्फोटकापचीन्।
विचिर्चकां चर्म दलं वातरक्तञ्च शोणितम्।

धन्वन्तरि।

रक्तशोधिकारिष्ट—रक्त किसी कारण से बिगड़ा हो इसके सेवन से साफ हो जाता है। उपदंशजनित रक्तदोष के लिये प्रधान औषधि वातरक्त कुष्ठ में भी लाभदायक है। सेवनविधि—दो दो तोला प्रातः सायं पानी और शहत मिलाकर पाना चाहिये।

सारिवाद्यासव

सारिवाद्यासवस्यास्य पानान्मेहाश्च विंशतिः।
शर्कराविकादयः सर्व्वाः पिड़कास्तत् कृताश्च याः॥
औपदंशिक रोगश्च वातरक्तं भगन्दरम्।
सर्व एते शमं यान्ति व्याधयो नात्र संशयः॥

सारिवाद्यासव—सर्व प्रकार के प्रमेह और प्रमेह पिड़िका इस के सेवन से नष्ट हो जाती है उपदंश और उपदंश के विकार तथा उससे उत्पन्न रक्त विकार इसके सेवन से नष्ट हो जाता है। वात रक्त के लिये अचूक महौषधि है। भगन्दर और कुष्ट में भी लाभ प्रद है इसके सेवन से रक्त की उष्मा शान्त होता है और शरीर कान्ति युक्त तथा बलिष्ट होता है। पुरान सुजाक में और सुजाक से उत्पन्न विकारों में तथा पारद से उत्पन्न विकारो में भी विशष लाभ-प्रद है। सुजाक, उपदश से उत्पन्न गाठया में भी बड़ा लाभप्रद है। सेवनविधि—मात्रा ६ माशे से २ तोला पर्यन्त। अनुपान जल।

जात्यादि तैल

नाड़ी व्रणो समुत्पन्ने स्फोटके कच्छुरोगिषु।
सद्यः शास्त्र प्रहारेषु दग्धविद्धेषु चव हि॥
शारंगधर संहिता।

जात्यादितैल—यह तेल सब प्रकार के फोड़ा और घाव के लिये उत्तम है। नाड़ी व्रण (नासूर) में भी विशेष लाभ करता है हथियार (शस्त्र) से कटने पर इसको लगाना बड़ा लाभ करती है। गृहस्थ में चाकू आदि लग जाते हैं उनमें बड़ा लाभ दायक है। अग्नि दग्ध (आग से जलने पर) भी लाभ दायक है।

व्यवहार—रुई का फाया भिगोकर व्रण, घाव स्थान पर रख ऊपरसे २-३ चमेली के पत्ता रख कपड़ा से बांध दें।

पिन्ड तैल

पिण्डाख्यं साधये तैलमभ्यंगातरक्तनुत्।

शारंगधर, योगरत्नाकर।

पिन्ड तैल—वातरक्त के लिये प्रसिद्ध है। गृहस्थों के बड़े काम का है जिन के हाथ पैर फटते हैं उन्हें बड़ा लाभ दायक है।

व्यवहार—दिन रात में २-३ बार चुपड़ देना चाहिये।

कटफलादि तैल

वक्षोरुकटिजङ्घानां संधानं श्रेष्ठमेवच।
गृध्रसी च महा वातान्सर्वाङ्गग्रहणं तथा॥

रसायनसार।

कटफलादि तैल—गृध्रसी नामक वात व्याधि के लिये सर्वोत्तम। वात व्याधि के कारण जहां दर्द हो वहां इसकी मालिश करने

से अवश्य लाभ होता है इसके साथही साथ महायोगराज गूगल भी सेवन करना चाहिये।

भूनिम्बादि घृत

सर्वोपदंशापहर प्रदिष्टं

भाव, भैषज्य, चक्र।

भूनिम्बादि घृत—यह घृत उपदंश के घावों के लिये सर्वोत्तम है। इसक लगाने मात्र से उपदंश जन्य घाव सूख जाते हैं। यह घृत खाने और लगाने दोनों के काम आता है।

व्यहावरबिधि—घाव को नोम के पानी या धन्वन्तरि सोप से साफ कर कपड़ा से पोंछ इसे लगाना चाहिये और एक एक तोले प्रातः सायं मिश्री मिलाकर चाटना चाहिये।

श्री मदनानन्द मोदक

मोदकं मदनानन्दं सर्व रोगे महौषधम्।
कथितं देवदेवेन रावणस्य हितार्थिना॥

भैषज्यरत्नावली।

मदनानन्द मोदक—इसके सेवन से निर्वल निस्तेजहीनवीर्य्य पुरुष भी बलवान, कान्तवान, वीर्य्यवान, हृष्ट पुष्ट होजाता है। कामदेव कासा रूप और बल देने वाली यही शास्त्रीय औषधि है

हम नहीं शास्त्र ही इसके अपार गुणोंका वर्णन करते हैं। जो स्त्री गर्भस्राव, गर्भपात करती रहती हैं या जो नष्ट पुष्पा हैं उन्हें यह पुत्रवती बना देता है। स्त्री द्रावण और स्त्री प्रिय बनाने वाली एकही महौषधि है। सेवनविधि—मात्रा ३ माशे से १ तोला पर्यन्त

अनुपान—दूध गरम किया हुआ मिश्री मिलाकर ठन्डा कर। समय—प्रातः और रात्रि को।

नार केल लवण

अम्लपित्त निहन्त्येतदरोचक निसूदनम्।
शूलं हृद्रोग शमनं कंठदाह नियच्छति ॥

भैषज्यरत्नावली।

नारकेल लवण—यह शास्त्रीय औषधि पेट का दर्द, गले की जलन, हृदय की दाह, मुख में पानी भर आना, अजीर्ण आदि रोगों के लिये प्रसिद्ध है। व्यवहारविधि—भोजनोपरान्त अथवा प्रातः सायं तीन तीन माशे जलके साथ फाँकना चाहिये।

हिंग्वाष्टक चूर्ण

प्रथम कवल भुक्तं सर्पिषा चूर्ण मेतज्ज—
नयति जठराग्निं वात श्रलमं निहंति ॥

योगचिन्तामणि।

हिंग्वाष्टक चूर्ण—अग्नि को बढ़ाने वाला, शूल और गुल्म को नष्ट करने वाला भारत प्रसिद्ध स्वादिष्ट चूर्ण है।

सेवनविधि—भोजन जीमने के पूर्व थोड़ी दाल में १ मात्रा चूर्ण और घृत मिला १ से ५ ग्रासों में जीमलें उसके पश्चात् भोजन करें। मात्रा—१॥ माशे से ६ माशे परियन्त। साधारण अजीर्ण में गुन गुने पानी के साथ फाँके।

पंच शकार चूर्ण—यह गृहस्थ मात्र के यहाँ रहने योग्य चूर्ण है इसके गुण प्रायः वही जानते हैं। पाचन करता है अजीर्ण को नष्ट करता है और दस्त लाता है रात को ३ माशे गरम जलके साथ फाँकने से प्रातः दस्त साफ होजाता है और प्रातः फाँकने से सायंकाल तक दस्त होजाता है।

औदम्बरसार—यह रक्त को रोकने वाला है गूलर अर्थात औदम्बर के फल का घन सत्व है रक्तपित्त, रक्तप्रदर, रक्तार्श में लाभदायक है मात्रा १ माशे प्रातः सायं जलके साथ देना चाहिये।

मल्ल तैल—यह तैल रसायनसार ग्रन्थ के पाठानुसार बनाया गया है। वात व्याधि का दर्द इसके लगाने से नष्ट होजाता है। नपुंसकता में भी विशेष लाभ करता है। इसका प्रयोग बड़ी सावधानी से करना चाहिये।

प्रतिसारिणीयक्षार—रसायनसार—प्लेग की गाँठ अथवा और किसी प्रकार की गाँठ को गलाकर बढ़ा देने वाला है। सर्पदंश में लगा देने से विष जल जाता है। इसका प्रयोग बड़ी सावधानी से करना चाहिये।

वात चिन्तामणि रस

यथाव्याध्यनुयानेन नाशयेद्रोग संकुलम्।
वातरोगं पित्तरोगं निहन्ति नात्र चिन्तनम्॥

भैषज्यरत्नावली।

वात चिन्ता मणि रस—वात व्याधि की प्रसिद्ध और मूल्यवान औषधि है। इसके सेवन से वातजन्य पीड़ा शीघ्र ही शान्त होजाती है। व्यवहारविधि—प्रातः और सायंकाल एक एक गोली वातचिन्तामणि की निगल ऊपर से रास्नादि क्वाथ पीना चाहिये अथवा बलारिष्ट सेवन करना चाहिये।

कृष्ण चतुर्मुखरस

सर्व वात विकारेषु अपस्मारे विशेषतः:
पक्षाघाते तथोन्मादं आध्माने कोष्ट निग्रहे॥

आयुर्वेद संग्रह

कृष्ण चतुर्मुखरस—वात व्याधि, अपस्मार, पक्षाघात, उन्माद अफरा आदि वायु सम्बन्धी सबही रोगों में लाभदायक है। व्यवहारविधि—प्रातः और सायं एक एक रत्ती शहद और पान का रस छः छः माशे मिला कर चटावे।

परिशिष्ट-पेटेण्ट औषधियां
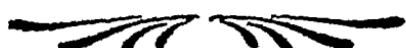
धन्वन्तरि शूलहरि टेबलेट

शिरोरोगेषु दुष्टेषु अर्द्धशीर्षे सुदारुणे।
भ्रु शंख कर्ण पीड़ाश्च नाश्यन्तिनात्र संशयः॥

धन्वन्तरि शूलहरि टेबलेट—कैसाही शिरदर्द हो इसकी एक दो टिकिया खाने से बन्द होजाता है चाहे जिस जगह के स्नायुमंडल का दर्द हो इसकी दो तीन टिकिया से शान्ति हो जाता है। साथ ही एस्प्रीन की तरह दिल दिमाग शरीर को किसी प्रकार की हानि नहीं करती। व्यवहारविधि—एक एक टिकिया दो या तीन घण्टे के बाद जलके साथ निगलना चाहिये।

स्वप्न प्रमेहहरि वटी—यह स्वप्नदोष के लिये प्रसिद्ध औषधि है यदि इसके साथ चन्दनासव और कुशावलेह भी सेवन किया जाय तब कितना ही कठिन और पुराना स्वप्नदोष हो नष्ट होजाता है। व्यवहारविधि—एक एक गोली दूध के साथ निगलनी चाहिये। यदि चन्दनासव लेना हो तब दूध के स्थान में चन्दनासव २ तोला, पानी २ तोला मिलाकर वटो के ऊपर पीवें।

कुशावलेह भर लेना हो तब कुशावलेह २ तोला रात्रि को सोते समय चाटें।

ब्राह्मी वटी—मूल्यवान पदार्थों के योग से यह प्रसिद्ध वटी तैयार कीगई है। ब्राह्मी इसमें प्रधान औषधि है। इसके सेवन से शीताङ्ग, सन्निपात, प्रसूत, बातव्याधि, अपस्मार, हिस्टेरिया रोग नष्ट होता है और स्मरणशक्ति बढ़ती है।
सेवनविधि— प्रातः सायं एक एक वटी पान के रस के साथ सेवन करावें। अपस्मार में एक एक वटी को ६ माशे शहद और ६ माशे घृत में चटावें। घृत पुराना हो।

हिस्टेरिया रोग में—एक एक वटी प्रातः सायं निगल ऊपर से बालछड़ का क्वाथ और एक रत्ती कपूर डालकर पिलावें।

❀ श्रीः ❀

धन्वन्तरि कार्यालय

[संक्षिप्त-परिचय]

वैद्य सम्मेलनों से स्वर्णपदक और प्रमाणपत्र प्राप्त
वैद्य सेवा-समिति और छात्र समिति से सम्मानित
राज्याधिकारी और बड़े बड़े वैद्यराजों से
प्रशंसित——तथा—प्रमाणपत्र प्राप्त
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

स्थापित सन् १८९८

श्री धन्वन्तरि कार्यालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)

का

कुछ परिचय

र्गीय वैद्यराज ला० नारायणदासजी और उनके प्रख्यात पुत्र श्री ला० राधावल्लभ जी ने जब चिकित्सा करते हुए औषधि-द्रव्यों के शुद्ध मिलने में कठिनाई अनुभव की तो यह विचार उठा कि इनके प्रयत्न पूर्वक संग्रह और सुलभ रूप से मिलने का प्रबन्ध हो तो बहुत लाभ-दायक हो। उस समय उन्होंने श्री धन्वन्तरि कार्यालय की नींव डाली और धीरे २ वनौषधें तथा सभी औषधि द्रव्य यहाँ अधिक संग्रह होने तथा और जगह भेजे जाने लगे।

श्री धन्वंतरि औषधालय (सिद्धौषध-विभाग)

क्रमशः इस सदुद्देश्य में भगवान की भी पूर्ण कृपा हुई और कार्य अधिकाधिक विस्तीर्ण होता गया। किसे उस समय यह अनुमान था कि यह बिरवा एक दिन, इतना विशाल वृक्ष होगा जिसकी सफलता से देश भर के विद्वान वैद्यराज प्रसन्न होंगे और बड़े २ औषधालय-विश्वस्त औषध मंगा लाभ उठायेंगे पर भगवान धन्वन्तरि ने इसे ऐसा ही बढ़ाया और अब इसके सिद्धौषध विभाग में—शास्त्रोक्त-प्रामाणिक विधि से कूपी-पक्व रसायनें, सिद्ध मकरध्वज आदि रस, भस्म, अवलेह, घृत, चूर्ण, वटी, गुग्गुल, पर्पटी आदि निर्माण होती हैं। अरिष्ट, आसव बहुत भारी मात्रा में बनाकर रखे जाते हैं और शास्त्रानुसार पुराने-गुणप्रद होने पर व्यवहारार्थ निकाले जाते हैं और देश के सहस्रों वैद्य बंधुओं एवं दातव्य औषधालयों को भी भेजी जाती हैं।

धन्वन्तरि चिकित्सालय (रोगी-विभाग)

दूर दूर तक ख्याति होने का प्रधान कारण जहाँ इस संस्था का विश्वस्त व्यवहार रहा है वहाँ चिकित्सा की उत्तमता भी रही है। सैकड़ों ही रोगी यहाँ दूर दूर से आते हैं और हकीम डाक्टरों और अस्पतालों से निराश रोगी भी यहाँ से स्वास्थ्य लाभ कर गये हैं। जिन रोगियों की दशा जटिल होवे

यहाँ आकर लाभ उठावें। जो वैद्य बंधु किसी विचित्र रोग में निदान व्यवस्था के लिये यहाँ के अनुभवी चिकित्सकों की सम्मति लेना चाहें तो रोगी का पूरा इतिहास और अवस्था लिखकर निःसंकोच पूछें। जैसे भी बन सके रोगार्त्त बंधुओं के दुख दूर करना ही अपना धर्म है।

धन्वन्तरि वनौषधालय (वनस्पति-विभाग)

विधिवत् औषध बनाते हुए-असली वनौषधें, यथेष्ट तादाद में बड़ी कठिनता से मिलती थी अतः उनके उत्पत्ति स्थान खोज कर वहाँ अपने आदमी भेजकर या स्थायी रखकर औषध संग्रह करने को अब यह स्वतंत्र विभाग स्थापित है और हर ऋतु में इतनी भारी तादाद में वनस्पतियाँ संग्रह कर लेता है (जिससे सस्ती पड़ें) कि हमारी प्रयोगशाला में वर्ष भर काम आती हैं और भारत के सभी प्रान्तों की बड़ी २ निर्माण शालाओं और स्वयं औषध बनाने वाले वैद्यराजों को उचित मूल्य में भेजी जाती हैं।

धन्वन्तरि पुस्तकालय (प्रकाशन-विभाग)

वैद्य समाज में आजकल के साधारण अध्ययन से ही समझ में आने और चिकित्सा में पूरा मार्ग दिखाने वाली पुस्तकों की कमी देख उत्तम उत्तम पुस्तकें भी प्रकाशित की जाने लगीं। वैद्य बंधुओं ने भी उन्हें बहुत पसंद किया और अनेकों के कई २

संस्करण छप चुके हैं जिनसे हमें भी लाभ हुआ है औरों को तो उनसे पूरी सहायता मिलही रही है। क्षय, प्लेग, निर्बलता, उपदंश, ज्वर, तिल्ली आदि सभी विकार, नारी रोग, बालरोग, औषध निर्माण, दशमूल और शारीरिक चित्रावली, भारतीय भोजन, पंच-कर्म, आसन चिकित्सा, परीक्षित प्रयोग आदि उत्तम विषयों पर लग भग ४० पुस्तकें तो कार्यालय ने ही प्रकाशित की हैं साथ ही अन्य प्रकाशकों की भी उत्तम वैद्यक पुस्तकें यहाँ मिलती हैं।

धन्वन्तरि (मासिक-पत्र) विभाग

पत्र ही इस युग में उन्नति का साधन, जाग्रति की ज्योति और संगठन का सहारा होता है। जब कार्यालय की प्रसिद्धि देश में होगई तो प्राय. वैद्य बंधु जटिल रोगों में परामर्श और अन्य विषयों में भी सम्मति मंगाने लगे। तब सभी की सुविधा के लिये "आरोग्य सिंधु" पत्र निकाला जो वर्ष बाद १ कार्यालय के दूसरे पत्र धन्वन्तरि में मिलकर और भी उन्नति करता गया सब से पहिला वैद्यक पत्र धन्वन्तरि ही था. जिसने एक एक रोग पर विशाल विशेषाङ्क भेंट किये और अब तो जब से वार्षिक मूल्य ४) की जगह लागत मात्र ३) कर दिया है तब से इसकी संख्या इतनी बढ़ गई है जो अन्य २—३ वैद्यक पत्र की सम्मिलित ग्राहक संख्या से भी अधिक है क्योंकि ३) रु० मात्र में ही २) और २॥) के दो विशाल सुन्दर विशेषाङ्क भी मिलते हैं और १० सचित्र अङ्क भी नमूनार्थ। १ प्रति बिना मूल्य भी भेजी जाती है। अवश्य मंगा देखें।

धन्वन्तरि यंत्रालय (प्रेस-विभाग)

इतना बढ़ते हुए प्रकाशन कार्य के लिये वैसा ही प्रेस भी आवश्यक था अतः धन्वन्तरि प्रेस भी खोलना पड़ा और अब अनेक ग्राहक अनुग्राहकों के आग्रह से बाहर के काम छापने का भी समुचित प्रबन्ध कर दिया है। बिल, बीजक, लैटरफार्म, कार्ड, लिफ़ाफे, फार्म, व्यवस्थापत्र, विज्ञापन, सूचीपत्र, पुस्तकें जो कुछ छपाना हो अब निःस्संकोच भेजें। शुद्ध, सुन्दर और समय पर छापकर भेजा जाता है और चार्ज उचित लिया जाता है।

धन्वन्तरि संग्रहालय (सामग्री-विभाग)

इन सब बातों के ज्यों ज्यों हमारे विभाग बनते गये त्यों त्यों वैद्य समाज की सुविधा होती गई है और हमें भी लाभ बढ़ता गया है। पर वैद्य समाज को यंत्र और उपकरणों के लिये मन-माना मुनाफा लेने वाली अंग्रेजी कम्पनियों से ठगाना पड़ता था यह देख गत १९२९ से वैद्योपयोगी कांटे, पिचकारी, नापने के गिलास, इन्जैक्शनसीरीज़, खरल, भबका, स्वरसयन्त्र, स्टेथस्कोप, ब्रैस्टपंप, थर्मामीटर, डूस ऐनीमा, शीशी, बोतल कैलेंडर, रोगी रजिस्टर, शारीरिक चित्र, प्रवास मंजूषा, व्यवस्था पत्र, लेबिल, रबड़ की नली वगैरः सामग्री अधिक तादाद में

मंगा रखने और साधारण लाभ पर ही सुरक्षित पैकिंग करके भेजने का प्रबन्ध है। अर्थात् चिकित्सकों की सभी आवश्यकताएँ

धन्वंतरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

पूर्ण करता है

साथही—

अभी यह और विचार है कि एक विशाल आयुर्वेदिक अस्पताल स्थापित कर डाक्टरी चिकित्सा से मुकाबिला करके दिखा दिया जाय कि हमारी आयुर्वेदिक प्रणाली शास्त्रीय औषधें और लोकहित-भावना कितनी महान है। श्री भगवान धन्वन्तरि मनोकामनाऐं पूर्ण करें।

समय २ पर अ० भा० वैद्य सम्मेलनों, सभाओं, समितियों और अधिकारियों ने प्रमाणपत्र-पदक और प्रशंसापत्रों द्वारा इसे सम्मानित किया तथा बड़े २ सज्जनों ने यहाँ पधार अपनी शुभ सम्मतियों से विविध विभागों का निरीक्षण कर हमारा उत्साह बढ़ाया है और यहाँ की चिकित्सा एवं औषधों से संतुष्ट होकर श्रीमन्तजनों और वैद्यराजों ने जो कृतज्ञता प्रकट की है इसके हम आभारी हैं। उनमें से कुछ आगे लिखी भी हैं। विशेष यहाँ पधार, देखने का अनुग्रह करें।

यहां आने के चार प्रधान मार्ग हैं।

१—ई आई. आर. के हाथरस जंकशन से इक्के द्वारा विजयगढ़ अ. वें ८ मील है।

२—हाथरस जंकशन से रेल या मोटर द्वारा ७ मील रतीकानगला स्टेशन (B. B. & C. I.) पर आजावें वहाँ से गाड़ियां अवश्य मिल जाती हैं और विजयगढ़ ४ मील है।

३—हाथरस जंकशन से दिल्ली की ओर अगला स्टेशन सासनी (E. I. Ry.) है। उस पर उतरें। २ फर्लांग पर एक गाँव बाँधनू है वहाँ सवारी मिल जाती है। वहाँ से ६ मील है।

४—ग्रांड ट्रंक रोड पर अलीगढ़ ऐटा के बीच में "अकराबाद" स्थान है वहाँ से ६ मील है इक्का या गाड़ी मिल जाते हैं।

जिस दिन जिस ट्रेन से पधारें उसकी निश्चित सूचना कुछ समय पहिले देने की कृपा करें तो हम यहाँ से ही आदमी और सवारी भेज देंगे जो आपको बड़े आराम से ले आवेंगे।

— विजयगढ़ की जलवायु अत्यंत उत्तम है स्थान की कमी नहीं आर अनेकों वनस्पतियाँ यहाँ सुलभ हैं, इसीलिये कर्यालय की निर्माणशाला तथा हैड ऑफिस विजयगढ़ (अलीगढ़) ही है।

शाखा नं० १—नदरई दरवाज़ा, कासगंज।

शाखा नं० २—पसरट्टा बाजार, हाथरस।

शाखा नं० ३—माली वाड़ा, दहली।

शाखा नं० ४—२६ २७ चित्तरजन एवेन्यू नोर्थ कलकत्ता है।

इस शाखा में सामिग्री विभाग भी है और साथ ही यह भी बड़ी सुविधा है कि कलकत्ते का सभी सामान बड़ी किफ़ायत के साथ खरीदकर भेजा जाता है। आपको भी जो आवश्य-

कता हो मंगालें। औषध-विभाग, पुस्तक-विभाग, चिकित्सा-विभाग का प्रबन्ध सब शाखाओं में है।

हैड औफ़िस में वनौषध विभाग, मासिकपत्र और प्रेस विभाग भी अत्यन्त उन्नत दशा में हैं प्रत्येक विभाग की नियमावली एवं सूची प्रथक हैं जो चाहें मंगालें।

अथवा—

केवल १) रु० मनिआर्डर भेजकर सब विभागों की सूचियाँ तथा और भी ये मूल्यवान सामान मंगा लीजिये।

१—औषध उपचार पद्धति प्रथम भाग (औषधों के अनुपान भेद से गुण और प्रयोग)

२—औषधोपचार पद्धति द्वितीय भाग, (रोगों के अनुसार औषध व्यवस्था और अनुभवसिद्ध चिकित्सा पद्धति जो अनेकों वैद्यों को बड़ी सहायता पहुँचा रही है)

३—धन्वन्तरि सचित्र सर्वोच्च मासिकपत्र का एक अङ्क।

४—पत्र लिखने की ब्लाटिंग लगी हुई और सुन्दर पैड।

५—शोभायमान दीवालगिरी स्थाई कैलेण्डर जिसकी तारीखें बदलती रहती हैं और सदा काम देता है।

यह सब चीज़ें केवल १) मात्र में पैकिंग पोस्टेज भी न लेकर भेट की जाती हैं जिससे वे आपके यहाँ सुरक्षित रहें और हमारा प्रेम स्मरण दिलाती रहें।

योग्य सेवा के लिये सदा प्रस्तुत—

व्यवस्थापक—श्रीधन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

नासिक वैद्य सम्मेलन द्वारा

(धन्वन्तरि कार्यालय को प्राप्त प्रमाण-पत्र)

❀ श्री धन्वन्तरिर्विजयते ❀

❀ निखिल भारतवर्षीय एकोनविंशतितमम् वैद्य सम्मेलनम् ❀

जन स्थानम्
स्वागत समितितः

नासिक
शकाब्दा
१८५१

श्रीमद्भ्यां वैद्य बांकेलाल गुप्तेति-नामभ्यो विजयगढ़ (अलीगढ़) वास्तव्येभ्यो प्रदर्शन मन्दिरं वनस्पति प्रेषण नितराम् सौष्ठवमापादितम्-एतदर्थं दीयते सहर्षमिदं प्रशस्ति पत्रकम् ।

स्वागत सभापतिः — मंत्री सभापतिः

कृष्णशास्त्री देवधर, वामन शास्त्री दातारजी, श्रीनिवास मूर्ति

❀ श्री धन्वन्तरयेनमः ❀

✳ इन्द्रप्रस्थ ✳

☞ निखिल भारतवर्षीय दशम वैद्य सम्मेलन ☜

चित्र

✳ धन्वन्तरि ✳

प्रदर्शन प्रमाणपत्रम्

वैद्यान्पायाद पायाच्च गुरुर्धन्वतरिस्सदा ।
धात्रादपशिशत्तयन्तु मुनयो वेद पारगाः ॥

सम्वत् १९७५ माघ मास कृष्णपक्ष दशम्यां इन्द्रप्रस्थे (देहल्यां) प्रवर्तित निखिल भारतवर्षीय दशम वैद्य सम्मेलन स्वागत कारिणी समिति सभ्यैरिदंप्रमाणपत्र वैद्य बांकेलाल गुप्ताय प्रथमवर्गीयं वर्ण पदकञ्च सप्रमोद-मस्माभि चन्द्रोदयाद्यौषध कार्य पर्यालोच्य समर्पयते यतो भवद्भिरायुर्वेद प्रचुरप्रचारे प्रयति तव्यम् ।

हस्ताक्षराणि सभापते	हस्ताक्षराणि मंत्रिणेः
अजमलखां	पं० शिवनारायण श०
पं० मथुराप्रसाद	पं० भागीरथ स्वामी

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यंमूलमुत्तमम् ।
तत्प्रदः शाश्वतोऽस्माकमायुर्वेदः सदैधताम् ॥

नि० भा० व० १७ श वै० सम्मेलन स्वा० का० समितितः

प्रशंसापत्रम्

अलीगढ़ मण्डलान्तर्गत विजयगढ़ ग्राम पोष्ट वास्तव्यस्य श्रीयुत बाबू बांकेलाल गुप्त सम्पादक धन्वन्तरि महोदयस्य रसौषध रस मंजूषा प्रभृति वस्तूनि-प्रदर्शन्यां समुपागतानि । तानि च प्रथम श्रेण्यां निर्णीतानि निर्णायक समित्या । अतास्मै आयुर्वेद समुन्नतिमभिलाषुकाय धन्यवाद पुरस्सरं प्रथम वर्गीय-मिदं प्रशंसापत्रं वितीर्य्यते इति प्रमाणीकरोति ।

श्री. व्रजविहारीचातुर्वेदः श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल ।

(आयु०रत्नाकरो भिषगाचार्य.) (आयुर्वेदपञ्चाननो भिषंमणिः)

स्वागताध्यक्षः । सम्मेलनाधिपतिः ।

पटना २३—३—२०

अखिल भारतवर्षीय वैद्य सेवा समिति:—

विजयगढ़ (अलीगढ़) के प्रसिद्ध वैद्य लाला बाँकेलाल जी मैनेजर श्री धन्वन्तरि औषधालय को तो, आशा है सभी वैद्य समुदाय जानता होगा··· । यहाँ की औषधियाँ तो वैद्य समुदाय तथा सर्व साधारण में लोक प्रसिद्ध ही हैं । आपके यहाँ की चिकित्सा की ख्याति दूर दूर में है । इस वर्ष रोगियों की संख्या ८५३४ रही···इनकी निस्स्वार्थ सेवा के लिये प्रसन्न होकर H. H. गोस्वामी द्वारिकाप्रसाद जी देव वैष्णवाचार्य जी ने स्वर्ण-पदक दिया है तथा औषधियों की उत्तमता के लिये वैद्य सम्मेलन ने भी स्वर्ण-पदक दिया है ।

(वार्षिक रिपोर्ट १९१९)

Dr R S. Gupta M B B S. D T M O. H M. C. R. P. (S)

मैडीकल ऑफ़ीसर इंचार्ज, बलरामपुर हौस्पिटल लखनऊ

L. Bankey Lal Gupta is a well known Vaid in the Western Districts of U. P. He is personally known to me.

(Sd)—R. S. Cupta.

P.W. Marsh Esq. C. I. E.,I. C. S., Commissioner Meerut:-

'Vaid Banke Lal has a flourishing Druggist Factory, & devotes some of the profits for providing poor people with free medicine. He deserves great credit.

21-1-31. (sd.) P. W. Marsh.

श्रीमन्त राजा सूर्यपालसिंह जी अवागढ़ नरेश की ओर से

Controller of Charities के office से :—

आपके धन्वन्तरि कार्यालय की सिद्ध औषधियों का राज्य के औषधालय में परीक्षार्थ व्यवहार किया गया, सभी अचूक प्रभावशाली और उत्तमोत्तम थीं। कई जटिल, प्राचीन रोग पीड़ित सज्जनों को आपकी औषधि द्वारा निरोग होने से फल बहुत अच्छा रहा, अतः स्टेट में आयुर्वेदीय औषधालय खोलने की आज्ञा श्री राजा सा० ने की है।

आपका कार्यालय शास्त्रोक्त उत्तम औषधियों का भण्डार होने से भारत के प्रसिद्ध कार्यालयों में प्रथम गणनीय है।

हम विशेष प्रशंसा न करते हुए सिर्फ धन्यवाद के साथ "स्वर्णपदक" और यह प्रशंसापत्र भेजते हैं और भगवान धन्वन्तरि से उन्नत्यर्थ हार्दिक प्रार्थना करते हैं........।

राजवैद्य पं० रामप्रसाद मिश्र आयुर्वेदाचार्य
प्रिंसिपल—संस्कृत महाराजा कौलेज
अवागढ़ स्टेट।

श्रीमान् माननीय पं० हृदयनाथजी कुन्जरू एम० एल० ए०
सदस्य बड़ी व्यवस्थापिका परिषद:—

आज मैंने श्री धन्वन्तरि औषधालय विजयगढ़ का निरीक्षण किया। इसके औषधि विभाग, पुस्तक विभाग, पत्र विभाग आदि देखे। मुझे यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि ला० बाँकेलाल जो वैद्यवर के प्रवन्ध में उक्त सम्पूर्ण विभाग सन्तोषजनक कार्य कर रहे हैं औषधियां शास्त्रोक्त रीति से उत्तमता पूर्वक तयार की जाती हैं और उपयोगी सिद्ध होती हैं ऐसे चिकित्सालयों और औषधालयों से देश को अत्यन्त लाभ पहुंचने की संभावना है और इनसे स्वदेशी औषधों का प्रचार होता है। ऐसे उद्योग सदैव सराहनीय हैं और सर्वसाधारण को ऐसे उद्योगी सज्जनों के उत्साह बढ़ाने का सदव प्रयत्न करना चाहिये।

७. १०. २६. (Sd.) हृदयनाथ कुंजरू

Dr. Kalashnath Katju Bar-at-law Advocate.
Allahabad :-

'I agree with everything that has been so well said by Pt. Hirdeynath Kunzru. It has given me great pleasure to visit this institution

(Sd.) K. N. Katju 4-11-26

Rai Sohan Lal Saheb Chairman.
Municipal Board Aligarh :-

I endorse the remarks given by Pt. Hirdey Nath Kunzru. I was very much pleased to see the Medical hall and the place where the medicines are prepared by L. Banke Lal Gupta Vaid.

(Sd.) Sohan Lal. 7-10-26.

Saiyed Masum Ali Shah. Esq. Officer of
Income-tax. Meerut Division :-

The learned Vaidia took me round to see his pharmacy and I was much pleased to see that it is worked systemetically and has got good reputation.

31-1-27. (Sd.) S. Masum Ali Shah.

वैद्यराज पं० नारायणदत्त जी शर्मा

मन्त्री अ० भा० वैद्य सेवा समिति :—

आज मैंने श्री धन्वन्तरि औषधालय विजयगढ़ के सब विभागों को देखा। चिकित्सा कार्य स्वर्गीय ला० नारायणदास जी राधावल्लभ जी के ही सामने से इतना बढ़ा हुआ था कि कलकत्ता, बम्बई तक के बड़े २ धनपति यहाँ आकर रोगमुक्त होते रहे हैं। औषधि जिस प्रकार बननी चाहिये वह उसी प्रकार बनाई जाती हैं यही कारण है कि यहाँ की औषधें सर्वोत्कृष्ट होती हैं।

१८। ७। २६ —नारायणदत्त शर्मा

Rai. Bahadur Sardar Singh Saheb O. B. E., S D. O., Late. Inspector Generel of police. Minister Alwar state :-

I visited the Aushdhalay, on the 11th. of April 1925. The proprietor L. Bankey Lal Vaid is doing a lot of charitable work and deserves to be congratulated. The medicines are prepared in a neat and clean manner. I was really pleased with all that I saw there.

(Sd.) Sardar Singh. S. D. O.

नि० भा० विद्वत्सम्मेलन संस्कृत विद्यापीठ काशी :—

श्रीयुत बाँकेलालजी गुप्त वैद्य विजयगढ़ (अलीगढ़)।

महोदय, ज्ञात हो कि सम्मेलन ने नियमानुसार अपने चम्पारण अधिवेशन में आपको 'आयुर्वेद भूषण' उपाधि से भूषित किया है।

अमरोहा यू० पी०
माघ शु० ६ सं० १९७९

—पूर्णात्मानन्द शर्मा
हैडक्लर्क

श्रीमान् मंत्री जी नि० भा० आयुर्वेद छात्र सम्मेलन
ऋषकुल हरद्वार।

"मैं सहर्ष आपको सूचित करता हूँ कि आपकी औषध वैशाख के मेले पर विशेष रूप में वितरण करने पर वे बहुगुण सम्पन्न सिद्ध हुई हैं संसार के वैद्यों और जनता को मैं परामर्श देता हूं कि वे इस कार्यालय से औषध मंगाकर ज़रूर लाभ उठावें और मैं इस कार्यालय की मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूं।

२०।५।२२

भवदीय—
बृजभूषण वैद्यशास्त्री
मंत्री

श्रीमान् पं० अम्बाशंकर जी वैद्यशास्त्री चिकित्सक
बड़नगर आयुर्वेदिक फ्री औषधालय ।

हमें यहाँ झंडु फार्मेसी, कृष्णा-फार्मेसी और घनश्याम फार्मेसी से इतनी सस्ती औषधियाँ मिलती हैं जिससे औषधालय के मैनेजर का ध्यान इन्हीं फार्मेसियों पर रहता है । यद्यपि हमें अनुभव है कि आपकी औषधियों और एवं इन फार्मेसी की औषधियों में रात दिन का अन्तर है । किन्तु यह लोग क्या जानें कि किसकी औषधियाँ उत्तम हैं और किसकी न्यून ।

बाबू नीलकण्ठ राउ जी मैप करैक्शन औफिस दुर्ग—

आपके यहाँ से ६ माशे बसंतकुसुमाकर पंडित रामसेवक मिश्र वैद्यराज के मारफत बुलवाई गई थी उससे मुझे बहुत फायदा हुआ है इससे कृपा करके यही दवाई दो तोला वी०पी० पोष्ट से भेज दीजिये ।

पं० केशव नारायणजी जोषी वैद्यराज सावर गांव:—

हमारे दोस्त शामजी जयराम पटेल माकोड़ी इनको आपने दशमूल भेजे हैं और दशमूल बहुत पराक्रम से शोध लगाकर पैदा किया है दशमूल का गुण देखने से मालूम हुआ । यह दशमूल की हम जितनी शिफारस करें उतनी थोड़ी है ।

राजवैद्य लाला मातामोक लालझी

सोमपा दुर्गापुर (ज़िला सुलतानपुर)

आपकी औषधियां वैद्यक समाज को सेवक की राय में चिकित्सार्थ मंगाकर पास रखना अति लाभकारी है। मुझे चौदह वर्ष काम करते होगया परन्तु ऐसी सस्ती व गुणकारी औषधि उभय गुण युक्त कहीं से नहीं आती ईश्वर आपको इन कार्यों की सिद्धि के लिये असीम सफलता प्रदान करें। दो वर्ष से मैंने बहुवार मंगाया व परीक्षा किया। मैं दृढ़ भाव से कहता हूँ कि चिकित्सालयों के स्वामियों को आप से अवश्य सम्बन्ध रखना चाहिये।

(चिकित्सा विभाग)

श्रीयुत चौधरी रामभजनसिंह जी रईस दारौला

"मेरठ ज़िले के एक प्रतिष्ठित रईस के घर १८ वर्ष की उम्र में कन्या पैदाहुई जो २ वर्ष की होकर मरगई तत्पश्चात् रोगिणी को श्वेतप्रदरादि रज विकार ने घेर लिया। रजोदर्शन भी महा कष्ट से होता रहा रईस साहब को सन्तान की इतनी चिन्ता न थी जितनी कि अपनी धर्मपत्नी के कष्ट निवारण की"... . ..

हमारी सम्मति पूंछने पर हमने उन्हें प्रदरान्तक रस और स्त्री सुधा के सेवन की सम्मति दी जिस से उन्हें ४ फरवरी ३१ को पुत्र लाभ हुआ।

ये सज्जन डाक्टरी और विज्ञापनों की औषधि खाकर तंग होचुके थे धन्वन्तरि चिकित्सालय की निस्पृह सेवा से सफल मनोरथ हो पत्र में लिखते हैं:—

"मैं इस बात को दावे के साथ कहूँगा कि जो महाशय दुनियाँ भर की ढोंग बाज़ी की दवाइयाँ खाकर निरास हो बैठे हैं और मेरी तरह ज़िन्दगी व्यतीत करना दूभर समझते हैं वे धन्वन्तरि औषधालय से लाभ उठावें"।

श्रीमान् पण्डित हरिनाथ उपाध्याय आयुर्वेद भूषण

पो० राजगीर (पटना)

एक रोगी जो कृच्छ्र साध्य था बहुत दीन था वह धन्वन्तरि कार्यालय के प्रधान चिकित्सक वैद्य बांकेलाल जी से निःशुल्क चिकित्सा कराकर आयो है। उसे वात प्रधान कुष्ट था। वैद्य जी ने अति दीन रोगी समझकर औषधालय की क्षति की ओर ध्यान देकर दत्त-चित्त हो चिकित्सा की।

पहले पंचकर्म विधि-पूर्वक कराकर पीछे रक्त-शोधक खदिरारिष्ट तालकेश्वर इत्यादि औषध भी दी हैं, रोगी को बहुत लाभ है कुछ दिन म पूर्ण आरोग्य प्राप्त करेगा। आपके कार्यालय में पूर्ण सत्यता पूर्वक व्यवहार होता है। वैद्यजी के अनुभव से कृच्छ्र-साध्य तथा असाध्य रोगियों को लाभ प्राप्त करना चाहिये।

श्री० बाबू रामनारायण जी मालगुजार खपरी (दुर्ग)

मैं ४ साल से आपका ग्राहक हूं मुझे अच्छी तरह खातिरी होचुकी है, मेरेको कोई वैद्य सामने में दवा देवे उसका विश्वास नहीं है और आप मुझे दूरसे दवा देवेंगे, उसका पूरा विश्वास है

श्रीयुत भगवानदास रघुनाथदास जी मनिहारी बाजार, मऊरानीपुर (झांसी)

आपके सहमत से स्वर्णपर्पटी के सेवन से बहुत फायदा हुआ, आपको धन्यवाद करता हूं, आपके नाम और औषधालय की ज़्यादा तरक्की हो यही ईश्वर से प्रार्थना है।

श्री पं० राजेश्वरी प्रसाद सिंह जी वैद्यराज मालिक विश्वकर्मा-भंडार बड़हिया

मेरा पूर्ण विश्वास आपके ऊपर है चूंकि मेरी माता जी जो कि वृद्ध, दुसाध्या ग्रहणी से कष्ट पारही थीं, कोई बचने की आशा न थी, पर आप के परामर्शानुसार चिकित्सा करने पर अब पूर्ण आरोग्य हो गई हैं। मुझे यह देखकर पूर्ण आशा है कि इस अबला को भी आरोग्य प्रदान अवश्य होगी मैं आप के हाथ इसका जीवन सौंप रहा हूं कृपा दृष्टि से सदा उत्तर देते रहेंगे। आपके परमार्श पर ही इसकी बराबर चिकित्सा होगी

दवा प्रथम व्यवस्थानुसार सेवन कर रही है। जब आप दूसरा परामर्श देंगे बदली जायगी। अन्यथा पहली ही दवा खाती रहेगी। मैं सदा धन्वन्तरि भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आप यश के भागी हों।

[इन सज्जन की माता की अवस्था वास्तव में बहुत ही निराशा-जनक थी। और हमें भी स्वयं चिन्ता थी किन्तु भगवान धन्वन्तरि की कृपा से पत्र द्वारा ही चिकित्सा कराते हुये पूर्ण आरोग्य होगई।]

———

श्रीयुत बाबू रामकृष्ण कुलु आगार बेथर [उन्नाव]

मैंने आपकी मकरध्वज वटी और घोड़ाचोली रस लखनऊ से मंगाये थे वे बहुत लाभप्रद सिद्ध हुये। अब सूची शीघ्र भेजिये ताकि और भी सब औषधें मंगा सकूं।

———

श्री० लक्ष्मण प्रसाद जी-रामचरन संस्कृत पाठशाला

गोल बाज़ार, रायपुर

आपके यहाँ का भेजा हुआ कासश्वासहर पाक से दमे वाले को बहुत अधिक फायदा हुआ और वह मज़े में है मेरी भी तबियत आपके बादाम पाक और मकरध्वज सेवन करने से अच्छी है। वज़न मेरा २ सेर बढ़गया है।

श्रीयुत गोपीलाल जी सत्याग्रह आश्रम साबरमती

मेरा आँखों में फूली है चश्मा लगा कर पढ़ना होता है। बहुत देर पढ़ने से आँखों में से पानी बहने लगता है, आप के यहाँ चन्द्रोदय वर्ती है जो आपने भाई कालकाप्रसाद को भेजी थी उस से उनको बहुत फायदा हुआ है। कृपया मुझे भी दो तोला तुरन्त भेज दीजिये।

श्रीयुत वैद्यराज गोविन्दराव जी मोघे लशकर

…उक्त रोगिणी को आपकी तजवीज़ की हुई दवाओं से बहुत फायदा हुआ व होरहा है इस निमित्त शुक्रिया अदा करता हूं।

बाबू केशव नारायन जी केशरी सकरापोल—

महोदय जी! आपके कार्यालय की औषधियाँ उत्कृष्ट हैं। आपकी तजवीज़ की हुई चन्द्रप्रभावटी से शरीर का क्लेश जाता रहा है।

पं० गुरुप्रसाद जी अवस्थी वैद्य नौरंगपुर [विजगापट्टम]—

मैं आपके औषधालय का पुराना ग्राहक हूं हमेशा भस्में वगैरह मंगाया करता हूँ। जो कि गुणों में बहुत सच्चा निकलती हैं। इसी वजह से आपके औषधालय पर मुझको बहुत विश्वास है, इसलिये ईश्वर से प्रार्थना है कि आपके औषधालय की उन्नति करे। नीचे लिखी औषधियाँ पत्र देखते ही भेज दीजिये।

बाबू परसनसिंह जी मौज़ा हस्तम पो० खुबहंड [बांदा]-

आप की च्यवनप्राश्य व भीमसेनी कपूर कईवार मंगा चुका हूँ। बहुत फायदा होता है। हम आप को यह पत्र बतौर प्रशंसा पत्र लिखते हैं, महरबानी करके नीचे लिखी दवायें भेज दीजिये।

श्री वैद्य शास्त्री भगवतप्रसाद जी मिश्र वैद्य—

आयुर्वेदिक औषधालय आरौन (ग्वालियर)

"हम आपके उत्तर प्रत्युत्तर व निष्कपट व्यवहार से पूर्णतया प्रसन्न हैं यथा-शक्ति योग्य कार्यों में भाग लेने को तैयार हैं। और आपके औषधालय को शास्त्रोक्त रीति से पूर्ण प्रस्तुत व तत्तद्रोगनाशक यथार्थ पाकर और भी हर्षित हैं। और इसी वजह से सरकारी डिस्पेन्सरी के लिये औषधियाँ मंगाते ही रहते हैं।"

बाबू तीर्थराज जी गुप्त सुजानगंज—

"आपकी औषधि से मुझे बहुत कुछ फायदा प्रतीत हुआ है। यहाँ तक कि मल और जठराग्नि की शिकायत बिलकुल दूर होगई है। कृपा करके आधी बोतल कनकासव शीघ्र भेज दीजिये मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूं आपने मुझे बचा लिया।"

महन्त गोपालदास जी महाराज–

बड़ मठ दुर्ग सी० पी०

'हमारा सरयूदास वैरागी आराम होकर आया उसके मुंह से आपकी धर्मपरायनता, उदार चित्त, सहन शीलता, ग़रीबों पर प्रेम वो कार्य की तारीफ़ सुन कर हम बड़े खुश हैं धन्य है आप की बुद्धि को ईश्वर आप को इसी तरह और दिन व दिन तरक्की करे।

बाबू रूपकिशोर जी जैन विजयगढ़–

वैद्य विद्या पारंगत वैद्यराज जी सप्रेम वन्दे,

औषधि सेवन की आशा से अधिक उसने लाभ पहुँचाया अनेकशः धन्यवाद ! हृदय से आभारी हूं। अब क्या आज्ञा है ? अधिक क्या, मेरे शरीर का रंग काला पड़ गया था मस्तिष्क थक गया था, पढ़ने लिखने में मेरी बिलकुल रुचि नहीं रही थी इन सब को यथेष्ट लाभ लिया है। अब ऐसा और कोई प्रयोग बताइए जो उक्त दशा में हीनता न आने पावे स्थिरता बनी रहे।"

आरोग्यदर्पण संपादक वैद्यराज श्रीमान् गोपीनाथ जी गुप्त भिषग्गुण इन्दौर

धन्वन्तरि को मैं आयुर्वेद का सर्वश्रेष्ठ पत्र मानता हूं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि धन्वन्तरि की यथा शक्ति सेवा करूं।

धन्वन्तरि

श्री पं० ज्वालादत्त जी मिश्र वैद्य हरिद्वार:—

"धन्वन्तरि जनवरी ३० का मिला। पत्र का कलेवर लेख और चित्त प्रसन्न हुआ वास्तव में धन्वन्तरि को हम उच्च कोटि का मासिक पत्र कह सकते हैं।

श्रीमान् कविराज प्रतापसिंह जी रसायनाचार्य
सुपरिटेंडेन्ट आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, हिन्दू विश्वविद्यालय काशी।

......"धन्वन्तरि के विषय उत्तम और परिश्रम से संग्रहीत किये गये हैं यही तो एक आयुर्वेद का सामयिक पत्र है जो वैद्यों को सबसे अधिक ज्ञान वृद्धि में सहायक होरहा है। मैं भी इसमें लिखने का यत्न करूंगा।"......

B. Raghunath Singhji Gaur zamindar Selumau (Sitapur)

"I have much pleasure in writing you that your leading magazine Dhanwantari has pleased me most."

नोट—स्थानाभाव से सब सम्मतियाँ और प्रशंसा पत्र नहीं दे सके पाठक क्षमा करें।

[सुविधा के लिये अकारादि क्रम से सब औषधों के नाम और उनकी बाईं ओर वे पृष्ठाङ्क दिये हैं जहाँ उनका इस भाग में वर्णन है। आजकल कई जगह औषधों के दाम बहुत अधिक लिये जाते हैं और कहीं बहुत सस्ते भावों का प्रलोभन दे अविधिवत् बनी औषधें भेज दी जाती हैं; अतः साथ २ ही वे भाव भी दिये हैं जिनपर "श्री धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़" (हैड ऑफिस) से सर्व साधारण को भेजी जाती हैं । आशा है इससे पाठकों को सुविधा होगी। बड़े २ औषधालय और वैद्यराज थोक सूची मंगालें]

ख

ग

व हे
प्रसाद
इति. मुखं

६२ मृत्युंजय १ तोला ॥)
२३३ मृदुरेचन चूर्ण ५ तोला ॥।)
१०६ मेह मुग्दर रस १ तो० ॥=)
१७६ मोम का तैल १ शी० ॥।=)

य

१२७ यकृत-हरलोह (बृहत्) १ तो. १॥।)
२०१ यवक्षार १ तो० ।)
२८ यशद भस्म १ तो० १)
६७ योगराज गूगल (बृहत) १ तो० ॥।)
६६ योगराज गूगल (लघु) १ तो० ।)
२२२ योषापस्मारहर वटी ३१ गोली २)
२२२ योषापस्मार हर आसव १ बोतल ३)
२२३ योषापस्मारहर क्षार आध औंस १)

र

२६४ रक्तपित्तान्तक रस १ तो.२)
२३१ रक्तवल्लभ रसायन १ शी०१)
२३६ रक्तशोधकक्षार १ शी० २)
२६७ रक्तशोधकारिष्ट १ बोतल१।)
२१५ रजप्रवर्त्तक वटी १ डि० १)
४४ रस कपूर १ माशे ॥।)
५६ रस पर्पटी नं० १, १ माशे ॥)
„ „ „ नं० २, २ माशे ।)
४३ रस माणिक्य १ तोला २)
२५६ रसराज रस १ माशे १॥)
८ रससिंदूर नं० १, १ माशे१।)
९ „ नं० २ (हरगौरी रस)- २ माशे १।)
१० रससिंदूर (हरगौरी रस)- नं० ३, ३ माशे ॥।)
१३० रसाभ्र गुग्गुल १ तोला १)
७१ रामबाण रस १ तोला ॥)
१८८ राल का तैल २ औंस ॥)
१५६ रास्नादि अर्क (महा) १ बोतल १=)
१५३ रास्नादि क्वाथ (महा) १ पाव भर
२६६ रोहितकाऽरिष्ट १ बोतल
१७ रौप्यभस्म नं० १, ४ र
१८ „ नं० २,

ोता
प्रसादयति
कण्ठ १५६हति, मुख स्रावय
र्यति ।

ल

१७१ लवङ्गादि चूर्ण १० तो. ॥।=)

१७० ,, ,, (बृहत) ५ तोला १)

१६५ लवणभास्करचूर्ण १०तो.॥।)

१०४ लक्ष्मीविलासरस १ तो०१।)

७८ लाई रस (चूर्ण) १ तोला ॥)

१७८ लाक्षादि तैल ४ औंस ॥।=)

११७ लीलावती गुटिका १ तो०॥)

१०५ लीलाविलासरस १ तो० १।)

१०० लोकनाथरस १ तोला १॥।)

११३ लोकनाथ रस (बृहत) ३ माशे २)

५८ लोह पर्पटी १ तोला ३)

२२ लोहभस्म नं० १, १ माशे ॥)

२३ ,, नं० २, १ तो. ॥=)

२४ ,, नं० ३, १ तोला ॥)

३५ लोहासव १ बोतल १।)

श

११८

२६९ शिङ्करलोहभस्म १ तोला ३)

१८५ शिखद्राव आधा औंस १)

शी. (बृहत) १ तो. ॥)

६६ शङ्खवटी (लघु) १ तोला ।)

३८ शङ्खभस्म १ तोला =)

२२८ शान्तिवर्धकचूर्ण १० तो० १)

२०१ शिरोवज्ररस १ तो० ॥।)

२५३ शिरोविरेचनानस्य १ शी. १)

३९ शुक्ति(सीप)भस्म १ तोला ॥)

१८२ शुष्क मूलादि तैल (बृहत) ४ औंस १॥)

१०३ शूलगजकेसरी १ तोला १॥।)

१०२ शूलवज्रिणी वटी १ तो० ॥।)

२५८ शृंगी गुडघृत ४ तोला १)

२६३ शोथोदरारि लोह १ तो० १)

२३१ शोधित हरड़ें १ डिब्बी ।)

९५ श्रृंगाराभ्रकरस १ तो० १॥।)

७४ श्वासकुठाररस १ तो० ।=)

२५७ श्वास चिंतामणि रस १ माशे १॥)

२४१ श्वासान्तक द्राक्षासव १ औंस १)

२४२ श्वासामृत १ शीशी २॥)

२२१ श्वेत कुष्ठारि अवलेह एक पाव का १।)